धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जून-2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

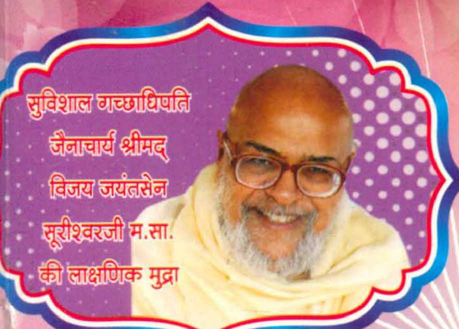

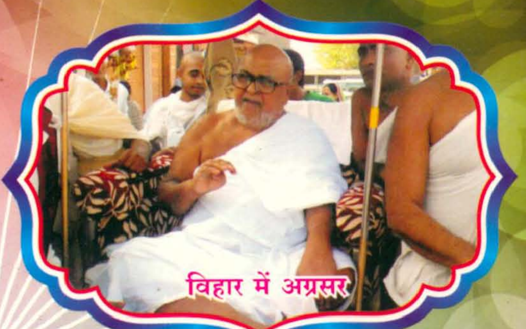

पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री कांतिलाल भूरिया को आशीर्वाद देते हुए
सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

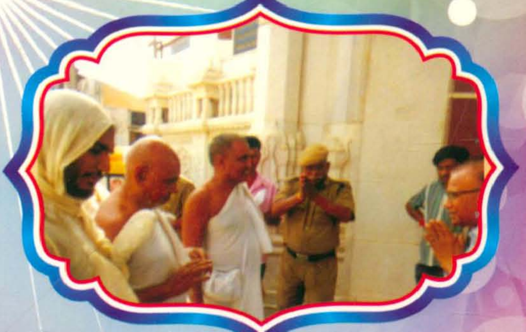

वरिष्ठ मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.
उदयपुर में विहाररत्

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- दि. 3 जून 2016 को समस्त साधु-साध्वीवृंद के साथ म.प्र. में खजूरी (थांदला) से प्रवेश।
- दि. 9 जून 2016 को श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर प्रवेश।
- दि. 10 जून से 16 जून तक श्री जयंतसेन म्युजियम राजगढ़ में 'मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग-5' में सान्निध्यता।
- दि. 10 जुलाई 2016 को रतलाम में चार्तुमासिक प्रवेश ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

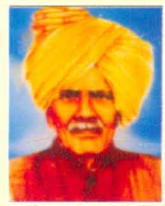
शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

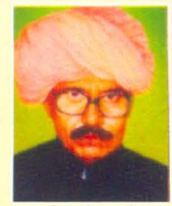
शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटूर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराउ

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

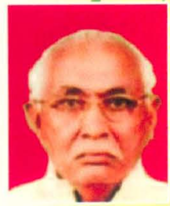

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

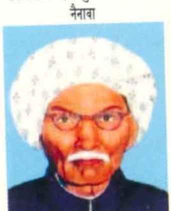
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

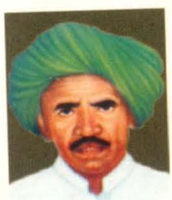
संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

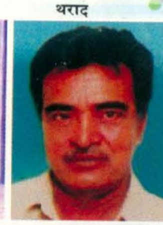
श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

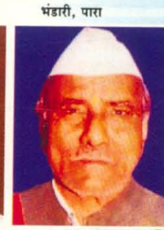
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

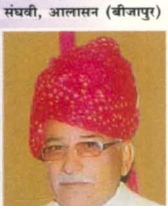

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

3007

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जून – 2016 संस्थापक - श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 6
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

सिद्धि किसी की सहायता से न कभी मिली न आज मिलेगी

ग्वाले का क्रोध उबल गया। उसने देखा कि उसके बैल उस सन्यासी के निकट ही बैठे हैं। वह स्वतः चिल्लाया–

'अरे ! मैंने ये बैल तुम्हारी सुपुर्दगी में छोड़े थे। तुमने इन्हें कहीं छिपा दिया। मैं रात भर पूरे जंगल में इन्हें ढूंढता रहा। तुम ढोंगी ... तुम यह भी नहीं बता पाये कि तुमने इन बैलों को कहाँ रख रखा है।'

ग्वाला बड़बड़ाता रहा। उसका क्रोध बढ़ गया। वह मौन साधना में रत् ध्यानस्थ महावीर स्वामी को मारने के लिए दौड़ा।

इन्द्र ने तभी अवधिज्ञान से प्रभु की साधना स्थिति को निहारा। ग्वाले की उद्दण्डता को देखकर वह तत्काल प्रकट हुआ और ग्वाले को फटकारा – 'अरे ! मूर्ख ! बुद्धिहीन ! तू क्या अकार्य करने को तुला है, तू जानता है ये कौन हैं? अरे ! ये राजा सिद्धार्थ के पुत्र वर्धमान हैं, सन्यासी बने हैं, साधना कर रहे हैं।' ग्वाला सुनकर चला गया।

इन्द्र ने सन्यासी महावीर स्वामी को वंदन किया तथा निवेदन किया –

'प्रभु ! अज्ञानी लोगों के कारण आपके साधना काल के बारह वर्षों में खूब उपसर्ग तथा परिषद् हैं। आप सेवक को अनुमति दीजिये कि मैं आपकी सुश्रुषा में रहूं तथा इन अबोध लोगों को दूर करूं।'

सुनते ही योगीराज महावीर स्वामी ने उत्तर दिया –

'इन्द्र ! तीर्थंकर सदैव इन्द्र – देवेन्द्र या सुरेन्द्र की सहायता के बिना ही केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं। सहायता लेना न भूतकाल में कभी हुआ, न भविष्यकाल में कभी होगा, न वर्तमान में ऐसा संभव है। अरिहंत स्वयं के पराक्रम, प्रयास तथा बल से सिद्धि प्राप्त करते हैं।'

भगवान का उत्तर सुनकर इन्द्र रवाना हो गया।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रम

32373

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	सर्वनाशकारकः लोभ (3) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-35) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-35) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	16
4.	प्रश्नोत्तरी	19
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	20
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	21
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	22
8.	वैज्ञानिक दृष्टि से जैन सिद्धांत (साध्वी वैभवश्री आत्मा)	24
9.	चिंतन की चांदनी-3	27
10.	तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी (मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	28
11.	शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	30
12.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	35
13.	बच्चों के जीवन निर्माण में माता-पिता की भूमिका (साध्वी रूचिदर्शनाश्रीजी)	38
14.	धर्म की भूल-भूलैया (विमल कुमार चौरड़िया, भानपुरा, म.प्र.)	42
15.	वीतरागता की अद्‌भुत महिमा वाले चौंतीस अतिशयधारी जिनेन्द्र (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	45
16.	युवा वर्ग को धार्मिक भी बनायें (श्रीमती उषा पाटनी)	46
17.	पानी-प्रकृति का अनमोल उपहार (अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर)	52
18.	जियो और जीने दो (डॉ. दिलीप धींग, एडवोकेट)	55
19.	महिला शाश्वत	57
20.	ज्योतिष शाश्वत	58
21.	बाल शाश्वत (मुनिश्री तारकरत्न विजयजी)	60
22.	सुख छिपा है अपने भीतर (प्रकाश गुंदेचा, जोधपुर)	65
23.	गुजराती संभाग	69-81
24.	कुमकुम सने पगलिये	82-84
25.	परिषद प्रांगण से	85-86
26.	श्रीसंघ सौरभ	87-96
27.	जैन विश्व	97-100
28.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	101-102

प्रवचन

सर्वनाशकारकः लोभ (3)

(गतांक से आगे)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

तृष्णा एक लता के समान है, जो भयंकर है और भयंकर फल पैदा करने वाली है । ऐसा प्रभु महावीर ने अपने अनुभवगर्भित संदेश में प्रकट किया था । उनके पवित्र पावन शब्द ये हैं–

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।।

जब तक मन में तृष्णा रहती है, धन के प्रति आकर्षण रहता है, तब तक परिपूर्ण धर्म का पालन नहीं हो सकता ।

एक राजकुमार था । जैनाचार्य के प्रवचन से प्रभावित होने पर उसकी विचारधारा में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ । मन में विरक्ति के प्रति आसक्ति उत्पन्न हुई । महल की चहल-पहल उसे जेल-सी लगने लगी । बँगलों में जँगलों जैसी भयानकता का बोध होने लगा । फलस्वरूप माता-पिता से अनुज्ञा लेकर वह प्रव्रजित हो गया, परन्तु चमकीले रत्नों का मोह छूट न सका । परिणाम यह हुआ कि कुछ बहुमूल्य उत्तम रत्न बाँधकर अपने पास चुपचाप रख लिये । इस विषय में न कुछ माता-पिता को बताया और न ही गुरुदेव को ।

क्रमशः अंगसूत्रों का और फिर समस्त आगमों का गहरा अध्ययन करने के बाद वे श्रुतज्ञानी बन गये । आचार्यजी ने सुयोग्य शिष्य को प्रवचन-कला भी सिखा दी । अन्य शिष्यों की अपेक्षा वे अधिक प्रभावक प्रवचन करने लगे, परन्तु परिग्रह पर वे कुछ नहीं बोलते थे । रत्नों की वह पोटली बाधा डाल रही थी । शेष चार व्रतों पर वे बहुत अच्छा बोलते थे, परन्तु अपरिग्रह व्रत का क्रम आते ही मानो उनकी वाणी लुप्त - सी हो जाती थी । इस विषय को टालकर वे किसी दूसरे विषय पर उछलकर पहुँच जाते थे । लोगों को समझ में नहीं आता था कि ऐसा क्यों होता है

एक दिन इधर-उधर चलते समय शिष्य की छिपी हुई पोटली फर्श पर गिर पड़ी और उसमें रखे हुए सारे रत्न बिखर गये। उनके साथ ही उनका मोह भी बिखर गया। रत्नों को उन्होंने एकत्र करने का प्रयास नहीं किया। परिग्रह का लोभ छूट जाने पर वे अपरिग्रह व्रत पर भी प्रभावक प्रवचन करने लगे।

धीरे-धीरे वे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो गये। उनका शुभ नाम था - श्रीमद्विजयरत्नाकरसूरि। उनका एक स्तोत्र प्रसिद्ध है- 'रत्नाकरपंचविंशतिः।' इस स्तोत्र में उनके हृदय का पश्चाताप प्रकट हुआ है। आज भी लोग उनकी इस रचना का पाठ करके अपने को धन्य मानते हैं। लोभ से मन को हटाकर आचार्यजी स्वयं ऊपर उठ गये थे। स्तोत्र पाठ से उनकी जीवनी का स्मरण हो आता है।

जाल में फँसने के लिए दाने डालने वाला शिकारी का अपराध तो स्पष्ट है, परन्तु वे कबूतर भी कम अपराधी नहीं हैं, जो दानों के लोभ में पड़कर जाल में जा फँसते हैं।

एक नगर में एक धनिक सेठ रहता था। उसके पड़ौस में एक जाट रहता था। जाट के घर में एक बार कुछ मेहमान आये। जाट अपनी शान बताने के लिए सेठजी के घर से कुछ चाँदी के बर्तन माँग लाया। मेहमान चले गये। जाट बाजार से कुछ चाँदी के चम्मच खरीद लाया और उन्हें माँगे हुए बर्तनों के साथ मिलाकर सेठजी को लौटाने गया।

सेठजी ने बर्तन गिने तो वे अधिक निकले। सेठजी ने पूछा कि ये चम्मच कहाँ से आ गये? जाट ने कहा -' कुछ बर्तनों ने बच्चे जन दिये हैं, जो अभी चम्मच दिख रहे हैं, बाद में वे और बड़े बन जायेंगे।'

सेठजी ने प्रसन्न होकर चम्मचों के साथ सारे चाँदी के बर्तन अपने पास रख लिये।

कुछ दिनों बाद जाट के घर दूसरे मेहमान आये। वह फिर चाँदी के बर्तन माँगने सेठजी के घर गया। सेठजी के मन में लोभ पैदा हो गया। बोले- 'अरे भाई! मेहमान कोई बार-बार थोड़े ही आते हैं? उनका सम्मान और अच्छी तरह से करना चाहिये। मैं तुम्हें इस बार सोने के बर्तन देता हूँ। इससे सारे मेहमान खुश हो जायेंगे, ले जाओ।'

जाट सोने के बर्तन ले गया। मेहमानों के चले जाने पर भी चार-पाँच दिनों तक जब जाट बर्तनों को लौटाने नहीं आया, तब सेठजी का माथा ठनका। वे जाट के घर पर जाकर अपने बर्तन माँगने लगे। जाट ने कहा - 'आपके सारे पात्र मर गये हैं।'

सेठजी ने राजा के सामने वाद प्रस्तुत किया तो जाट ने अपनी ओर से यह तर्क प्रस्तुत किया - 'जो पुत्र पैदा कर सकते हैं, वे मर भी सकते हैं।'

चाँदी के बर्तनों की घटना भी सुनाई । न्याय जाट के पक्ष में दिया गया । लोभ के कारण सेठ को आर्थिक हानि उठानी पड़ी ।

संतोष ही सबको सुख देता है । धन के लोभ में सिकंदर ने बहुत से युद्ध किये । हजारों स्त्रियों को विधवा बना दिया । हजारों वृद्ध माता -पिताओं का सहारा छीन लिया । धन के साथ दुःख और अशांति ही उसे मिल पाई । सारा धन यहीं छोड़कर जाना पड़ा ।

एक बार वह तुर्किस्तान में गया था । वहाँ के राजा ने उसका आतिथ्य - सत्कार किया । भोजन के समय लाल वस्त्र से ढकी हुई थालियाँ परोसी गई । सिकन्दर को जोरों से भूख लग रही थी । राजा ने थालियों से वस्त्र हटा लिये । उनमें भोजन-सामग्री के स्थान पर चमचमाते रत्न भरे थे ।

सिकन्दर ने पूछा - 'भोजन कहाँ है ?'

'जिन रत्नों की आप को भूख है, वे ही मैंने परोसे हैं । भोजन तो आपके देश में भी मिलता है, परन्तु अपनी सेना लेकर आप जो दूसरे देशों पर आक्रमण करते हैं, उसका उद्देश्य तो रत्न संग्रह की भूख को शांत करना ही है न ? राजा ने कहा ।

सिकन्दर इस उत्तर से निस्तेज हो गया । उसके और उसके समस्त साथियों के पेट में चूहे दौड़ रहे थे । रत्नों में ऐसी शक्ति नहीं थी कि वे चूहों की उछल-कूद को शांत कर देते । अन्त में सिकन्दर को स्वयं ही शांत होना पड़ा । उसने समस्त रत्न लौटा दिये । राजा ने संधि कर ली। फिर राजमहल में भोजन स्वीकार करके वह अपने देश को लौट गया ।

नागदत्त - लक्ष्मीपुर नगर में दत्त नाम का सेठ था । उसकी देवदत्ता नाम की स्त्री थी । उसके एक पुत्र हुआ, जिसका नाम देवदत्त रखा । वो नागक्रीडा में प्रवीण था । एक बार उसे प्रतिबोध कराने उनका देव मित्र गरूड़ का रूप बनाकर उसके पास आया । उसने एक-दूसरे के सर्पों से खेलने लगे, उसमें गरूड़ को कुछ नहीं हुआ, परन्तु नागदत्त गरुड़ की, सर्पों की दशा देख मूर्छित हुआ, अन्त में गरुड़ ने उन्हें जीवित कर, अपना पूर्वभव सुनाया कि हम दोनों पूर्वभव में मित्र देव थे । इससे नागदत्त को जातिस्मरण ज्ञान हुआ । उन्होंने दीक्षा अंगीकार कर, बाद में क्रोध-मान-माया-लोभ रूपी चार अंतर शत्रुओं को वश में कर मुक्ति पायी ।

लेखांक - 35

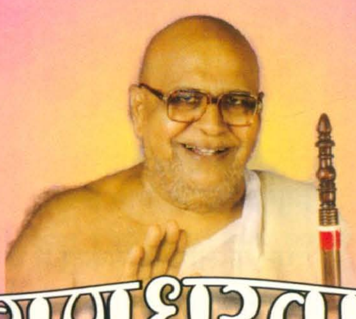

गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

कर्म प्रत्यक्ष सिद्ध है

अग्निभूति- आर्य ! आपने मेरे सन्देह का संकेत तो किया, लेकिन जब तक आप समाधान नहीं करते, तब तक आपकी विद्वता का विश्वास कैसे किया जा सकता है?

महावीर - सौम्य ! सम्भवतः तुम्हारा उक्त संदेह अनुचित है, क्योंकि मैं तो कर्म का प्रत्यक्ष दर्शन कर रहा हूँ और चाहे कर्म तुम्हें प्रत्यक्ष न हो । किन्तु अनुमान से तुम भी उसकी सिद्धि कर सकते हो । और इसका कारण यह है कि सुख दुःख आदि की अनुभूति रूप कर्म का फल-कार्य तो प्रत्यक्ष ही है । अतः अनुमान गम्य होने से कर्म को सर्व प्रमाणातीत नहीं माना जा सकता ।

अग्निभूति - आप ठीक ही कहते होंगे, लेकिन जब कर्म है, तो आपकी तरह मुझे भी प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर क्यों नहीं ?

महावीर - यह कोई एकान्तिक नियम नहीं है कि जो किसी एक को प्रत्यक्ष हो वह सभी को प्रत्यक्ष होना ही चाहिये । जैसे सिंह, बाघ, हंस आदि ऐसी अनेक वस्तुएँ संसार में है, जिन्हें सभी मनुष्यों ने प्रत्यक्ष नहीं देखा हो किन्तु ऐसा कोई नहीं मानता कि सिंह आदि प्राणी संसार में है ही नहीं । अतः सर्वज्ञ होने के कारण मेरे द्वारा प्रत्यक्ष कर्म का अस्तित्व तुम्हें वैसे ही स्वीकार करना चाहिए - मानना ही चाहिए, जैसे कि मेरे द्वारा प्रत्यक्ष किये जाने पर तुमने अपने संशय के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है ।

इसके अतिरिक्त जैसे परमाणु के अतीन्द्रिय होने से उसका साक्षात् प्रत्यक्ष तो तुम नहीं करते हो, लेकिन घट-पट आदि कार्यों को देखने से तुम भी कार्य रूप में उसको प्रत्यक्ष मानते हो । इसी प्रकार चाहे कर्म तुम्हें प्रत्यक्ष न हो किन्तु कर्म का फल-कार्य सुख-दुःखादि तो प्रत्यक्ष है ही । इसलिये कार्यरूप में कर्म का प्रत्यक्ष तो तुम्हें मानना ही चाहिये ।

कर्म साधक अनुमान

अग्निभूति- प्रत्यक्ष की बात छोड़िये । आपने पूर्व में जो यह कहा था कि कर्म अनुमान गम्य है, तो उस अनुमान को स्पष्ट कीजिये ।

महावीर- कर्म साधक अनुमान तो स्पष्ट ही है कि सुख-दुःख का कोई हेतु अर्थात् कारण होना चाहिये क्योंकि वह कार्य है । जैसे कार्य होने से अंकुर का हेतु बीज है, अतः सुख-दुःख रूप कार्य का जो हेतु है वही कर्म है ।

उक्त प्रमाण के अतिरिक्त एक दूसरा कर्म साधक अनुमान इस प्रकार है - आद्य बाल शरीर देहान्तर पूर्वक है अर्थात् देहान्तर का कार्य है । क्योंकि वह इन्द्रियादि से युक्त है । जैसे कि युवा शरीर बाल शरीर पूर्वक है । आद्य बाल शरीर जिस देहपूर्वक है वही कार्मण शरीर अर्थात् कर्म है । प्रस्तुत हेतु में आगत आदि पद से सुख-दुःख, प्राणवान, निमेष-उन्मेष, जीवन आदि धर्मों को भी समझ लेना चाहिये और इन धर्मों को भी हेतु बनाकर उक्त साध्य की सिद्धि की जा सकती हैं ।

अग्निभूति- यदि सुख -दुःखादि का इष्ट कारण सिद्ध हो , तो अदृष्ट कर्म को क्यों मानना चाहिये ? हम देखते ही हैं कि सुगंधित पुष्पमाला, चन्दन आदि पदार्थ सुख के हेतु हैं और सर्प, विष, काँटे आदि पदार्थ दुःख के हेतु हैं । अतः जब इन सभी दृष्ट कारणों से सुख-दुःख होते हैं, तब उसका अदृष्ट कारण कर्म क्यों मानना चाहिये ?

महावीर- दृष्ट कारणों में व्यभिचार दिखने से अदृष्ट कारण मानना पड़ता है ।

अग्निभूति- वह कैसे ?

महावीर- सुख-दुःख के समान दृष्ट साधन-कारण विद्यमान रहने पर भी उनके फल में कार्य में जो तरतमता-विशेषता दृष्टिगत होती है, वह निष्कारण तो है नहीं, क्योंकि वह विशेषता घट की तरह कार्य है । अतः उस विशेषता का जनक कोई हेतु मानना ही चाहिए और जो हेतु है उसी का नाम कर्म है । वह कर्म ही है । दूसरी बात यह है कि सुख-दुःख के बाह्य साधन समान होने पर भी दो व्यक्तियों को उससे प्राप्त सुख-दुःख रूप फल में तरतमता दिखती है ।

अर्थात् जिन साधनों से एक को सुख मिलता है, उन्हीं से दूसरे को अल्प अथवा अधिक सुख प्राप्त होता है तथा तुमने जो माला को सुख का दृष्ट कारण कहा है, लेकिन वही माला यदि कुत्ते के गले में पहनाई जाये तो वह उसे दुःख का कारण मानकर उससे छूटने का प्रयत्न क्यों करता है? और यदि विष सर्वथा दुःखदायी ही हो तो कितने ही रोगों में वह रोग निवारण द्वारा जीव को सुख क्यों देता है ? अतएव यह मानना चाहिये कि माला आदि जो सुख-दुःख के बाह्य कारण माने जाते हैं, उनके उपरान्त भी दूसरा कोई उनसे भिन्न अन्तरंग कर्मरूप अदृष्ट कारण भी सुख-दुःख का हेतु है । - (क्रमशः)

लेखांक 35

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

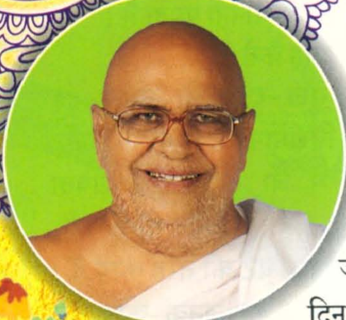

अमरचंद की वर्षों की इच्छा आज पूरी हो गई । पुत्री का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया । नामकरण संस्कार वाले दिन अमरचंद ने विशाल स्तर पर प्रीतिभोज का आयोजन किया । अपने परिवार वालों और इष्ट मित्रों के परामर्श तथा फूल सी कोमल पुत्री को देखकर उसका नाम फूलकुंवर रखा गया । अमरचंद और उसका परिवार ठाकुर जी की कृपा का परिणाम मान रहे थे । इस कारण ठाकुरजी के प्रति उनकी श्रद्धा-भक्ति और अधिक बढ़ गई थी । परिवार के सभी सदस्यों का प्यार-दुलार फूलकुंवर के प्रति अधिक था । चन्द्रमा की कला की भांति फूलकुंवर बढ़ने लगी ।

माता-पिता का प्यार, भाई-भौजाई का दुलार उसे भरपूर मिल रहा था । वह हाथों-हाथ पल रही थी । जब वह ठुमक-ठुमककर चलती तो उसकी बाल क्रीड़ा देख-देखकर सब उस पर न्यौछावर हो जाते थे । अभी वह भली-भांति चल नहीं पाती थी। कभी-कभी चलते-चलते गिर भी पड़ती । ऐसे में उसे उठाने के लिये परिवार का प्रत्येक सदस्य दौड़ पड़ता था । लाड़ -प्यार में पलकर वह जब कुछ बड़ी हुई तो उसकी हर मांग की पूर्ति परिवार के सदस्य हंसकर करने लगे । कभी-कभी वह हठ भी करने लगती । परिवार वाले इसे बाल सुलभ क्रीड़ा समझते और इस ओर ध्यान नहीं देकर उसकी इच्छा पूर्ति कर देते । परिणाम यह हुआ कि वह हठीली हो गई । माता-पिता तथा भाई-भौजाई उसके इस स्वभाव को ठाकुरजी की मान शक्ति मानकर या ठाकुरजी की कृपा का प्रसाद मानकर चुपचाप उसका हठीलापन सहन करते रहे । किसी ने भी उसे समझाने का प्रयास कभी भी नहीं किया । परिणामस्वरूप यहां यह कहावत- 'करेला और नीम चढ़ा ।' चरितार्थ हो गई । फूलकुंवर अत्यधिक

जिद्दी हो गई । चूंकि फूलकुंवर घर में सबसे छोटी थी, पुत्री थी, सबको अति प्रिय थी । इसलिये उसके इस हठीले स्वभाव की ओर किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया । सभी यह मानकर चल रहे थे कि अभी फूलकुंवर बच्ची है । बड़ी होगी तो सब कुछ ठीक हो जावेगा, किन्तु माता-पिता, भाई-भौजाई सबकी यह आशा मृग मरीचिका प्रमाणित हुई । जैसे-जैसे फूलकुंवर बड़ी होती गई उसका स्वभाव और अधिक हठीला और दुराग्रहों से भरा हुआ होता गया । अब तो स्थिति यहां तक आ गई थी कि वह अपने घर में ही नहीं, पास-पड़ोस में भी अपनी मनमानी चलाने लगी । जब कोई पड़ोसी उसकी बात का प्रतिकार करता तो वह उनसे झगड़ पड़ती । प्रतिदिन कोई न कोई झंझट अमरचंद को सुनने को मिलता ।

अमरचंद जब भी फूलकुंवर को समझाते, वह उन्हें भी उल्टी-सीधी बातें सुना दिया करती । अमरचंद बेटी को कुछ भी नहीं कह पाता और मन मारकर रह जाता । भाइयों में से भी कोई उसे कुछ नहीं कहता । भौजाइयों के कहने का तो प्रश्न ही नहीं उठता । इस प्रकार फूलकुंवर की आयु के बढ़ने के साथ-साथ उसका मिथ्या अभिमान भी बढ़ता चला गया । उसका यह अभिमान उस समय और अधिक बढ़ गया, जब एक दिन घर पर एक पंडितजी आए और उन्होंने अपने ज्ञानोपदेश में कुछ संस्कृत के श्लोकों का उदाहरण देकर अपनी बात की पुष्टि की । घर के सभी सदस्य पंडितजी के उपदेश का ज्ञानामृत पान कर रहे थे और सभी अपनी-अपनी बुद्धि के अनुरूप उनकी बात का अर्थ ग्रहण कर रहे थे ।

जिसकी समझ में कुछ नहीं आता, वह प्रति प्रश्न करके जान लेता था । फूलकुंवर ने भी अपनी बुद्धि के अनुसार अर्थ ग्रहण किया । उसने जो भी अर्थ समझा, उसका स्पष्टीकरण पंडितजी से करवाना अथवा भलीभांति उसे समझना उचित नहीं समझा । श्लोक इस प्रकार था -

'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामकं शरणं ब्रजः ।
अहं त्वाँ सर्व पापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मां शुच ।।

फूलकुंवर ने इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार ग्रहण किया – 'क्षमादि सभी प्रकार के धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ । किसी भी प्रकार के पाप की चिंता मत करो । तुम्हारे सभी प्रकार के पापों का मैं हरण कर दूंगा ।' इस अर्थ ग्रहण के पश्चात् उसने संकल्प किया कि वह अब केवल ठाकुरजी की भक्ति करेगी । उसे किसी भी प्रकार के गुण से कोई काम नहीं है । गुणों से सम्बन्ध भी नहीं रखना है । ठाकुरजी उसे उसका उचित स्थान प्रदान कर देंगे । अपनी इस समझ के अनुसार अब फूलकुंवर ने अपने आचरण में भी थोड़ा परिवर्तन कर लिया । वह दिन रात ठाकुरजी की भक्ति में रहने लगी, किन्तु परिवार के सदस्यों अर्थात् माता-पिता, भाई-भौजाई के साथ उसका व्यवहार दिन-प्रतिदिन क्रूर होता गया । उसका क्रूर व्यवहार पड़ोसियों के साथ भी होने लगा । (क्रमशः)

पास रहकर भी दूर

यह कितनी बड़ी विडंबना है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की आदर्श भारतीय संस्कृति में जीने वाले लोग अब 'हम पिया हमारा बैल पिया' की ओछी मानसिकता से ग्रस्त होते चले जा रहे हैं । यही वजह है कि विश्व, राष्ट्र और समाज के उत्थान की चिंता तो दूर आज आदमी को अपने परिवार से भी कोई अपनत्व नहीं रहा । अपनत्व है तो सिर्फ अपने स्वार्थ से । स्वार्थ संपूर्ति में कोई भी आड़े क्यों न आये, इंसान उसकी हत्या तक करने में नहीं हिचकता है । ऐसा लगता है कि खतरा दूसरों से नहीं अपनों से बढ़ता जा रहा है । अफसोस जिस भारतीय सामुहिक जीवन पद्धति को आदर्श मानकर अमेरिका जैसा धनाढ्य देश अपनाने की कोशिश कर रहा है, वहीं स्वयं भारत के बाशिंदे अपनी प्राचीन विरासत को खोकर पश्चिम के अंधानुकरण में इस तरह बह रहे हैं कि उन्हें अपनी महान संस्कृति का गर्व तो दूर यह अफसोस भी नहीं है कि हम श्रेष्ठता के किस शिखर से लुढ़क कर पतन के किस रसातल की ओर जा रहे हैं । सामूहिक परिवार पद्धति इस हद तक विखंडन के कगार पर पहुंच चुकी है कि बाप-बेटे से नहीं बोलता, भाई-भाई को देखना तक पसंद नहीं करता, सास-बहू के नहीं बनती, आखिर कैसे मिटेगा संबंधों का यह किरकिरापन ।

प्रश्नोत्तरी

मोहनीय कर्म के भेद

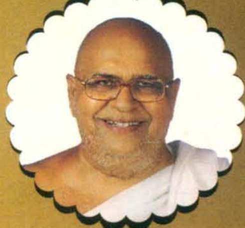

उत्तरदाता

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. चारित्र मोहनीय किसे कहते हैं ?

उ. जिसके द्वारा आत्मा के चारित्र गुण का घात हो उसे चारित्र मोहनीय कहते हैं ।

प्र. दर्शन मोहनीय के कितने भेद हैं ?

उ. दर्शन मोहनीय के तीन भेद हैं - 1. समयक्त्व मोहनीय 2. मिश्र मोहनीय 3. मिथ्यात्व मोहनीय ।

प्र. सम्यक्त्व मोहनीय किसे कहते हैं ?

उ. जिस प्रकार कुटे हुए को द्रव धान्य के छिलकों में पूर्ण मादक शक्ति नहीं होती, उसी प्रकार जिस कर्म के द्वारा समयक्त्व गुण का पूर्ण घात तो न हो, परन्तु उसमें चल मल और अगाढ़ दोष उत्पन्न हो उसे सम्यक्त्व मोहनीय कहते हैं ।

प्र. चल दोष किसे कहते हैं ?

उ. जैसे एक ही जल नाना तरंगों में परिणत होता है, उसी प्रकार तीर्थंकरों में समान अनन्त शक्ति है तो भी श्री शान्तिनाथजी शान्ति करने में और श्री पार्श्वनाथजी परिचय देने में समर्थ हैं इस प्रकार अनेक विषयों में चलायमान होने के कारण भूत दोष को चल दोष कहते हैं ।

प्र. मल दोष किसे कहते हैं ?

उ. जैसे निर्मल सुवर्ण भी मैल के कारण मलिन कहा जाता है, वैसे ही जिस के कारण सम्यगदर्शन में छद्मस्थपन की तरंग से मलिनता आ जावे उसे मल दोष कहते हैं ।

प्र. मिथ्यात्व मोहनीय किसे कहते हैं ?

उ. जैसे पित्तज्वर के रोगी को ज्वर के कारण दूध आदि पदार्थ कड़वे लगते हैं, इसी प्रकार जिस कर्म के उदय से जिन-प्रणीत तत्व अच्छा नहीं लगता, उसे मिथ्यात्व कहते हैं ।

प्र. चारित्र मोहनीय के कितने भेद हैं ?

उ. चारित्र मोहनीय के दो भेद हैं - 1. कषाय मोहनीय और 2. नोकषाय मोहनीय ।

प्र. कषाय किसे कहते हैं ?

उ. जिस से आत्मा बंधती है या जो बंधन कारक हैं -जिससे संसार वृद्धि होती है उसे कषाय कहते हैं ।

प्र. अगाढ़ दोष किसे कहते हैं ?

उ. जैसे वृद्ध पुरुष के हाथ में रही हुई लाठी काँपती है, वैसे ही जिस सम्यग्दर्शन के होते हुए भी 'यह मेरा शिष्य है, यह उनका शिष्य है' इत्यादि भेद भाव जिससे हो उसे अगाढ़ दोष कहते हैं ।

सकारात्मक सोच को अपनाएँ

वाघजीभाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ)

वर्तमान में दार्शनिक , विचारक तथा समाज सुधारक व्यक्ति के सोच पर बहुत चिन्तन कर रहे हैं तथा सभी सकारात्मक सोच पर भरपूर बल दे रहे हैं । सकारात्मक सोच के लिए एक तरह से आंदोलन छिड़ा हुआ है, सभी व्यक्ति को आदेश दे रहे हैं कि नकारात्मकता त्याग दें । नकारात्मक को जीवन दूषित करने वाला विचार माना जा रहा है तथा ऐसा है भी ।

जीवन का कोई क्षेत्र हो, व्यक्ति नकारात्मक बन कर खोता ही है । आज के बुद्धिजीवी युग में तो प्रत्येक व्यक्ति नकारात्मकता से दूर रहकर अपनी छवि बनाना चाहता है । वह जानने लगा है कि नकारात्मकता को ओढ़ना असफलता को न्यौता देना है । इससे दुश्मन बढ़ते हैं, लोग पास बैठने से परहेज करने लगते हैं, नकारा को हर कोई निरस्त करके चलता है । जिनके विचारों में नकारात्मकता भरी हुई है तथा जो इस अनुसार द्वन्द, विवाद तथा झगड़े करने की युक्तियों का ही प्रकार करते हैं, उनको समाज हाशिये पर पटक देता है, न तो उनकी सलाह की कोई कद्र होती है, न ही कोई सलाह मांगने या मानने के लिये तत्पर रहता है । प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के मैदान में समस्याओं से जूझना होता है, वह समस्याओं से घिरा रहकर शांति तथा संतोष की अनुभूति नहीं कर सकता । समस्याओं का समाधान सिर्फ प्रकारात्मक सोच से ही संभव है । सकारात्मक सोच व्यक्ति को सफलता की दिशा में ले जाती है । नकारात्मक विचार हमारे क्षुद्र स्वभाव का उत्पाद है । जो इस तरह सोचने के अभ्यासी होते हैं, वे उनके सामने कोई विषय आये उस पर नकारात्मक चिन्तन ही करते हैं तथा नकारात्मक चिन्तन करते-करते उस मनः स्थिति तक पहुंच जाते हैं जो उनके निष्कर्ष तथा निर्णय त्रुटीपूर्ण बना देते हैं । नकारात्मक चिन्तन वाला व्यक्ति कभी भी सही दिशा में प्रवृत्त नहीं हो सकता । वह सभी के प्रति द्वन्द का मनोविज्ञान लेकर चलता है तथा ऐसी स्थिति स्वयं के लिए उत्पन्न कर लेता है जो निराशा व हताशा से परिपूर्ण करने वाली होती है वह तनाव को बढ़ाते जाता हैं ।

अतः समाज के उत्थान तथा अपनी स्वयं की प्रसन्नता, सफलता तथा मृदुता के लिए सकारात्मक सोच को अपनाने का अभ्यास करें ।

10 जुलाई, चलो रतलाम, चलो रतलाम

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

युग प्रभावक, प्रतिष्ठा शिरोमणी, राष्ट्रसंत जैनाचार्य, गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का इस वर्ष चातुर्मास प्रवेश रतलाम में आगामी 10 जुलाई 2016 रविवार को होगा । रतलाम चातुर्मास के लाभार्थी विधायक श्री चेतन्यजी काश्यप हैं । पूज्य गुरुदेवश्री गुजरात तथा मरूधर प्रान्तों में धर्म चक्र प्रवर्तन करते हुए मालवा की धरती पर प्रवेश कर चुके हैं । निश्चित मुहूर्त में रतलाम नगर में उनका प्रवेश हो जायेगा ।

इस अवसर पर हमें पूरे देश से अधिकाधिक संख्या में रतलाम पहुंचकर पूज्य गुरुदेवश्री की गगनभेदी जय-जयकार में सम्मिलित होना है । रतलाम त्रिस्तुतिक परम्परा के अभ्युदय की ऐतिहासिक नगरी है । इस नगरी के श्रीसंघ ने प्रारंभ से ही दादा गुरुदेव योगीराज श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञाओं का पालन किया तथा उनके निर्देशों को झेलकर गुरुभक्ति का अद्वितीय प्रदर्शन किया है । रतलाम का त्रिस्तुतिक समाज सदैव त्रिस्तुतिक समाज के राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय एवं अग्रणीय रहा है। दादा गुरुदेव के जीवन का युग यांत्रिक साधनों तथा वैज्ञानिक मंत्रों से सम्पन्न नहीं था । उस समय अभिधान राजेन्द्र कोष का मुद्रण कार्य एकदम श्रम साधन तथा कठिन था । यह रतलाम श्रीसंघ का ही साहस था कि उसने हाथ से चलने वाली मुद्रण मशीन से युक्त छापाखाना लगाया तथा अभिधान राजेन्द्र कोष के सातों भागों का मुद्रण कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण करवाया ।

इसके अतिरिक्त पीताम्बर उपयोग की शास्त्रीय जंग भी रतलाम में हुई एवं विजय तक पहुंची । आज भी रतलाम प्रत्येक क्षेत्र में अगुवाई कर रहा है । आगामी 10 जुलाई को रतलाम में होने वाले पूज्य गुरुदेव श्री के चातुर्मास प्रवेश पर अधिकाधिक संख्या में रतलाम में एकत्र होकर गुरुभक्ति को दोहराने का अनुग्रह कीजिये ।

पहली आवश्यकता-वैयावच्च समूहों का गठन

दुर्घटनाओं में पूज्य साधु-साध्वी वर्ग की मौतोंभरी दुर्घटनाएं नहीं रुक रही हैं । विगत माह में ही दो स्थानों पर ऐसी शोकपूर्ण स्थिति का निर्माण हुआ । साधु-साध्वी के विहार के समय सुरक्षा की दृष्टि से वैयावच्च करने तथा उनको रक्षा-कवच अर्पित करने के लिये लम्बे समय से सम्पूर्ण समाज के प्रत्येक गच्छ/समुदाय में गंभीर विचार विमर्श चल रहा है । जैन पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठ इस प्रश्न को ज्वलन्त बनाकर खूब भरे जा रहे हैं । कई सामाजिक या धार्मिक संगठनों ने इस स्थिति का मुकाबला करने की दृष्टि से विहार ग्रुप/वैयावच्च-समूह/युवा दल/ सेवा संगठन गठित करने के निर्णय किये है तथा आपने समुदाय को तैयार करने का प्रयास भी किया हैं लेकिन कोई ठोस उपलब्धि /पहल/संगठित प्रयास स्थायित्व के परिवेश में सन्मुख नहीं आया है । इस दिशा में किये गये प्रयास पानी के बुलबुलों की भांति क्षणिक रहे हैं । प्रखर आचार्यभगवन्तों का उदाहरण एक तरफ रखें क्योंकि उनकी सेवा में यों ही बिना किसी असामान्य स्थिति के कई प्रयास होते हैं तथा होते रहे हैं । प्रश्न सामान्य साधु-साध्वीगणों का है जो हजारों की संख्या में पूरे देश में विचरण कर रहे हैं । उनकी ओर विशेष गंभीर ध्यान नहीं है । हाल ही में कुछ घटनाएँ पूज्य साध्वीजियों के साथ अनुचित व्यवहार की भी आई हैं, जिन्हें दबा दिया जाता है । ऐसी घटनाओं का सामना करने का हमारा शौर्य नदारत हो चुका है । यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है ।

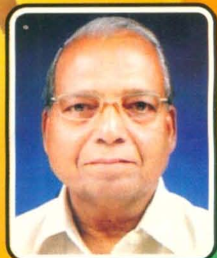

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

ऐसा नहीं है कि सब कुछ शुन्य ही चल रहा है । कुछ प्रतिशत वैयावच्च के प्रति जागरूकता तथा रूचि भी सक्रिय है । दरअसल श्रमण-श्रमणी वर्ग के वैयावच्च को

हमारे संस्कारों में जैसा स्थान होना चाहिए, वह नहीं है । यों श्रमण-श्रमणी वर्ग के प्रति सम्मान तथा वन्दना का भाव अटूट सरीखा है । लेकिन उनके विहार के समय साथ रहने या उनकी सुरक्षा के लिये सतर्क रहने की प्रवृत्ति अभी अंगड़ाई नहीं ले पाई है । तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समय ही श्रमण संस्कृति के नाम पर केवल जैन धर्म नहीं था । जैन धर्म के साथ बौद्ध धर्म एवं शाक्य, वैशेषिक आदि मत भी श्रमण संस्कृति के अंतर्गत थे । इन सभी में भारत में आज केवल जैन धर्म प्रभावशील रहा है । बौद्धमत भी इन वर्षों में कुछ सक्रिय है लेकिन अन्य शाक्य वैशेषिक आदि मत/पंथ/धर्म वैदिक संस्कृति में ही विलीन हो गये हैं । जैन धर्म की दृढ़ स्थिति उसके साधु-साध्वी समूह के कारण ही है । ये हमारे लिये अमूल्य थाती हैं । वर्तमान युग में विषय तथा समृद्धि की दौड़ जोरों से चल रही है, व्यक्ति का ईमान न्यूनतम रह गया है । अपराध बढ़ रहे हैं तथा हिंसा चरम स्थिति में है । ऐसे वायुमान में भी जो गृहस्थाश्रम के मोह से विरक्त होकर सांसारिक आकर्षण को त्यागकर साधनामयी जीवन व्यतीत करने के लिये संयम को ग्रहण किये हुए हैं, वे धन्य हैं, पूज्य हैं, वंदनीय हैं । इनकी सेवा तथा सुरक्षा हमारी पहली प्राथमिकता होनी जरूरी है। फिर हमारे शास्त्रों में साधु-साध्वीगणों की वैयावच्च को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है । यह बारह प्रकार के तपों में आभ्यन्तर तप माना गया है। ऐसी वैयावच्च के आधार पर तीर्थंकर नाम कर्म तक का उपार्जन हो जाता है। मुनियों की वैयावच्च करते हुए सम्यक्त्व की प्राप्ति के उदाहरण तीर्थंकर ऋषभदेव एवं तीर्थंकर महावीर स्वामी दोनों के पूर्व भवों से जुड़े हुए हैं । धन्ना सार्थवाह के भव में भगवान ऋषभदेव की आत्मा ने वैयावच्च कर सम्यक्त्व की प्राप्ति की थी। तीर्थंकर महावीर स्वामी की आत्मा ने नयसार के भव में गुरु भगवंत की सेवा कर सम्यक्त्व की प्राप्ति की थी। उन उदाहरणों को हम प्रतिवर्ष पर्युषण में सुनते हैं लेकिन कोई प्रेरणा नहीं लेते ।

आज युग की मांग के अनुसार वर्तमान विकट स्थिति में साधु-साध्वीगणों की सुरक्षा, वैयावच्च तथा सेवा के लिये सभी समुदायों/गच्छों / सम्प्रदायों/परम्पराओं/समूहों को मिलकर संगठन तैयार कर ठोस रूप में सामने आना चाहिए । सिर्फ बातों से काम नहीं चलेगा ।

अतिथि रचना

वैज्ञानिक दृष्टि से जैन सिद्धान्त

(आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री आत्मा)

वैज्ञानिक दृष्टि से तात्पर्य कार्य-कारण को मानने वाली दृष्टि से है। वह जो, किसी भी तथ्य को प्रयोगों के द्वारा जानने-समझने में विश्वास रखती है, वह वैज्ञानिक दृष्टि है। विज्ञान प्राप्त सूचनाओं व जानकारियों के हेतु-कारण व परिणाम को समझता है, समझने की बात करता है। बिना जाने मानना अथवा बिना जाने नकारना- ये दोनों बातें जहाँ न हो, उसे वैज्ञानिक दृष्टि समझना। जैन सिद्धान्त जिन प्रणीत तत्व है। 'जिन' वह है जो सर्व प्रकारेण खुद को जान चुका है, ऐसे संपूर्ण ज्ञानी में किसी प्रकार का विकास नहीं होता, अतः संपूर्ण विज्ञान प्रगट हो जाता है। वे संपूर्ण तत्व के पारदर्शी होते हैं। उन्होंने जो ज्ञान हमें दिया, वह तो स्वयं में पूर्ण वैज्ञानिक है ही किन्तु यहाँ हमें यह समझने की जरूरत है कि हम उन वैज्ञानिक सिद्धान्तों को वैज्ञानिक तरीकों से जानते-समझते-प्रयोग में लाते हैं अथवा मात्र उनको मानते हैं, अन्धानुकरण करते एवं कराते हैं।

यहाँ प्रश्न जैन सिद्धान्तों की वैज्ञानिकता का नहीं है बल्कि हमारी समझ को वैज्ञानिक बनाने का है। जैन सूत्रों में स्पष्टतया उल्लेख है कि 'आप मानो मत, जानो' 'प्रज्ञा द्वारा धर्म की समीक्षा करो' व 'अपना सत्य स्वयं खोजो।' जीव-अजीव, पाप-पुण्य, आस्रव-संवर-बंध, निर्जरा व मोक्ष को जानकर, अनुभव कर, श्रद्धा करता है, वह सम्यक, विज्ञानवेत्ता है, सम्यक्दर्शी है। किन्तु जब तक लोग धारणाओं को धर्म मानते हैं, तब तक वैज्ञानिक दृष्टि पैदा नहीं होती। बचपन के संस्कारों को as it is सत्य मानने की आदत हमें निरपेक्ष व निष्पक्ष जिज्ञासु बनने से रोकती रही है। अक्सर दादी-नानी की कहानियाँ हमें दादी-नानी की उम्र तक पहुँच कर भी सत्य ही प्रतीत होती है, उन पर कभी खोज दृष्टि पैदा ही नहीं होती। ऐसे में धर्म के सिद्धान्तों की वैज्ञानिकता भला हमारी समझ में कैसे आ सकती है ? जैन धर्म के सिद्धान्तों की वैज्ञानिकता समझने व अपनी दृष्टि को वैज्ञानिक बनाने के लिए हमें जैन धर्म के सिद्धान्त क्या हैं, इसको व इन सिद्धान्तों के मूलस्वरूप के अतिरिक्त इसके आस-पास बने रिवाजों, संस्कारों व परिपाटियों को अलग करके समझना होगा। मूल तत्व को विविध परम्पराओं से जुदा करना होगा।

हर परंपरा की प्रणालियाँ अर्थात् समाचारी व नीति-नियम जुदा-जुदा हैं किन्तु मौलिक सिद्धान्त इन सब परंपराओं में मौजूद है। अक्सर लोग मौलिक सिद्धांतों की स्पष्ट समझ को पाने की बजाय रिवाजों के अनुकरण को धर्म पालना कहते हैं। यहीं चूक हो जाती है। आचार-संहिता के नियमों को जैन धर्म के मौलिक सिद्धांतों के रूप में समझा जाने के

कारण जैन धर्मी भी परस्पर कटे-कटे रहते हैं। जैसे कोई स्नान को अधर्म बताता है तो कोई बिना स्नान के मंदिरजी में प्रवेश को निषिद्ध बताते हैं। कोई धूप, दीप, बत्ती को तेउकाय आरंभ व हिंसा बताते हैं तो कोई मंदिर में पूजा को अनिवार्य अंग। ऐसे में सामान्य जन का भ्रमित होना सहज ही है। धर्म के मौलिक सिद्धान्तों को समझने के लिए इन आचार-संहिताओं में व दार्शनिक मान्यताओं में - कहीं भी उलझने की जरूरत ही नहीं है।

आओ, जाने जैन धर्म के सिद्धान्त-

1. आत्मवाद - जैन दर्शन पूर्णतः आत्मवादी दर्शन है। वह कहता है कि आपकी जीवन यात्रा के निर्धारक आप स्वयं हैं। आप ही अपने कर्त्ता व किए गए कल्प के भोक्ता हैं। आपके जन्म-जरा-मृत्यु के लिए किसी ईश्वर या अन्य सत्ता का हस्तक्षेप नहीं है। यदि आपको अपने द्वारा किए गए कर्मों का फल भोगवाने के लिए किसी ईश्वर की जरूरत हो तब ईश्वर को भी तो इसी कर्म श्रृंखला का हिस्सा बनना पड़ेगा। ईश्वर स्वयं कर्त्ता बन जाएगा जो अपने लिए तो कुछ नहीं करता किन्तु शेष सारे सांसारिक लोगों को उनके कर्मों का फल देने का कार्यभार संभालता है। ऐसे में अगर कोई उस ईश्वर से दया की भीख मांगे तो वह ईश्वर उस पर कृपा करके उसके दुष्ट कर्मों की माफी भी दे सकता है और अगर कोई उसकी पूजा न करे, उसकी भक्ति न करे, उस पर विश्वास न रखे, तो संभव है कि ईश्वर उसे माफ न करे। उसके दुष्ट कर्मों का बहुत कठोर फल देवे। इस प्रकार ईश्वर या खुदा की पूजा व उससे खौफ मानव जीवन की सोच का अनिवार्य अंग बना दिया गया। जैन धर्म के सिद्धांत की वास्तविकता को अगर समझा जाए तो वह ऐसे किसी ईश्वर की पूजा-बंदगी की बात ही नहीं करता, वह न तो ईश्वरवादी है, न ही निरीश्वरवादी। वह ईश्वर को शुद्ध-प्रबुद्ध-मुक्त आत्मा कहता है, जो न कुछ करता है, न ही करने की प्रेरणा या अवरोध देता है। इस प्रकार जैन दर्शन की वैज्ञानिकता इस सिद्धांत में गजब की है कि आपका मालिक कोई अन्य नहीं, आप स्वयं ही हैं।

2. कर्मवाद - जैन दर्शन का कर्मवाद कहता है कि हर जीव अपने कर्म करने के लिए स्वतंत्र है किन्तु किए हुए कर्म का फल भोग उसे अवश्य करना ही होता है। परिणाम को बदलने का नया कर्म भी किया जा सकता है और वह नया कर्म फिर से नए प्रतिरूपों में अभिव्यक्ति पाता है। यूं हम हर पल अपने भाव कल्प से कर्म सर्जन, विसर्जन व विशिष्टीकरण करते रहते हैं। यह ठीक इसी प्रकार है जैसे H_2O पानी होता है और CO_2 कार्बन डाई ऑक्साइड। इसी तरह हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। कर्मफल का भोग यह बताता है कि कर्म किस तरह का किया गया था। इस कार्य - कारण श्रृंखला में किसी प्रकार का मनचाहा बदलाव गैर वैज्ञानिक तरीकों के संभव नहीं है। गर अशुभ कर्मफल भोग नहीं चाहिए तो उन बंध कारणों को भी छोड़ना होगा जिनसे यह परिणाम प्रगट हो रहे हैं। इसी तरह शुभ फल भोग के कारणों को प्रगट किए बिना शुभ परिणामों की प्राप्ति असंभव है। इस वैज्ञानिक

श्रृंखला को समझकर जीने वाला कभी भी अपने को गैर जिम्मेदार नहीं बना सकता । हमारे हर कर्मफल भोग के स्वरूप के जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं ।

3. चमत्कार पर नहीं पुरूषार्थ पर जोर – कोई भी धर्म तब अवैज्ञानिक बन जाता है जब उसमें चमत्कारों की घोषणाएँ होती हैं । जब यह कहा जा रहा हो 'तुम कुछ न करो, बस विश्वास करो और चमत्कार घटित होने लगेंगे।' 'हमें मान लो और सब कुछ हम कर देंगे । हमें सर्वशक्तिमान ईश्वर मानो, हम तुम्हें मुक्त कर देंगे।' ऐसी बातें बड़ी गैर-वैज्ञानिक प्रतीत होती हैं। भला किसी भी नाम, रूप, आकार या शब्दों की अभ्यर्थना आदमी को मुक्त कैसे देगी ? जब किसी अन्य ने बांधा ही नहीं तो वह मुक्ति भी कैसे दे सकता है ?

अक्सर चुनौतीपूर्ण हालातों का कायर मन चमत्कार की उम्मीद करता है और इसी उम्मीद के सहारे वह अनेकों संतो-पंथों-ग्रथों की परिक्रमा करता है किन्तु मानवीय मस्तिष्क यह उम्मीदपरक दृष्टिकोण दुःखद हालातों में ही टिका पाता है । हालात बदलते ही स्वयं द्वारा मान्य इन प्रक्रियाओं पर स्वयं ही प्रश्नचिन्ह लगाना शुरू कर देता है । कुल मिलाकर आसरा ढूंढने वाला व्यक्ति कभी भी हिम्मती, खोजी व वैज्ञानिक नहीं हो पाता । जैन सिद्धांत इंसान को आसरा (आश्रय) देने का आश्वासन नहीं देता । वह किसी तरह की ऐसी घोषणाएँ नहीं करता कि तुम मुझमें (यानि जैन धर्म में) विश्वास करो तो ही तुम्हारा कल्याण संभव होगा । 'तुम मुझे मानो या न मानो', इससे फर्क नहीं पड़ता किन्तु 'तुम स्वयं को जानो या न जानो', इससे बहुत फर्क पड़ता है । इसीलिए जैन सिद्धांत प्रामाणिक है क्योंकि वे किसी भी तरह के भय, प्रलोभन, आग्रह व आश्वासनों को प्रश्रय नहीं देते हैं ।

वे शक्ति को, अभय को उपलब्ध होने व अशरण के विज्ञान को समझकर जीने की बात करते हैं । चुनौतीपूर्ण या कष्टप्रद हालातों को भी सम्यक् नजरिए से देखने व उनमें प्रतिक्रिया रहित समभाव से गुजरने की बात करते हैं ।.

वैसे भी धर्म नहीं, धर्मान्धता अवैज्ञानिक होती है । धर्म जहाँ आध्यात्मिक सत्य की ओर उन्मुख करता है, वहीं धर्मान्धता इंसान को 'यह मेरा धर्म-यह तेरा धर्म' ऐसे भेदों में उलझाती है। धर्मान्तरण की समस्या भी इसी धर्मान्धता की देन है । जो लोग दूसरों के विश्वासों को अपने मान्य विश्वासों में तब्दील करने की चेष्टा करते हैं, वे ही धर्म के नाम पर गुटबाजी व सांप्रदायिकता के माहौल को जन्म देते हैं । हिन्दू-मुस्लिम दंगे इन धर्मान्ध लोगों की देन है। हकीकत में 'धर्म' तो आत्मस्वरूप को पहचान कर अपने स्वभाव में जीने की साधना व जागृति का नाम है । इसे खुद को समझकर जीना होता है। जहाँ हम ज्ञान व विवेक से जीते हैं, वहाँ हम लयबद्ध व तनावमुक्त होते हैं । इसके विपरीत अंधविश्वासों और मूढ़ताओं से भरकर जीने वाले लोग डरपोक, कायर, लोभी, दंभी व पाखंडी बनते जाते हैं । इसीलिए हमारा कहना यही है कि-जैन धर्म की वैज्ञानिकता को समझने के लिए स्वयं के नजरिए को मूढ़ता मुक्त बनाइए । जय हो !!!

चिंतन की चांदनी -3

जो संपति को ही सर्वस्व समझते हैं उसे कभी शुद्ध मति प्राप्त नहीं होती और शुद्ध मति के बिना उस व्यक्ति की गति मम्मण की तरह दुर्गति की ओर आगे बढ़ती है ।

– आचार्य जयन्तसेनसूरि

**

जिंदगी के एक कदम पर सुबह है,
जिंदगी के दूसरे कदम पर शाम है ।
आदमी की जिंदगी है भला क्या ?
दो कदमों में जिंदगी तमाम है ।।

– डॉ. मुनि सिद्धरत्नविजय

**

जिनालय जे चित्त ने प्रसन्न करे छे, भाग्य सौभाग्य नो उदय प्रभु दर्शन थी थाय छे ने कर्म नी विचित्रता थी दुर्भाग्यनो उदय थाय, त्यारे पण चित्त नी प्रसन्नता तो प्रभुदर्शन थीज टके छे ।

– मुनि अपूर्वरत्न विजय

**

परिस्थिति का सर्जन मन स्थिति करती है, इसलिए कभी भी अपने मन को वश करने की साधना करो ।

– मुनि चारित्ररत्नविजय

**

जो व्यक्ति गुणों से गुरु होता है उसे पूरा जगत गुरु मानता है, इसलिए हमेशा जीवन में गुणों को स्वीकार करो ।

– मुनि निपुणरत्नविजय

**

जो व्यक्ति के पास सत्व पुरुष का और करुणा स्त्री की हो उसे सज्जन पुरुष और संत बनने से कोई नहीं रोक सकता ।

–मुनि प्रसिद्धरत्न विजय

1. सभी गुणों की माता मौन है, मौन से ही धैर्यता और गंभीरता पैदा होती है ।

– मुनि प्रत्यक्षरत्नविजयजी

2. संसार में भी मोक्ष का आनंद प्राप्त करना हो तो भूमि परिचय और परिग्रह से दूर रहना चाहिए ।

– मुनि जिनागमरत्नविजयजी

3. धर्म से कभी कोई नुकसान नहीं होता, नुकसान सिर्फ अधर्म से होता है ।

– मुनि पविजरत्नविजय

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी (5)

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

भगवान श्री ऋषभदेव के केवल ज्ञान प्राप्त होने के उपरांत यमक और शमक नामक व्यक्ति भरत के दरबार में आए एवं उन्हें नमस्कार करके पहले यमक ने कहा कि 'महाराज आज पुरिमताल उपनगर के शकटमुख नामक उद्यान में प्रभु को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ है।' शमक ने निवेदन कर उन्हें चक्ररत्न उत्पन्न होने की सूचना दी एवं उसी समय उन्हें पुत्र - रत्न लाभ की तीसरी शुभ सूचना भी प्राप्त हुई । एक साथ तीनों शुभ सूचनाएँ पाकर महाराजा भरत विचार में पड़ गये कि वह कौन सा उत्सव पहले मनाएं ? क्षण भर में ही विवेक पूर्वक निर्णय कर उन्होंने सर्वप्रथम प्रभु के केवल ज्ञान उत्सव मनाने का निश्चय किया । इधर माता मरूदेवी अपने पुत्र ऋषभदेव के दर्शन हेतु चिरकाल से व्यथित हो रही थी उन्हें महाराजा भरत ने प्रभु के केवल ज्ञान उपलब्धि का सुखद संदेश सुनाया । यह सुनकर माता मरूदेवी पुलकित होकर तत्काल भरत के साथ समस्त परिजनों सहित गजारूढ़ हो प्रभु के दर्शनार्थ प्रस्थित हुईं । पानी के प्रबल प्रवाह से जैसे अनेक दिनों का जमा हुआ कचरा भी साफ हो जाता है, उसी तरह आनंदाश्रु के प्रबल प्रवाह से माता मरूदेवी की आँखों में आये हुए जाले साफ हो गये एवं उन्हें स्पष्ट दिखाई देने लगा । उन्होंने तीर्थंकर प्रभु के समवसरण वैभव को देखा एवं विचारों से तत्काल ही समकाल में अपूर्वकरण के क्रम से क्षपक श्रेणी में आरूढ़ होकर घातिया कर्मों का नाश कर केवल ज्ञानी हुई । अवसर्पिणीकाल में सिद्ध होने वाले जीवों में माता मरूदेवी का प्रथम स्थान है । महाराजा भरत समवसरण में पहुंचे एवं प्रभु की प्रदक्षिणा एवं प्रणाम कर इन्द्र के पीछे बैठे । केवल ज्ञानी और वीतरागी बन जाने के पश्चात भगवान ऋषभदेव पूर्ण कृत कृत्य हो चुके थे । उन्होंने समस्त जग के जीवों की रक्षा व दया के लिये उपदेश दिया । अतः भगवान श्री ऋषभदेव को शास्त्र में प्रथम धर्मोपदेशक कहा गया । वैदिक पुराणों में उन्हें दशविध धर्म का प्रवर्तक माना गया । प्रभु ने प्रथम देशना फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन दी जिसमें उन्होंने रात्रिभोजन विरमण सहित अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि पांच महाव्रत धर्म का उपदेश दिया ।

प्रभु की देशना सुनकर सम्राट भरत के ऋषभसेन आदि पांच सौ पुत्रों और सात सौ पौत्रों ने दीक्षा ले ली । ब्राह्मी ने भी उसी समय दीक्षा ले ली । सुन्दरी ने भी दीक्षा लेना चाहा, परन्तु भरत ने आज्ञा नहीं दी अतः वह श्राविका हुई एवं बाद में उसने भी दीक्षा ले ली स्वयं भरत ने श्रावक व्रत ग्रहण किये । इस प्रकार साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका के समूह को मिलाकर चतुर्विध संघ की स्थापना हुई । उस चतुर्विध संघ की योजना आज भी है जिसके द्वारा अनेक जीवों का कल्याण होता है । भगवान श्री ऋषभदेव के चौरासी गणधरों में प्रथम गणधर श्री ऋषभसेन हुए। कहीं-कहीं पुंडरीक नाम का भी उल्लेख मिलता है । तीर्थंकर पर्याय में प्रभु श्री ऋषभदेव ने उस समय के वृहत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विहार किया । उस समय देश के कोने-कोने एवं सुदूरस्थ प्रदेशों में जैन धर्म चहुंमुखी प्रचार-प्रसार के कारण सार्वभौम धर्म के प्रतिष्ठित पद पर अधिष्ठित हुआ । दीक्षा के पश्चात् जब लाख पूर्व बीत जाने पर प्रभु ने अपना निर्वाण समय नजदीक समझकर 10,000 अन्तवासी साधुओं के परिवार के साथ अष्टापद पर्वत की ओर प्रयाण किया एवं चतुर्दश तप (छः उपवास) करके पादोपगमन संथारा (अनशन) किया । जब सुषम- दुःषम नामक तीसरे आरे के समाप्त होने में तीन वर्ष आठ मास और पन्द्रह दिन शेष रहे तब माघ कृष्णा त्रयोदशी के सवेरे, अभिचि - नक्षत्र में चंद्र का योग आया उस समय प्रभु ऋषभदेव निर्वाण को प्राप्त हुए ।

प्रभु के साथ जिन 10,000 साधुओं ने पादमोपगमन संथारा किया था वे भी सिद्ध मुक्त हुए । चक्रवर्ती भरत वज्राहत की भाँति इस घटना से मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । इन्द्र उनके पास बैठकर रुदन करने लगे । जब सबका शोक रूदन से कुछ कम हुआ तब प्रभु का निर्वाण महोत्सव (निर्वाण कल्याणक) किया गया ।

प्रभु का भौतिक शरीर देखते ही देखते भस्मसात हो गया । अपने अन्तिम भव में प्रभु ने संसार पर महान उपकार, संसार को सुख का वास्तविक स्थान एवं उस स्थान तक पहुंचने का मार्ग दिखा दिया ।

रजत रश्मियां

1. रु. 100=00 श्री शांतिलालजी मांगीलालजी जैन रिंगनोद की स्मृति में भेंट ।

शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव

(धीमी गति वाला)

दादा गुरुदेव की नस-नस में शांति और क्रांति का प्रवाह था । इस प्रवाह के कारण वे जन्मजात प्रभावक थे । वे धर्म प्रभावक, शासन प्रभावक, युग प्रभावक थे । उनके संपूर्ण जीवन की शुद्धता, उनकी अपनी स्वयं की आत्मा में शांति की खोज, उनका तेजस्वी आभामंडल कुछ ऐसा क्रांतिकारी प्रभाव उत्पन्न करता था, जो धर्म के प्रति, परमात्मा के प्रति निष्ठा और श्रद्धा उत्पन्न करने वाला होता था । दादा गुरुदेव, मुनिराज रत्नविजयजी के रूप में अनुपम ज्ञान प्रभावना कर रहे थे । उनके द्वारा सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने एवं प्रदान करने के लिए किया गया बेजोड़ ज्ञान यज्ञ हमने देखा । अपने गहन धार्मिक अध्ययन के पश्चात लगातार 7 वर्षों तक आपने लगभग 50 साधुओं यतिओं को अध्यात्म ज्ञान, परमात्म ज्ञान, धर्मज्ञान अविरत रूप से प्रदान किया । वे प्रवचन प्रभावक भी थे । उनके प्रवचन सरल भाषा में, सुबोध प्रदायक और हृदय स्पर्शी होते थे । उनकी वाणी अत्यंत प्रभावक थी, जो अपने श्रोताओं को परमात्म श्रद्धा से सराबोर कर देती थी और धार्मिक पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी । उनकी शुद्ध श्रृद्धा और शुद्ध आचार पालन एक चुंबकीय शक्ति उत्पन्न करता था, जो श्रोताओं को अपना जीवन शुद्ध बनाने के लिए मानसिक रूप से तैयार कर देता था । उनके चातुर्मास जहाँ-जहाँ होते थे, वहाँ भी धर्म का एक अनुपम दिव्य माहौल बन जाता था । संवत् 1914 से 1921 तक 8 वर्षों के दौरान जिन ग्राम नगरों में चातुर्मास में उनके द्वारा धर्मगंगा प्रवाहित हुई, वे सौभाग्यशाली स्थान क्रमशः इस प्रकार हैं । चित्तौड़, सोजत, शंभूगढ़, बीकानेर, सादड़ी, भीलवाड़ा, रतलाम और अजमेर ।

श्री पूज्य देवेन्द्रसूरिजी के आदेशानुसार मुनिराज रत्नविजयजी ने अपने वचन का परिपालन करते हुए यति धीर विजयजी को ज्ञान व व्यवहार मार्ग में परिपक्व कर उन्हें आचार्य पदवी प्रदान करवा दी थी । यति समुदाय के आचार्य को श्री पूज्य कहा जाता था, वे अब श्रीपूज्य धरणेंद्रसूरीश्वरजी हो गये थे । परन्तु एक कमी थी, श्री पूज्यजी के साथ में राजकीय सम्मान के रूप में प्राप्त

राजचिन्ह, पालखी, दंड वगैरह का जो लवाजमा रहता था, वह नहीं था । पिछले कुछ वर्षों से बीकानेर और जोधपुर नरेशों ने राजचिन्ह प्रदान करने की इस प्रथा को बंद कर रखा था । मुनिराज रत्नविजयजी की धर्म प्रभावकता ने इस क्षेत्र में भी अपना प्रभाव दिखाया । मुनिराज रत्नविजयजी के प्रेरक प्रवचन और उनकी अंतरात्मा से उद्भूत सहज त्यागशक्ति ने बीकानेर और जोधपुर के नरेशों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरिजी को राजकीय सम्मान के रूप में पालकी, चामर, स्वर्णछड़ी, अमूल्य दुशाले आदि प्रदान किये ।

यह सब प्राप्त राजसम्मान शुद्ध साधुत्व के उपासक मुनिराज रत्नविजयजी के हृदय को खुशी प्रदान नहीं कर रहा था, वह तो उनके हृदय को कहीं कचोट रहा था । वे तो इस सारे राजसम्मान और राजचिन्हों को परिग्रह का जाल मानते थे, जो शुद्ध साध्वाचार के लिए बंधन रूप था । यहाँ एक अंतर संग्राम उनके हृदय में उत्पन्न होना प्रारंभ होता है जो अंततः शिथिलाचार के परखच्चे उड़ा देने वाले शिथिलाचार निवारक क्रांतिकारी क्रियाद्धार के रूप में सामने आता है ।

ये सब राजचिन्ह साथ रखने की प्रथा कहां से और कैसे प्रारंभ हुई, क्या इसका इतिहास रहा, यह हम देखें । सर्वप्रथम बादशाह अकबर ने जिन शासन सम्राट आचार्य हीर विजयजी को उनके धर्मोपदेश से और अहिंसा प्रधान जिन धर्म से प्रभावित होकर राजकीय सम्मान के रूप में पालकी, स्वर्णदंड वगैरह प्रदान किये थे । आचार्य हीर विजयजी इन सबको स्वीकारना नहीं चाहते थे क्योंकि परिग्रह का सर्वथा त्याग करने वाले और मान अपमान में सम रहने वाले साधुओं के लिए यह सब अनुचित था । लेकिन श्रीसंघ ने बादशाह द्वारा प्रदान किये गये इस सम्मान को ठुकराना उचित नहीं समझा और तब आचार्य भगवंत को अपने आगे-आगे इन राजचिन्हों के लवाज में को चलने देने की स्वीकृति देनी पड़ी । अपवाद कभी-कभी प्रथाओं का रूप धारण कर लेते हैं और वे प्रथाएँ हमेशा नुकसान पहुंचाती रहती हैं । राज सम्मान स्वीकारने की यह प्रथा भी चल पड़ी । आगे चलकर इन राजचिन्हों का स्वयं के लिए उपयोग करने की और पालकी में बैठकर विहार करने की शिथिलता भी दृष्टिगोचर होने लगी । शुद्ध साध्वाचार के प्रति निष्ठा रखने वाले और मोक्ष प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करने वाले शुद्ध संवेगी साधुजनों को यह कभी स्वीकार्य नहीं रहा ।

शुद्ध संवेगी साधुओं और यतिवर्ग के आचार में एक महत्व का अंतर था, उसका

रेखांकन यहाँ आवश्यक है । साधु और यति ये दोनों शब्द वैसे तो पर्यायवाची ही हैं, समानार्थक हैं । लेकिन भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग 1500 वर्षों पश्चात् आचार में भेद हो जाने के कारण संवेगी साधुओं और यतिवर्ग की पहचान अलग-अलग कायम हो गई । संवेगी साधु कंचन कामिनी के सर्वथा त्यागी थे जबकि यतिवर्ग में कंचन का यानी धन का उपयोग होने लगा था, वे द्रव्य रखने लगे थे । यतिगण ब्रह्मचर्य का व अन्य भी सभी व्रतों का पालन करते थे, साधुत्व की सभी क्रियाएँ करते थे परन्तु जो साधु एक कौड़ी जितना अल्प पैसा भी अपने अधिकार में नहीं रख सकते, ऐसे इस महान अपरिग्रह के नियम का उन्होंने त्यागकर दिया था । यह बात अवश्य थी कि जो भी द्रव्य वे अपने पास रखते थे उसका उपयोग धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए करते थे । एक महत्व का कार्य भी वे इस द्रव्य से करते थे । कुछ मुसलमान बादशाह ऐसे भी हुए जो धर्मांध बनकर अन्य धर्ममत पालन करने वालों के धर्म स्थानों को ध्वस्त करने का घृणित कार्य करते थे । इस अनुचित कार्य में अटकाव के लिए और धर्म स्थानों की सुरक्षा निश्चित करने के लिए ये यतिगण क्षत्रिय राजाओं को इस धन से मदद करते थे। इस द्रव्य का हिसाब किताब रखने के लिए यानी कि दफ्तर को सम्हालने के लिए द्रव्य की सार संभाल के लिए किसी योग्य यति को दफ्तरी पद दिया जाता था और यह पद सम्माननीय माना जाता था । स्वादिष्ट मिष्ठान्न सामने रखा हो तब किसी को उसे खाने से रोक पाना जितना कठिन होता है, उतना ही कठिन द्रव्य के प्रलोभनों पर विजय पाना होता है । शिथिलाचार की फिसलन ने यहां भी अपना स्वरूप बतलाया और धर्मार्थ कार्यों के लिए जिस धन का उपयोग होता था, उसका उपयोग यतिगण अपने स्वयं के एशो आराम के लिए भी करने लग गये ।

यति सम्राट श्री पूज्य धरणेन्द्र सूरिजी पर शांति और क्रांति के अग्रदूत मुनिराज रत्नविजयजी के अनेक उपकार थे । ज्ञान दिया, आचार्य पदवी प्राप्त करवाई और राजकीय सम्मान चिन्ह भी उन्हें प्राप्त हुए । मुनिराज रत्नविजय के प्रति श्रीपूज्यजी गद्‌गद् थे, कृतज्ञ थे । अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए अपने विद्यागुरु की प्रतिष्ठा में वृद्धि करने के लिए, विद्वत्ता और सद्‌गुणों का सम्मान करने के लिए वे मुनिराज रत्नविजयजी का सम्मान करना चाहते थे । इसलिए उन्होंने अत्यंत सम्माननीय और महत्वपूर्ण पद, दफ्तरी पद को स्वीकार करने के लिए मुनिराज रत्नविजयजी से आग्रह किया । दफ्तरी पद

यानी धार्मिक प्रधानमंत्री का पद । श्री पूज्यजी के सारे महत्व के कार्यों को करने की सत्ता दफ्तरीजी के हाथों में रहती थी । यतियों को चातुर्मास के आदेश पत्र देना । अन्य भी महत्व के कार्यों के आदेश देना, अपराधी यतिओं को दण्ड देना, उपाध्याय पन्यास आदि पदों का पट्टा लिखना, द्रव्य के आय व्यय का हिसाब किताब रखना ऐसे महत्वपूर्ण कार्यों का अधिकार मुनिराज रत्न विजयजी को सौंपकर दफ्तरी पद के माध्यम से उन्हें सम्मानित करने की श्रीपूज्यजी की भावना थी । मुनिराज रत्नविजयजी यह पद स्वीकार करना नहीं चाहते थे लेकिन श्रीपूज्यजी का अत्यधिक अतिशय आग्रह रहा तब अंततः उन्होंने दफ्तरी पद को स्वीकार कर लिया । शायद इसमें मुनिराज रत्न विजयजी की यह भी भावना रही हो कि श्रीपूज्य देवेन्द्रसूरिजी के गच्छ को जो स्थिरता मिल गई है उसका संचालन कुछ समय और करके उसे पुष्ट कर दूं । महापुरुषों की क्या दूरदृष्टि रहती है, इसे समझ पाना थोड़ा दुष्कर होता है । जो भी हुआ, अच्छा हुआ और इसका अंतिम परिणाम सुखद रहा । तीर अपने लक्ष्य को भेदने से पहले कमान पर कुछ पीछे हटता है, इस पीछे हटने से उसे शक्ति प्राप्त होती है और वह तीव्रगति से अपने लक्ष्य को भेदने में सफल हो जाता है । दफ्तरी पद की कार्यवाही तो सुव्यवस्थित और भ्रष्टाचार रहित चलने लगी । लेकिन दफ्तरीजी के अंतरमन में क्या कार्यवाही चल रही थी, उसे समझने का प्रयास करें ।

यह दफ्तरी पद शुद्ध हृदयी मुनिराज रत्नविजयजी की अंतरात्मा को कचोट रहा था, मथ रहा था । साधुत्व की साधना में तो वह बाधक था ही, स्वाध्याय, ध्यान, तत्वचिंतन आदि महत्व के कार्यों में भी इससे व्यवधान उत्पन्न हो रहा था । उनका अहोनिश यह चिंतन चल रहा था कि कहां तो मैं शुद्ध साध्वाचार का, शुद्ध संयम मार्ग का कट्टर समर्थक और कहां यह दफ्तरी पद और दफ्तरी पद की सारी खटपट/संयम मार्ग पर आरूढ़ होने के पहले अपनी भाभी लीलावती को कहे गये शब्द उन्हें याद आ रहे थे कि शिथिलाचार मुझे न आज पसंद है और न चारित्र लेने के बाद पसंद आयेगा । लेकिन मैं तो शिथिलाचार के चक्रव्यूह के अंदर अपने को फंसा पा रहा हूँ । इस चक्रव्यूह को तोड़ना ही पड़ेगा । मुझे अपनी अशुद्धता तो दूर करना ही है, साथ ही यतिसंस्था का चरित्र, जो कि दिन पर दिन विकृत और दूषित होता दिखाई दे रहा है, यतिवर्ग के वातावरण में अंदर ही अंदर जो शिथिलता का शिकंजा कसता हुआ नजर आ रहा है, उसे भी तोड़ना है । अन्यथा यह यति संस्था अपने ही दोषों के कारण तहस-नहस हो जाएगी, उसकी प्रेरणास्पदना

समाप्त हो जाएगी और धर्म से सामान्य वर्ग, आज जन मानस भी विमुख हो जाएगा।

जिन शासन की भावी भयावह स्थिति की कल्पना उनको कुछ करने के लिए मजबूर कर रही थी। शुद्ध संयम मार्ग के प्रति उनका समर्पण भाव था, इसलिए उनका अंतरमन इन सारी स्थितियों को बदल देने के लिए तड़प रहा था। उनकी अंतर व्यथा को वे ही जानते थे, उसे शब्दों में प्रगट करना कठिन है। शिथिलाचार को मिटा देने का भागीरथ कार्य उनके सामने था और उनका क्रांतिकारी व्यक्तित्व इसमें हार मानने वाला नहीं था। ऐसी सारी परिस्थिति के मध्य उनका पदार्पण विश्वविख्यात तीर्थ राणकपुर में होता है। इस तीर्थ का वातावरण शांतिप्रद, प्राकृतिक रमणीयता से युक्त है तो इस तीर्थ में बिराजित युगादिदेव भगवान आदिनाथ भी शांतिप्रद, आत्मीक रमणीयता से युक्त हैं। मुनिराज रत्नविजयजी को भी अपनी आंतरिक व्यथा में आत्मिक शांति की आवश्यकता थी।

यह कार्य इस पावन तीर्थ की स्पर्शना से हो जाता है। यह महान तीर्थ मुनिराज रत्नविजयजी के किस महान संकल्प का साक्षी बनता है प्रभु आदिनाथ उन पर कैसी दिव्य कृपा बरसाते हैं, यह सब हम देखेंगे। भगवान महावीर का जन्म कल्याणक पर्व चेत्रसुदी तेरस भी राणकपुर तीर्थ पर स्थिरता के दौरान आ जाता है। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथजी और चरम तीर्थंकर महावीर स्वामीजी से मुनिराज रत्नविजयजी को कैसी आत्मशक्ति प्राप्त होती है, यह – क्रमशः।

प्रेरक प्रसंग

राजस्थान की एक लोककथा है। एक मणिहार (चूड़ी बेचने वाला) चूड़ियाँ बेचने के लिए अपनी गधी पर चूड़ियाँ लाद कर आस-पास के गाँवों में घूमा करता था। गधी कभी चलती-चलती अड़ जाती तो वह कहता चल मेरी बहना चल। चल जीजी चल, उसकी इस बात पर लोग हँसते और कहते वाह भाई वाह यह कैसा इंसान है, गधी को भी बहन और जीजी कह रहा है ?

मणिहार हँसने वालों से कहता-मैं इसको गुस्से में डंडा तो बेशक मार सकता हूँ किन्तु गाली और अपशब्द नहीं कह सकता हूँ क्योंकि ऐसी भाषा बोलने से मेरे बोलने की आदत गंदी हो जाती और मेरा सब व्यापार माताओं और बहिनों से चलता है यदि मुझे गाली देने की गंदी आदत पड़ गई तो एक दिन भी मेरा काम और व्यापार नहीं चलेगा। देवी सरस्वती और वागदेवता को प्रसन्न रखने के लिए हमें उपरोक्त प्रसंग में अच्छी शिक्षा मिलती है।

– जसराज देवड़ा धोखा

आचार्य श्री अकलंकजी

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

जैन इतिहास में आचार्य श्री अकलंकजी एक महान प्रभावी आचार्य हुए जिनका समय ई. सन् 720 से 780 तक माना जाता है। उनके पिता का नाम पुरुषोत्तम था जो राष्ट्रकूट वंशीय राजा शुभतुंग के मंत्री थे। उनके छोटे भाई का नाम निकलंक था। एक बार दोनों भाई माता-पिता के साथ आचार्य श्री रविगुप्त जी के दर्शन करने गये एवं ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया।

दोनों भाई जब किशोरावस्था में आए तो माता-पिता ने उनका विवाह करने का निर्णय किया परन्तु अकलंक और निकलंक ने बचपन में अपने गुरु से लिए ब्रह्मचर्य व्रत के संकल्प पर दृढ़ रहते हुए माता-पिता के आग्रह को अस्वीकार कर जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहने का निश्चय किया एवं निरंतर विध्याध्ययन करते रहे। दोनों भाई कुशाग्र बुद्धि के थे अतः अल्पसमय में ही दोनों अनेक विद्याओं और शास्त्रों में पारंगत हो गए।

उस समय बौद्ध न्याय का प्रचलन अधिक था अतः बौद्धों की न्याय एवं तर्कशास्त्र पद्धति के अध्ययन की जिज्ञासा से दोनों भाई अपना धर्म छिपा कर बौद्ध विधापीठ में प्रवेश प्राप्त कर बौद्ध शास्त्रों का अध्ययन करने लगे एवं कुछ ही समय में बौद्ध शास्त्रों में भी पारंगत हो गए। एक दिन विद्यापीठ के आचार्य सभी शिक्षार्थियों को अनेकान्त के खण्डन का पाठ पढ़ा रहे थे तब कुछ त्रुटि रह जाने के कारण आचार्य भी पाठ को समझ नहीं पा रहे थे तो उन्होंने उस दिन वह पाठ पढ़ाना स्थगित कर दिया। दोनों भाइयों ने बौद्धाचार्य के अशुद्ध पाठ को रात्रि के समय शुद्ध कर दिया। प्रातः काल बौद्धाचार्य अध्ययन कक्ष में शुद्ध पाठ को देखकर स्तब्ध रह गये उन्हें विश्वास हो गया कि उनके विद्यार्थियों में कोई जैन विद्यार्थी विद्यापीठ में प्रविष्ट हो गया है अतः उन्होंने जैन विद्यार्थियों को खोज निकालने हेतु अनेक उपाय किये। एक दिन मध्य रात्रि

में जब सब शिक्षार्थी गहरी निद्रा में सो रहे थे उसी समय बौद्धाचार्य ने कांस्यपात्रों से भरा एक बोरा छात्रों के शयनकक्ष में रिक्त स्थान पर गिराया । कांस्यपात्रों के गिरने की कर्णभेदी ध्वनि को सुन सभी शिक्षार्थी जाग गए एवं अपने ऊपर कोई संकट आया हो ऐसा जानकर अपने-अपने इष्ट देव का सस्वर स्मरण करने लगे । उसी समय अकलंक और निकलंक के मुख से भी 'पंच परमेष्ठि नमस्कार महामंत्र' का स्वर गूंजने लगा । तभी वहां खड़े बौद्धाचार्य ने दोनों भाइयों को पकड़कर एकांत कक्ष में बंदी बना दिया ।

रात्रि में दोनों भाई चतुराई से बौद्ध विद्यापीठ क्षेत्र से बाहर आ गए एवं प्राण रक्षार्थ पलायन प्रारंभ किया । प्रातः काल उन्हें प्राणदण्ड देने हेतु राजा के समक्ष ले जाने के लिये कक्ष खोला गया तो उन्हें वहां न पाकर राजा ने उन्हें पकड़ने के लिए अश्वारोही भेजे। विकट वन को पार कर जब दोनों भाई एक सरोवर के पास पहुंचे तब निकलंक ने देखा कि अश्वारोही उनका पीछा करते हुए यहां पहुंच गए तो उसने अकलंक से कहा भैय्या आप सुयोधन के समान श्वास निरोधपूर्वक जलस्तम्भन की यौगिकी क्रिया में निपुण हैं अतः इस विशाल सरोवर में शत्रु आपको नहीं ढूंढ पाएंगे । अतः आप इस सरोवर की जल राशि में छुप जाइये आपको जिनेन्द्र प्रभु की सौगन्ध है । जिनेन्द्र प्रभु एवं जिनशासन की शपथ के पश्चात अकलंक के समक्ष कोई रास्ता नहीं बचा अतः वह दो पर्वतों की टेढ़ी-मेढ़ी जलराशि में समा गया । यह देखकर आश्वस्त हो निकलंक बड़ी तेज गति से भागने लगा । उसे भागता देख उसी समय एक धोबी किसी भयंकर आपत्ति की आशंका से उसके साथ भागने लगा । उनका पीछा कर रहे अश्वारोही पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए तीव्र गति से घोड़े दौड़ाते हुए उनके पास जा पहुंचे और तलवार के एक ही प्रहार से उन दोनों के सिर काट दिये । उन्हें मारकर बौद्ध सैनिक लौट गये । बौद्ध सैनिकों के जाने के बाद अकलंक जलाशय से निकलकर कलिंग के रत्नसंचयपुर नगर में पहुंचे । वहां उन्होंने राजा हिमशीतल की राजसभा में बौद्धाचार्य संघश्री के साथ शास्त्रार्थ किया। छः माह के लम्बे समय से शास्त्रार्थ चलते रहने पर पर भी जय-पराजय का निर्णय नहीं होने पर अकलंक ने रहस्य की आशंका से चक्रेश्वरी देवी का स्मरण किया । देवी ने उन्हें बताया कि 'राजमहल में बौद्धाचार्य नहीं बल्कि उनकी आराध्य देवी तारा पर्दे के पीछे रखे घट में बैठी शास्त्रार्थ कर रही है । कल तुम शास्त्रार्थ में उसके द्वारा कही गई बात को

दोहराने को कहना ।

देवी एक बार कही हुई बात को नहीं दोहराती अतः वह मौन रहेगी एवं बौद्धाचार्य तुम्हारे समक्ष क्षणभर भी नहीं टिक सकेगा।'

दूसरे दिन राजसभा में शास्त्रार्थ प्रारंभ करते हुए अकलंक ने बौद्धाचार्य से कल कही हुई बात को दोहराने को कहा । इस पर अकलंक के कथन का कोई उत्तर नहीं मिला । प्रतिपक्षी को मौन देख अकलंक ने तुरंत यवनिका में प्रवेश किया एवं वहाँ पड़े घट को फोड़ दिया एवं पुनः बौद्धाचार्य संघश्री से प्रश्न किये जिस पर बौद्धाचार्य के होंठ तक नहीं हिले । वह अकलंक को देखता रहा । शास्त्रार्थ के निर्णायकों ने अकलंक को विजयी घोषित कर दिया । जिससे जैन धर्म की सर्वत्र महती प्रभावना हुई । उन्होंने तत्वार्थवार्तिक सभाष्य, अष्टशती, लाघवस्तक सवृत्ति न्याय विनिश्चय सवृत्ति, सिद्धि विनिश्चय आदि ग्रंथों की रचना की ।

संकलन

(मुनि श्री वीररत्न विजयजी म.सा.)

* तीन को पहचनों-माता-पिता, गुरु, भगवान
* तीन को कभी मत भूलो-कर्ज, फर्ज , मर्ज (रोग)
* तीन पर परदा रखो-भोजन, पत्नी, धन
* लक्ष्मी की तीन गति होती है-दान, भोग, नाश
* तीन के लिये तैयार रहो-दुख, मृत्यु, परोपकार
* तीन त्याग करने योग्य है-काम, क्रोध, लोभ
* विवेक के तीन स्तंभ हैं-सत्यता, नम्रता, मधुरता
* तीन चीजें वक्त पर पहचानी जाती हैं- स्त्री, भाई, दोस्ती
* तीन पैसे के संबंधी होते हैं- वैद्य, वकील, वैश्या
* तीन को पैदा होते ही दबा देना चाहिए - रोग, शत्रु, अग्नि
* तीन जगह संतोष रहना चाहिए - भोजन में, धन में, अपनी पत्नी में
* तीन जगह संतोष नहीं रखना - दान में, धर्म में, जप में

बच्चों के जीवन निर्माण में माता-पिता की भूमिका

(साध्वी रूचिदर्शनाश्रीजी)

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वलतम बनाना चाहते हैं। वे चाहते हैं उनका बच्चा हर क्षेत्र में आगे रहे, विनम्र हो, संस्कारवान हो समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाए। बच्चों के जीवन विकास की पृष्ठभूमि में माता-पिता के दायित्व से इंकार नहीं किया जा सकता है। बालक के जीवन के समुचित विकास हेतु माता-पिता का संरक्षण एवं उचित देखभाल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बच्चों के जीवन निर्माण के प्रति माता-पिता की जितनी अधिक जागरूकता रहती है उतना ही बालक का जीवन चारित्रनिष्ठ, विनीत एवं सुसंस्कृत होता है। इस आधार पर अभिभावक को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। कुछ माता-पिता बच्चों के जीवन निर्माण के प्रति सुषुप्त चेतना वाले होते हैं। बच्चे की गतिविधियों पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं। बच्चे पढ़ाई में रुचि लेते हैं या नहीं। किनके साथ उठते-बैठते हैं। कार्य करने का तौर-तरीका क्या है। इन सबके प्रति लापरवाह होते हैं। कई बार देखा जाता है कि माँ अपने किचन तथा पिता अपने ऑफिस या बिजनेस में इतने व्यस्त रहते हैं कि वे बालक के जीवन निर्माण के प्रति पूर्ण सजग एवं जागरूक नहीं हो पाते हैं। माँ अपने बच्चे को पौष्टिक भोजन देकर एवं पिता सुविधा के समस्त साधन उपलब्ध करके अपने दायित्व से इतिश्री मान लेते हैं।

उचित स्नेह एवं संरक्षण के अभाव में

बच्चा अनेक विकृतियों से घिर जाता है। ऐसा बालक मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता है। अपने मार्ग से भटक जाता है और कभी-कभी गलत आदतों का शिकार बन जाता है।

कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो बच्चों के जीवन निर्माण के प्रति जागरूक तो होते हैं किन्तु वे बालमन से अनभिज्ञ होते हैं। बच्चों के जीवन में उनका अत्यधिक हस्तक्षेप होता है। बच्चों को क्या खाना, कब खाना, कितना खाना, क्या पहनना, क्या खेलना, कब खेलना, कब सोना, कितना सोना, कब पढ़ना, संतान संबंधी प्रत्येक निर्णय माता-पिता ही लेते हैं। इससे बालक की स्वतंत्रता छिन जाती है। ये सब बालक के हित में होते हुए भी बालक की विकास की प्रक्रिया के अवरूद्ध करते है। बालक अपने कार्य में निरुत्साही बन जाता है। जैसे पौधे को अधिक जल और खाद मिलने पर वह मुरझा जाता है। अंतिम श्रेणी के माता-पिता प्रबुद्ध होते हैं। जो बच्चों के जीवन-निर्माण के प्रति जागरूक होने के साथ-साथ बाल मन का भी समग्र रूप से चिंतन करते हैं। वे बच्चों की उचित देख-रेख के साथ ही उनकी भावनाओं को भी समझने का प्रयत्न करते हैं। उनके विकास हेतु मित्र की तरह सहयोगी बनते हैं। ऐसे बालक जीवन में उच्चता को प्राप्त करते हैं।

बच्चों के जीवन निर्माण का कार्य उनके गर्भकाल से ही प्रारंभ हो जाता है। गर्भस्थ शिशु की ग्रहणशीलता प्रखर होती है। वह बाहर की बातें सीख जाता है। हम इतिहास के पन्ने पलटाकर देखे अर्जुन पुत्र अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में प्रवेश करने की विधि सुभद्रा के गर्भ में ही सीखी थी। माता के आचार-विचार एवं बाहरी वातावरण से गर्भस्थ शिशु का मानस बहुत प्रभावित होता है। हम प्रतिवर्ष कल्पसूत्र का श्रवण करते हैं जिसमें बताया गया है कि परमात्मा महावीर की माता त्रिशलारानी गर्भकाल में बहुत ही सावधानी पूर्वक जीवन व्यतीत करती है। अतः बच्चे को सुसंस्कारों से सज्जित करने के लिए गर्भकाल से ही माता को जागरूक रहना चाहिए। गर्भकाल के दौरान माता को अपने प्रत्येक कार्य के प्रति संयत रहना नितान्त आवश्यक है। माता की सम्पूर्ण दिनचर्या संतुलित हो। खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, बोलना, हंसना सभी क्रियाएँ संयमपूर्वक होना चाहिए। माता सद्भावों से भावित होकर घर के सभी सदस्यों के साथ सदव्यवहार करे, सद्साहित्य का वाचन करें। सदा उल्लासमय तथा प्रफुल्लित वातावरण में प्रसन्न रहने वाली माताएं अपनी संतान पर

सकारात्मक प्रभाव डालती है । इसके विपरीत कलह क्लेश करने वाली व्यग्र - व्याकुल रहने वाली माताएं अपनी संतान के प्रति अन्याय करती हैं।

प्रत्येक माता-पिता के सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह अपने बच्चों को संस्कार कैसे दें । माता-पिता का यह सपना होता है कि उनका बच्चा विवेक युक्त, विनीत, अनुशासित, कर्त्तव्यनिष्ठ, आज्ञाकारी एवं आध्यात्मिक हो । इसलिए माता-पिता हर समय बच्चों को शिक्षा देने का प्रयत्न करते रहते हैं । किन्तु हमेशा टक-टक करने की अपेक्षा टकोर करना चाहिए क्योंकि, बार-बार कहने से बच्चा आपकी उपेक्षा करेगा टकोर करना यानि मौका देखकर किसी बात को कहना । संस्कार कोई दवाई तो है नहीं जिसे जबरन बच्चों का मुंह खोलकर डाल दें । वास्तव में संस्कार कोई वस्तु नहीं है जो हम दे सकें उसमें देने जैसा कुछ भी नहीं है । घर के भीतर एवं बाहर बच्चों को जो वातावरण एवं परिवेश मिलता है उससे बच्चा संस्कारित होता है । घर में बड़ों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार घर में माता-पिता तथा घर के अन्य सदस्यों के परस्पर व्यवहार से बच्चों का मानस संस्कारित होता है । अभिभावक जिस कार्य को स्वयं करते हैं उस कार्य के लिए बच्चों को यदि मना करते हैं तो बच्चों पर इसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा । जैसे यदि हम क्रोध करते हैं तो बच्चों में क्रोध करने के संस्कार आ जाते हैं । चाहे हम बच्चों को क्रोध न करने के लिए मना करते रहें । बच्चे हमारे कथन की अपेक्षा हमारे आचरण से अधिक प्रभावित होते हैं कथन स्थूल मन तक ही जाता है जबकि आचरण अन्तर्मन को छूता है । इसलिए बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए हमें अपने आचरण को उदात्त बनाना चाहिए । व्यवहारिक शिक्षण के साथ ही बच्चों में धार्मिक शिक्षण एवं संस्कार बहुत आवश्यक हैं । भगवान की पूजा, गुरुवंदन, छोटे-छोटे नियम, तप आदि के द्वारा बालक का मन प्रभावित होता है । महापुरुषों के जीवन चरित्र, प्रेरणाप्रद कथानक आदि के द्वारा बच्चों का मन शुभ भावों से संस्कारित होता है ।

आधुनिक विकास के परिवेश में जीने वाले माता-पिता चाहते हैं कि उनकी संतान युग की अपेक्षाओं के अनुरूप उन्नति हासिल करें । वह सफलता की समस्त ऊँचाइयाँ प्राप्त करें । इसलिए माता-पिता बच्चे को अच्छे से अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाने को प्राथमिकता देते हैं । यह आवश्यक भी है किन्तु बच्चों को घण्टों

स्कूल में बैठना तथा अत्यधिक पढ़ाई का बोझ अच्छा नहीं लगता है । बच्चा घर आकर आपसे वात्सल्यपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा रखता है । अभिभावक बच्चे को प्रतिस्पर्धा की दौड़ में हमेशा आगे देखना चाहते हैं । अतः घर आने पर भी बच्चे को पढ़ाई के लिए बाधित किया जाता है । बच्चों की स्वाभाविक रुचि और क्षमता का आंकलन किये बिना ही बच्चों से अनेक अपेक्षाएं करना तथा उसके अनुरूप ढालने के लिए दबाव डालना अनुचित है । बच्चों के विकास के लिए वात्सल्य की खुराक अनिवार्य है ।

बच्चों के जीवन-निर्माण में माता-पिता की भूमिका एक कुम्भकार के तुल्य होती है। जैसे कुम्भकार घड़े का निर्माण करता है तब घड़े को ऊपर से थाप देता है और अंदर से कोमल हाथ से सहेजता है । वैसे ही जीवन-निर्माता अभिभावक अन्तः स्थल में स्नेह का श्रोत बहने पर भी बच्चों द्वारा गलत दिशा में कदम उठाने पर वे कड़ा रुख भी अपनाते हैं । माता-पिता को बच्चों की गलतियों के लिए कभी भी मौन धारण नहीं करना चाहिए उन्हें अनुशासित भी करना चाहिए । उन्हें सही और गलत आचरण से होने वाली लाभ-हानियों का ज्ञान करावें ।

बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह अनेक संभावनाओं के भंडार होते हैं हम उसे जैसा चाहें वैसा आकार दे सकते हैं । आज का बच्चा कल समाज, संघ और राष्ट्र का भविष्य होगा बच्चा केवल अपने परिवार की परिधि तक सीमित न रहे । वह पूरे समाज का हो , पूरे राष्ट्र का हो । व्यवहारिक धार्मिक शिक्षण के साथ-साथ उसमें समाज के लोगों के प्रति निष्ठा भाव भी हो अभिभावक ऐसा शुभ प्रयत्न करें ।

सामायिक के आठ भेद

समभाव सामायिक, सम सामायिक, समवाद सामायिक, समास सामायिक, संक्षेप सामायिक, अनवद्य सामायिक, परिज्ञा सामायिक, प्रत्याख्यान सामायिक

आठ सिद्धि के नाम

1. अणिमा सिद्धि 2. महिमा सिद्धि 3. लघिमा सिद्धि 4. गरिमा सिद्धि 5. प्राप्ति सिद्धि 6. प्राकाम्य सिद्धि 7. ईशिता सिद्धि 8. वशिता सिद्धि (वशित्व)

धर्म की भूल-भूलैया

श्री विमलकुमार चोरड़िया (भानपुरा, म.प्र.)

अनादि काल से विश्व में, मनुष्य किस प्रकार सुखी रहे, उसका तन, मन, परिवार, समाज, नगर, राष्ट्र, विश्व सुखी हो, सर्वत्र शान्ति हो तथा यदि मरने के बाद जीव का कोई भविष्य हो तो वह उज्ज्वल हो, अच्छा हो, यदि मोक्ष है और वह मिल सके आदि विषयों पर बुद्धिमान मनीषियों ने चिन्तन मनन किया, कर रहे हैं । इसके बारे में चिन्तन मनन, अनुभव करके देश, काल, क्षेत्र, जीव का स्वभाव, परिस्थिति ... आदि को ध्यान में रखकर कई सिद्धान्त बनाये । उन सिद्धान्तों को जिन-जिन व्यक्तियों ने, समुदायों ने माना, वे उनके धर्म बन गये ।

इन धर्मों के सिद्धान्त बनाने वालों में जो कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ), राग-द्वेष रहित थे अथवा यों कहा जाय कि जो वीतरागी थे, उनने ऐसे सिद्धान्त प्ररूपित किये जो वस्तुस्थिति में मनुष्य का इहलोक और परलोक दोनों सुधार सकते हैं । किन्तु जो क्रोध, मान, माया, लोभ आदि दुर्गुणों से ग्रसित थे, उनने ऐसे सिद्धान्त बनाये अथवा वीतरागियों द्वारा प्ररूपित सिद्धान्तों को ऐसे तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया, जिनने धर्म का रूप ले लिया । उसके कारण विश्व विभक्त हो गया । अपने-अपने सिद्धान्तों के लिए, जो उनके धर्म थे, एक दूसरे को मरने मारने लगे । यही कारण है कि अनादि काल से धर्म के नाम पर कई लड़ाईयाँ लड़ी गईं और लड़ी जा रही हैं । धर्म के नाम पर व्यक्तियों में ऐसा उन्माद, जुनून पैदा हो जाता है कि मानवता भूलकर, सुखी रहने और सुखी रखने की बात को भुलाकर, दानवता का ताण्डव करते हैं । आश्चर्य तो यह है कि एक ही ईष्ट को मानने वाले, एक ही ईष्ट के सिद्धान्तों का पालन करना कहने वाले, अपने को धार्मिक कहने वाले व्यक्ति, समुदाय, संगठन, धर्म के अर्थ को अपने-अपने ढंग से लगाकर एक- दूसरे को मार रहे हैं, मर रहे हैं । चाहे ईसाई धर्म के कैथोलिक-प्रोटस्टेन्ट हों, चाहे इस्लाम के शिया-सुन्नी हों, चाहे बुद्ध धर्म के महायान-हीनयान हों, चाहे जैन धर्म के श्वेताम्बर - दिगम्बर हों, चाहे हिन्दू धर्म के अनेकानेक पंथावलम्बी हों तथा इन धर्मों के और भी अनेक भेद-उपभेद वाले हों, इसी प्रकार देश भक्ति के धर्म का मुखौटा पहनकर, देश भक्ति के नाम पर, राष्ट्र सेवा

के नाम पर , समाज का हित करने के नाम पर, येन-केन प्रकारेण, नैतिक-अनैतिक लाभ उठाने के लिए, सत्ता प्राप्ति के लिए, अपनी लोकेषणा पूरी करने के लिए इतने उन्मादी हो जाते हैं कि एक-दूसरे को मारने लगते हैं ।

आज विश्व के सामने आतंकवाद की समस्या है, इस समस्या का मूल धार्मिक उन्माद, धार्मिक जुनून है । इसी प्रकार भिन्न-भिन्न कथित धर्मों में भी उपासना पद्धति के इतने भेद - प्रभेद हो गये, भिन्न-भिन्न महानुभावों ने उपासना की इतनी क्रियाएँ, पद्धतियाँ बता दी कि उनकी भूल-भूलैया में, जीवन का मूल लक्ष्य क्या है, वह गुम हो गया है ।

उन पर भी वही कथित धर्म को करते रहने आदि का जुनून, उन्माद चढ़ जाता है और वे भी आन्तरिक सुख से दूर चले जाते हैं । जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति तनाव ग्रस्त रहता है, उसकी शान्ति छिन जाती है । आज की स्थिति में देखा जा रहा है कि अपवाद छोड़कर धर्म की बागडोर पाखण्डियों के हाथ में चली गई हैं, धर्म व्यापार बनता जा रहा है और पाखण्ड और व्यावसायिक वृत्ति ने ही धर्म में बहुत भूल-भूलैया बढ़ा दी है ।

इसके फलस्वरूप आज का धार्मिक जीवन अधिकांश में दांभिकतापूर्ण, प्रदर्शनवाला, माया मृथावाद से ग्रसित, बैर विरोध की आग से संतप्त हैं । मनुष्यों की आँखों में विष है, जीभ में कड़ुआपन है, मस्तिष्क में स्वार्थ साधकता है, उपदेश में हठाग्रह है और लालसाओं से भरा हुआ हृदय है ।

इसीलिए भिन्न -भिन्न समुदाय व संगठनों के प्रमुख, राज्याध्यक्ष, सत्ताधीश, वक्ता, पंडित, आचार्य, उपाध्याय, श्रीमन्त, नेता आदि में परस्पर एक-दूसरे के साथ मैत्री भाव दिखावा है, किन्तु हृदय में द्वेष भरा हुआ है । आज मानव-मानव का शत्रु बन गया है । एक जाति दूसरी जाति की विरोधी है । एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को समूल नष्ट करने में प्रयत्नशील है

---

1. प्रशस्ति छोड़ो, प्रस्तुति करो, प्रतिफल की प्रतिक्षा छोड़ो, अनुशासन का पालन करो ।
2. साधक बनो बाधक नहीं, सरल बनो पर भोले नहीं ।
3. उदार बनो पर उड़ाऊ नहीं, उत्साही बनो पर उतावले नहीं ।
4. प्रेमी बनो पर पागल नहीं, न्यायी बनो पर निर्दयी नहीं ।

धर्म और विकृत धर्म के फल निम्नलिखित हैं

क्र.	धर्म	सम्प्रदाय
1.	सदाचारी , सद्विचारी, गुण रागी, गुण वृद्धि का हेतु और अच्छे चारित्र का विकास कराता है ।	गुटबाज , व्यसनी, चारित्र हीन, चारित्र के प्रति प्रयत्नहीन विधि-विधानों को पकड़े रहने वाला बनाता है ।
2.	नम्र बनाता है ।	मिथ्याभिमानी, अहंकारी बनाता है ।
3.	कषाय मुक्त करता है	कषायी बनाता है ।
4.	समाज के भेदभाव मिटाता है ।	समाज में भेदभाव बढ़ाता है ।
5.	बन्धनों से मुक्त कराता है ।	बन्धनों में फँसाता है ।
6.	स्वर्ग सुख, मोक्ष सुख दिलाता है ।	तिर्यच्चयोनी, नरकदुःख दिलाता है ।
7.	अमृततुल्य है.. आदि ।	विष तुल्य है ... आदि

अतः विवेकी व्यक्ति को धर्म की भूल-भूलैया से अपने को निकालकर जो धर्म के सिद्धान्त इहलोक में तथा वर्तमान में सुखी बनावें तथा परलोक सुधारने वाले हों तथा अव्याबाध सुख के दिलाने वाले हों (मोक्ष) उनको जानकर, मानकर आचरित करने का प्रयत्न करना श्रेयस्कर है ।

सीख

- संत न बन सके तो, शान्त अवश्य बनें ।
- योगी न बन सके तो, उपयोगी अवश्य बनें ।
- महान न बन सके तो, नेक इंसान अवश्य बनें ।
- मीठा बोलो, नम के चलो, सबसे करो स्नेह ।
- कितरा दिन रो जीवाणों, कितरा दिन री देह ।
- धैर्य धरे, धीरज रखे, समझे धर्म का अर्थ ।
- प्रमाद छोड़ पुरूषार्थ करें, जीवन न जावे व्यर्थ ।
- चिंता छोड़ो चिंतन करो, ममता छोड़ो मनन करो ।
- व्यथा छोड़ो व्यवस्था करो, व्याख्या छोड़ो अंतः करण का विस्तार करो ।

वीतरागता की अद्भूत महिमा वाले चौंतीस अतिशयधारी जिनेन्द्र

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

तीर्थंकर की महिमा भारी, चौंतीस अतिशय के हैं धारी ।
आठ माह प्रतिहार्य से शोभे, कीर्तन की नहीं शक्ति हमारी ।।

जिनेन्द्र जन्म से ही तीर्थंकर प्रकृति के उदय से दस अतिशय लिये उत्पन्न होते हैं । पसीना रहित शरीर, नीहार (मल,मूत्र, कफ आदि) से रहित, शरीर में दुर्गन्धवर्ण श्वेत रूधिर, समचतुरस्त्र संस्थान, वज्रवृषभनाराच सांहनन, अद्भुत अप्रमाण शरीर का रूप सौंदर्य, महागन्ध युक्त शरीर, अप्रमाण बल, एक हजार आठ लक्षण, प्रियहित मधुर वचन - ये सभी पूर्व जन्म में सोलह कारण भावना भाने से उसी के प्रभाव से हैं । वे इन्द्र द्वारा अपने अंगूठे में रखा हुआ अमृत पान करते हैं। माता के स्तन वाले दूध का पान नहीं करते। पृथ्वी का भोजन, आभरण, वस्त्रादि अंगीकार नहीं करते, स्वर्ग से आये हुओं को ही भोगते हैं ।

केवल ज्ञान होने के पश्चात् दसअतिशय प्रकट होते हैं-चारों तरफ सौ-सौ योजन सुभिक्षता, समस्तजनों से मैत्री भाव, आकाश में गमन, भूमि का स्पर्श नहीं, उनसे प्राणी का घात नहीं, उपसर्ग का अभाव चार मुखों की दिखना, समस्त विद्याओं का ईश्वरपना, छाया रहितपना, नैत्रों के पलक न छपकना, नखकेश नहीं बढ़ना । ये दस अतिशय घातिया कर्मों का नाश होने से स्वयं प्रकट होते हैं ।

तीर्थंकर प्रकृति के प्रभाव से देवों द्वारा चौदह अतिशय होते हैं - अर्द्धमागधी भाषा, समस्त ऋतुओं के फल-फूल-पत्तों सहित वृक्षों का होना, पृथ्वी का तृण कंटक-रज रहित दर्पण समान रत्नमयी हो जाना, शीतल-मंद-सुगंध पवन का चलना, सभी जीवों द्वारा आनंद प्रकट करना, अनुकूल पवन चलना, सुगंधित जल वृष्टि से भूमि का धूल रहित होना, जहाँ-जहाँ चरण रखते वहाँ-वहाँ सात आगे, सात पीछे, सात दायें और सात बायें तथा एक बीच में ऐसे पंद्रह-पंद्रह कमलों की पंद्रह पंक्तियों में कुल दो सौ पच्चीस कमलों की देव रचना करते हैं । आकाश निर्मल हो जाता है । चारों तरफ दिशायें निर्मल हो जाती हैं ।

चारों निकाय के देव जय-जयकार शब्द बोलते हैं । धर्मचक्र एक हजार किरणों की आरा सहित अपने प्रकाश से सूर्य मण्डल का तिरस्कार करता हुआ आगे-आगे चलता है और अष्ट मंगल द्रव्य भी होता है । इस तरह...

दस अतिशय जन्म से पावे चौदह देव समूह प्रकटावे ।
केवल के संग दस अतिशय, तीर्थंकर को शीश नमावे ।।

युवा वर्ग को धार्मिक भी बनायें

(श्रीमती उषा पाटनी)

कलुषित आत्मघाती भावनाएं,
मनुज के मानस पटल पर छा गई ।
विषय भोगों से प्रदषित कामनाएं,
मन में क्यों हमारे आ गई ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं और मानते भी हैं कि युवक ही चेतन राष्ट्र है, युवक जाग्रत होने पर ही किसी देश, राष्ट्र, समाज या जाति की उन्नति संभव है । परन्तु आधुनिकता व पाश्चात्यीकरण की चकाचौंध में आज की युवा पीढ़ी धर्म से विमुख होकर दिग्भ्रमित हो रही है । चांद की ऊँचाईयों को छूनेवाली आज की युवा पीढ़ी भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार के भयावह भंवर में फंसती चली जा रही है । संस्कार व सभ्यता से रहित आज की युवा पीढ़ी फैशन व फिल्मों के चक्कर में पड़कर धर्म की वाणी को भूलकर पैसों की पुजारी हो गई है । आज की युवतियों में हमें सती सीता, अंजनबाला, द्रौपदी के दर्शन नहीं मिलते, वे तो सूर्पणखा बनकर गलत राह पर चलने लगी हैं । अपने आपको प्रभावशाली दिखाने के लिए आज की युवा पीढ़ी उचित-अनुचित का विचार न करके अभक्ष का सेवन तक करने से नहीं हिचकती हैं । सच्चाई अर्थहीन हो रही है, लूट-पाट, आगजनी, राहजनी, अपहरण, मारकाट आम बात हो गई । आज मनुष्यों की अपार भीड़ में धर्म कहीं खो गया है, आचरण विलुप्त हो गया है, नैतिकता नष्ट हो गई है तथा क्षण-प्रतिक्षण मानव अज्ञान रूपी अंधकार में प्रवेश करता चला जा रहा है । ये ही सब कारण हैं जिनके कारण आज की युवा पीढ़ी समाज व देश के लिए चिंता का विषय बन गई है ।

'आज देश का भूतकाल सोया हुआ है, वर्तमान पतन के गर्भ में है तथा भविष्य भौतिक वृद्धि के सुनहरे स्वप्न देख रहा है।'

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस युवा पीढ़ी के बल पर हम बलशाली समाज व राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं वही युवा पीढ़ी आज धर्म से विमुख होकर स्वयं का नैतिक पतन करने के साथ ही देश को भी

रसातल में ले जा रही है । तब प्रश्न यह उठता है कि युवा पीढ़ी धर्म से विमुख क्यों हो रही है ?

युवा पीढ़ी के धर्म से विमुख होने के कारण

संस्कारों का अभाव :- नींव के अभाव में जिस प्रकार गगनचुम्बी अट्टालिकाएं नहीं खड़ी की जा सकती उसी प्रकार संस्कार के अभाव में नैतिकता व मानवता का महल खड़ा नहीं किया जा सकता । कहा भी गया है- 'बच्चे अनछपी किताब के छपने जा रहे पृष्ठ हैं, उन पर क्या छापना है यह अभिभावक को देखना है, बच्चे अनछपे वस्त्र हैं उन पर कैसा रंग व डिजाईन करना है, यह समाज को देखना है ।'

महंगाई के इस युग में आधुनिक एवं पाश्चात्यीकरण की इस दौड़ में आज अभिभावक स्वयं अपने कर्त्तव्य से विमुख हो गये हैं । आज उनके पास जब अपने बालकों के साथ बातचीत करने का समय नहीं है तो वे उन्हें क्या संस्कार देंगे ? माता-पिता को इस बात की चिंता नहीं है कि उनका बच्चा बड़ों का आदर नहीं करता, वह झूठ बोलता है, उसे णमोकार मंत्र के 5 शब्द भी याद नहीं हैं, मंदिर क्या है और भगवान कैसे होते हैं इसका उसे ज्ञान तक नहीं है । आप उनसे फिल्म, नेता या हीरो-हिरोईन के बारे में पूछो तो उन्हें वह सब याद रहेगा । परन्तु 24 तीर्थंकर के नाम उन्हें याद नहीं हैं, इसका क्या कारण है ? यदि हम गौर करें तो हम पाते हैं कि घर-घर में टी.वी. का प्रकोप है तथा माता-पिता उन्हें अपने साथ पिकनिक, सैर-सपाटे व फिल्म दिखाने तो ले जाते हैं परन्तु मंदिर ले जाने या धर्मशिक्षा दिलाने के लिए उनके पास समय नहीं है । जब बालक अपने माता-पिता को ही धर्म विरुद्ध आचरण करते पाता है तो वह बालक धर्म के प्रति आस्थावान कैसे बन सकेगा । कहने का तात्पर्य यह है कि बिना साफ की गई भूमि में जिस प्रकार बीज फलीभूत नहीं होता उसी प्रकार यह जीवित शरीर विधिपूर्वक संस्कारों के बिना संयम, व्रत और शुभाचरण का पालन नहीं कर सकता । यही कारण है कि संस्कारों से रहित युवा पीढ़ी धर्म के मर्म को जान नहीं पाती और धर्म को मजाक बना बैठी है ।

सत्संगति का अभाव - 'A man is known by his company' अर्थात एक मनुष्य उसकी संगति के माध्यम से जाना जाता है । कबीरदासजी ने सत्संगति के महत्व को निरूपित रखते हुए कहा है- **'कबीरा संगत साधु की करे सो ज्ञानी होय'** । आज की युवा पीढ़ी की धर्म के प्रति अनास्था होने का प्रमुख कारण

सत्संगति का अभाव है । अपने पड़ोसी मित्र, विद्यालयीन मित्र व अपने सम व्यवसायी मित्रों के संपर्क में आकर आज का युवक धार्मिक आचरण खो बैठा है । वह अपने मित्रों में अपने को ऊंचा साबित करने के लिए उचित-अनुचित का भेद भुलाकर दुर्गति की ओर अग्रसर हो रहा है । जैसा कि हमने रामायण में अनुभव किया कि मंथरा दासी की कुसंगति में रहकर धर्म न्यायप्रिया महारानी कैकई भी कुबुद्धि वाली बन गई । स्पष्ट है कि सत्संगति का अभाव धर्म में अनास्था का प्रमुख कारण है।

धर्म का राजनीतिकरण - धर्म में राजनीति का प्रवेश हो गया है । अलग-अलग संप्रदाय व पंथ का निर्माण करके समाज में मनमुटाव है और सभी संप्रदाय व पंथवाले अपने आपको श्रेष्ठ बताने में लगे हुए हैं । ऐसे में हमारी युवा पीढ़ी निश्चित नहीं कर पाती कि कौनसा मार्ग व कौनसा व्यक्ति सही है अतः वह दूसरे मार्ग की ओर आकृष्ट होने लगता है, उसकी अपने धर्म से आस्था हट जाती है । आज हमारे धर्म गुरु भी हमें धार्मिक या संस्कारवान बनाने के बजाय धर्मभीरू बना रहे हैं । वे हमें उपदेश देने के स्थान पर दिशाभ्रमित कर रहे हैं ।

सतसाहित्य का अभाव - युवा पीढ़ी में धर्म के प्रति विमुखता होने का एक अन्य कारण है सत्साहित्य का अभाव । 'साहित्य समाज का दर्पण है' परन्तु आज हमारे यहां साहित्य का अभाव है, उनकी प्राप्ति दुर्लभ है । फलतः युवा पीढ़ी अध्ययन, अध्यापन के अभाव में सद्विचारों से अवगत नहीं हो पाती और वह धर्म से दूर होती चली जा रही है ।

धार्मिक पाठशालाओं का अभाव - नैतिक संस्कारों की केन्द्र बिन्दु धार्मिक पाठशालाओं का लोप हो गया है तथा माता-पिता भी अपने बच्चों को पाठशाला भेजने में रुचि नहीं दिखाते हैं । इस कारण जहां विद्यालयों में जगह खाली नहीं है वहीं पाठशालाओं में जाने वाला कोई नहीं है और जब धार्मिक शिक्षा ही न मिले तो धर्म के प्रति आकृष्ट होने की आशा व्यर्थ है ।

विद्यालयीन शिक्षा व वातावरण - संस्कारों की प्रतिमूर्ति विद्यालय, शिक्षा के मंदिर शिक्षा का मखौल उड़ा रहे हैं । आज का शिक्षक विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक या चरित्रवान बनाने में सहयोग नहीं देता बल्कि पैसों की खनखनाहट के बीच उसका स्वयं का चरित्र अधोन्मुख हो गया है। विद्यालयीन वातावरण सौहार्दपूर्ण नहीं रहा बल्कि प्रतियोगिता की भावना ने युवा पीढ़ी को 'येन केन प्रकारेण' विजयी होना सिखा दिया है । विद्यालयीन शिक्षा भौतिकवादी एवं आत्मकेन्द्रित हो गई है । यही कारण है कि दया, ममता, प्रेम से युवा पीढ़ी विलग होती जा रही है ।

बालकों व नवयुवकों को धर्म मार्ग पर लगाना अत्यंत कठिन हो गया है । उनका जीवन आचरणवान और आदर्शमय नहीं बन पा रहा है । क्योंकि सत्संगति का मिलना अत्यंत कठिन हो गया है । सत्संगति के बिना जीवन उज्ज्वल नहीं बन सकता है । युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे पग-पग पर विवेक रखें व संयमित जीवन जीयें । माता-पिता का भी कर्त्तव्य बनता है कि वे धार्मिक संस्कार देने के लिए अपने बालकों की दैनिक चर्या पर ध्यान दें । उन्हें एक घंटा धार्मिक उत्सव पर सभी सहर्ष सम्मिलित हो, समाज का बुजुर्ग वर्ग युवकों के हाथों में निर्माणात्मक कार्यों की बागडोर सौंपे क्योंकि युवकों में अदम्य शक्ति व साहस होता है ।

यदि उनकी शक्ति का समाज व धर्म के रचनात्मक कार्यों में उपयोग नहीं लिया जायेगा तो वे अपनी शक्ति का दुरूपयोग कर कभी उग्रवादी तो कभी आतंकवादी, कभी लिट्टे तो कभी नक्सलवादी संस्थाओं के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते रहेंगे । अतः बच्चों की उचित देखभाल करें, युवकों को अच्छा वातावरण दें तभी उनमें धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न हो सकेगी ।

आठ गुण (सिद्ध के)

1. अनंत ज्ञान 2. अनंत दर्शन 3. अनंत चारित्र 4. अनंत वीर्य 5. अव्याबाध सुख 6. अक्षयस्थिति 7. अरूपीपना 8. अगुरुलघुपना ।

आठ मद

1. जातिमद 2. कुलमद 3. बलमद 4. ऐश्वर्यमद 5. श्रुतमद 6. लाभमद 7. तपमद 8. रूपमद

वर्गणा के आठ प्रकार

1. औदारिक वर्गणा 2. वैक्रिय वर्गणा, 3. आहारक वर्गणा, 4. तैजस वर्गणा, 5. भाषा वर्गणा, 6. श्वासोच्छवास वर्गणा, 7. मनोवर्गणा, 8. कार्मण वर्गणा

आठ कर्म

1. ज्ञानावरणीय कर्म 2. दर्शनावरणीय कर्म 3. वेदनीय कर्म 4. मोहनीय कर्म 5. आयु कर्म 6. नाम कर्म 7. गोत्र कर्म 8. अन्तराय कर्म

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का नाम	-	मिले हैं हमें जयन्तसेन गुरु
रचना	-	मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा., सहयोगी - मुनिराजश्री तारकरत्नविजयजी म.सा.
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान	-	श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद श्री राजेन्द्र - जयन्तसेन म्युजियम, मोहनखेड़ा
मुद्रक	-	नेटवर्क प्रकाशन, मुंबई, कुल पृष्ठ-76 (कव्हर सहित) छपाई-सफाई-अच्छी, भाषा-हिन्दी

भक्तिरस से आप्लावित भक्त अपने भावों को निर्मलतम स्तर तक ले जाकर अपनी वाणी से सराबोर होते हुए समर्पित होता है । यही उसकी अपने गुरु के प्रति सच्ची भक्ति है। मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा. ने पचास गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को इस पुस्तक के माध्यम से शब्द दिये हैं । ऐसे शब्द जो गुरु के प्रत्येक जीवन पहलु को व्यक्त कर उनसे गौरवान्वित हुआ जाता है । रचयिता ने अपने गुरु जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अपनी अनन्य भक्ति के रूप में इन गीतों को भेंट किया है । ये गीत गाये जाने योग्य हैं । मुनिराजश्री का प्रयास सराहनीय है ।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

पुस्तक का नाम	-	संलेखना मरण कला है, आत्महत्या नहीं
शुभाशीर्वाद	-	युग प्रभावक, गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर'
प्रेरक	-	वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.
लेखक	-	मुनिश्री संयमरत्न विजयजी 'प्रवासी'
प्रकाशक	-	प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.) 465001

ISBN - NO - 978-81-910801-5-5

पृष्ठ -		56, सिंगल कलर (चित्र सहित), वि.सं. 2072
मूल्य	-	50 रु./डिस्काउंट 50 प्रतिशत (25 रुपए)
प्रप्ति स्थान	-	नितेश नाहटा (नाहटा प्रकाशन) देवास गेट, उज्जैन (म.प्र.) मो. 9826786223

प्रस्तुत प्रमाणित पुस्तक में संथारा (संलेखना) के विषय पर प्रकाश डाला गया है। अज्ञानी जन जिस संथारे को आत्महत्या मान रहे हैं, वह वास्तव में आत्महत्या नहीं, अपितु समाधिमरण है। प्रस्तुत पुस्तक का अध्ययन करने से, हमें संथारा क्यों लेना ? कब लेना ? किस विधि से लेना ? संथारा लेने के पीछे हमारा क्या उद्देश्य है ? इन समस्त प्रश्नों का समाधान प्राप्त होता है। आगमों एवं अभिधान राजेन्द्र कोष के प्रमाण इस पुस्तक में दिये गये हैं। डॉ. सागरमलजी जैन द्वारा निरीक्षण करके इस पुस्तक को प्रमाणित घोषित किया गया है।

संथारे (संलेखना) के विषय में हमें सरलता से ज्ञान प्राप्त हो सके, इस उद्देश्य से पूज्य मुनिश्री ने कथा एवं गीतों का समावेश भी प्रस्तुत पुस्तक में किया है।

वास्तव में यह पुस्तक घर-घर में बसाने योग्य है। सामान्यजन जिस संथारे को आत्महत्या कह रहे हैं, वह समाधिमरण है। संथारे के विषय में जो संशय फैल रहा है, उसे समाप्त करने के लिये यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

अतः प्रत्येक पाठकगण प्रस्तुत पुस्तक को आधी कीमत में प्राप्ति स्थान से प्राप्त कर सकते हैं। अधिक से अधिक इस पुस्तक का प्रचार-प्रसार करके जनभ्रांतियों को दूर करने का प्रयास करें।

समीक्षक - जूली 'जयणा' वीरेन्द्र गोलेचा (उज्जैन)

अच्छे वर्ष के चार स्तंभ माने जाते हैं

1. चैत्र सुद 1 को रेवती नक्षत्र हो तो वर्षा अच्छी होती है।
2. वैशाख सुद 1 को भरणी नक्षत्र हो तो ताप अनुकूल घास अच्छा होता है।
3. जेठ सुद 1 को मृगशिरा नक्षत्र हो तो पवन अनुकूल अच्छा होता है।
4. आषाढ़ सुद 1 को पुनर्वसु नक्षत्र हो तो अनाज की पैदाइश बहुत होती है।

पानी
प्रकृति का अनमोल उपहार

(श्री अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर)

जब हम दुनिया के नक्शे पर नजर दौड़ाते हैं तो हर जगह समुद्र ही नजर आता है । यह पानी जमीन से भी ज्यादा दिखता है । बचपन से ही हमें हमारे शिक्षक बताते आए हैं कि धरती के 70 फीसदी भाग में पानी है लेकिन फिर भी आज दुनिया भीषण जल सकंट से गुजर रही है । आखिर ऐसा क्यों ? दरअसल धरती पर जो पानी है उसका महज 0.007 फीसदी हिस्सा ही मानव के लिए उपयोगी है यानी एक लाख लीटर पानी में महज 7 लीटर । शेष पानी या तो समुद्री जल है या ग्लेशियर के रूप में जमा । अपने देश की स्थिति और भी गंभीर है, क्योंकि यहाँ दुनिया की आबादी के 16 फीसदी लोग रहते हैं जबकि पानी केवल 4 फीसदी ही उपलब्ध है ।

पानी के अंधाधुंध दोहन से जमीन के नीचे के भण्डार तो खाली हो ही रहे हैं, नदियां भी बारिश के कुछ समय बाद ही सूख जाती हैं। कई खत्म होने के कगार पर हैं। भारत की प्रमुख नदी गंगा भी धीरे-धीरे मरती जा रही है । एशिया की एक अन्य प्रमुख नदी सिंधु की एक प्रमुख धारा कराची के पास पूरी तरह से सूख चुकी है । उस पर पगडंडिया बन चुकी हैं । वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड (W.W.F.) की सन् 2007 की रिपोर्ट नदियों के मरने की वजह जलवायु परिवर्तन और पानी के अत्यधिक दोहन को मानती है । नदी का सालाना औसत 105 सेंटीमीटर है । इसके कम होने से नदियों के जलप्रवाह में 20 फीसदी तक की कमी आई है वहीं सिंचाई और घरेलू इस्तेमाल के लिए नदियों से पानी का दोहन भी चार गुना बढ़ा है । बीते 3 वर्षों में स्थिति और बिगड़ी है । कई विकासशील और गरीब देशों में लोग 'घातक' पानी पीने

को मजबूर हैं। दुनिया में हर वर्ष 35 लाख और भारत में एक लाख लोग पानी से जुड़ी बीमारियों की वजह से मरते हैं। बहरहाल खतरे की घंटी बज चुकी है। भूजल भण्डार सूख रहे हैं, नदियां खत्म हो रही है। इससे आने वाले समय में लोगों की पानी तक पहुंच साल दर साल और भी मुश्किल होती चली जायेगी।

पेय जल संरक्षण के उपाय – जल संकट को लेकर हमको हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठ जाना चाहिए। इस समस्या से निपटने के लिए कई वैज्ञानिक तरीके हैं जिनमें सबसे कारगर है - रेन वाटर हार्वेस्टिंग। इसमें हमारा ही फायदा है, क्योंकि जमीन के भीतर जो पानी जायेगा, इसका उपयोग हम और हमारा परिवार ही करेगा।

1. छत पर एकत्र वर्षा का जल। इस पानी की 80 फीसदी तक हार्वेस्टिंग की जा सकती है। 2. छत के आउट लेट्स को पीवीसी पाईप के जरिये जोड़ा जा सकता है। 3. पानी को जमीन में उतारने के बजाय उसे सीधे टैंक में भी एकत्र किया जा सकता है। 4. पाईप को फिल्टर के साथ जोड़ा जाता है जो पानी को साफ करता है। 5. ऐसा गड्ढा बनाकर भी पानी को जमीन में सीधे नीचे उतारा जा सकता है। पानी साफ करने के लिए कंकड़, रोड़ी और रेत का फिल्टर बनाना। 6. शुरूआती पानी को बहाने के लिए इस वॉल्व का उपयोग किया जाता है। 7. फिल्टर से साफ हुए पानी को बोरिंग, ट्यूबवेल या कुएँ में उतारा जा सकता है।

पानी पीते समय भी गिलास को झूठा न करें। ऊपर से पानी पीएं। मंजन करते समय नल खुला रखने से पानी की बर्बादी होती है उससे बचाव करें। नहाने में शावर के बजाय बाल्टी का उपयोग करें। नल खुला रखकर हाथ न धोएं। नल से धुलाई बंद करें, पोछा लगाएं। हॉज पाइप के बजाए बाल्टी में पानी लेकर धोएं तो पानी बच सकता है। शौचालय में फ्लश की बजाए छोटी बाल्टी काम में लें। मग में पानी लेकर दाढ़ी बनाने से पानी बच सकता है पानी की एक-एक बूंद का कई मर्तबा इस्तेमाल-यही रीसाइक्लिंग। आज जब दुनियां में तेजी से भू- जल भंडार खाली हो रहे हैं, बेशकीमती पानी को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए सब लोगों को उसे अपनाना पड़ेगा।

शास्त्रों में जबकी फिजूलखर्ची नहीं करने पर जोर दिया गया है। मनुस्मृति अध्याय 4 के 121 श्लोक में मन चाहे स्नान और पानी बहाने की मनाति करते हुए कहा

गया है कि भोजन के बाद, रोग के रहते, रात्रि में और बहुत वस्त्र पहने होने पर और जहाँ-तहाँ स्नान करना उचित नहीं होता है।

जल का महत्व – कलश का तिलक करने से समृद्धि में वृद्धि होती है। कलश जिसके मुख पर ब्रह्मा विराजित हैं जिसकी ग्रीवा में शंकर स्थित है। मूल में विष्णु और मध्य में मातृगण स्थित हैं, जिसकी दसो ही दिशाओं में दिग्पाल विद्यमान हैं और जिसकी कुक्षी में सातों ही सागर और सातों ही द्वीप हैं। 27 नक्षत्र व 9 ग्रह हैं। समस्त कुल पर्वत हैं गंगा आदि नदियां चारों ही वेद हैं, उसी कलश का पूजन करना बहुत लाभप्रद है। जल है तो कल है। पानी प्रकृति का है अनमोल उपहार इसे व्यर्थ बहाकर इसे बेकार ना करें। शीतल, निर्मल, पर्याप्त हो जब भूमि जल, तब होगा जीवन सहज सरल। प्यासी धरती को पानी पिलाओ, हरे भरे खेत, खुशहाल जीवन बनाओ। भूजल है अमृत धरा, इसका संरक्षण प्रण हमारा। स्वच्छ जल पाना है सबका अधिकार, पानी बचाने से होगा सपना साकार। पानी की बर्बादी या उसके संचय का प्रभाव राशियों पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। इसके आधार पर जीवन में हानि-लाभ भी उठाने पड़ते हैं। जल संरक्षण हेतु सरकार भी प्रयत्न शील है।

सात क्षेत्र

1. जिन प्रतिमा 2. जिनाग 3. जिन मंदिर 4. साधु 5. साध्वी 6. श्रावक 7. श्राविका

सात चारित्र

1. सामायिक 2. छेदोपस्थापनीय 3. परिहार विशुद्धि 4. सूक्ष्म संपराय 5. यथाख्यात 6. देशविरति 7. अविरति

सात चैत्यवंदन

1. राई प्रतिक्रमण में जगचिंतामणी 2. राई प्रतिक्रमण के अंत में विशाल लोचन (संसार दावानल) 3. मंदिर में 4. पच्चक्खाण पालने का 5. आहार करने के बाद 6. देवसि प्रतिक्रमण के प्रारंभ में 7. संथारापोरसी चउक्कसाय।

जियो और जीने दो

डॉ. श्री दिलीप धींग (एडवोकेट)

इस जगती में सबसे ऊँचा धर्म अहिंसा प्यारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।
'जियो और जीने दो' यह मानवता का नारा है ।।

सुख चाहते हम, लगती हमको, जैसे प्यारी अपनी जान ।
वैसे ही हर जीव को लगती, बेहद प्यारी अपनी जान ।
अत: किसी को मत मारो तुम, सन्तों ने पुकारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 1 ।।

बुरा काम है मार डालना, और बचाना अच्छा काम ।
आओ ! अच्छा काम करें हम, खूब कमाएँ जग में नाम ।
राह अहिंसा चलने वालों से जग में उजियारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 2 ।।

महापुरुष कहते-समझाते, पशु-पक्षी हैं सच्चे दोस्त ।
दोस्त से दोस्ती निभाओ, इंसां हो, मत खाओ गोश्त ।
रिश्ता मूक बचाओ इसमें, धड़क रहा जहां सारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 3 ।।

खोल दिये हैं बूचड़खाने, बेकसूर का खूं बहता है ।
बेबस जानवरों की हत्या, बर्बरता है, कायरता है ।
इन जीवों की हत्याओं से बढ़ता दुःख अंधियारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 4 ।।

सुनो चीख कटते पशुओं की, देखो हृदय विदारक तड़पन !
महसूसो वह अनन्त पीड़ा, फिर थम जातीं साँसें-धड़कन!
जिसने इन जीवों को मारा, उसने खुद को भी मारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है । 5 ।।

भोले-भाले सुन्दर-सुन्दर, जीव धरा के भूषण हैं ।
वन-उपवन आबाद हैं इनसे, हरते कष्ट-प्रदूषण है ।
जीवों की त्रिकाल महत्ता, को सबने स्वीकारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 6 ।।

शांति का पैगाम अहिंसा, ममता का संगान अहिंसा ।
जीने की सर्वोच्च कला यह, जीवन का विज्ञान अहिंसा ।
जिसने तत्त्व अहिंसा समझा, उसने सत्य विचारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 7 ।।

जहाँ अहिंसा वहाँ हमेशा, ढेरों खुशियाँ आती हैं ।
हिंसा सब पापों की जननी, जग में प्रलय मचाती है ।
सत्य अहिंसा फूल सुगंधित, हिंसा जलता अंगारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 8 ।।

मारकाट हिंसा-हत्या के, छोड़ों सारे क्रूर रिवाज़ ।
बन सको तो बनो साथियों, मूक प्राणियों की आवाज़ ।
जब-जब हुई उपेक्षा इनकी, तब-तब मानव हारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 9 ।।

कभी किसी को नहीं सताएँ, सदा गीत प्रेम के गाएँ ।
खुद की, जीव जगत की खातिर, शाकाहार करें-करवाएँ ।
छोटा-सा संकल्प हमारा, सबका बड़ा सहारा है ।
'जियो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।। 10 ।।

मति बदली, जीवन बदला

एक कुम्हार माटी से चिलम बनाने जा रहा था ।

उसने चिलम का आकार दिया, पर थोड़ी देर में उसने चिलम को बिगाड़ दिया । माटी ने पूछा-अरे कुम्हार, तुमने चिलम अच्छी बनाई फिर बिगाड़ क्यों दिया ?

कुम्हार ने कहा कि-अरी माटी, पहले मैं चिलम बनाने की सोच रहा था, किन्तु मेरी मति (दिमाग) बदली और अब मैं सुराही बनाऊँगा ।

ये सुनकर माटी बोली-रे कुम्हार, मुझे खुशी है कि, तेरी मति तो बदली, मेरी तो जिंदगी ही बदल गयी। चिलम बनती तो स्वयं भी जलती और दूसरों को भी जलाती। अब सुराही बनूँगी तो स्वयं भी शीतल रहूँगी और दूसरों को भी शीतल रखूँगी ।

यदि जीवन में हम सभी सही फैसला लें तो, स्वयं भी खुश रहेंगे एवं दूसरों को भी खुशियाँ दे सकेंगे ।

साध्वी मुरुण्ड

कालकाचार्य की सहायता के लिए आए शक राजाओं ने उज्जैन पर राज्य करना आरम्भ कर दिया था । इन्हीं राजाओं की परम्परा में मुरुण्डराज भी हुआ। विशेषावश्यक भाष्य के अनुसार मुरुण्ड राज की बहिन का नाम भी मुरुण्ड था जो जैन सिद्धान्तों पर दृढ़ आस्था रखती थी, अतः वह जैन साध्वी बनना चाहती थी ।

एक बार मुरुण्डराज ने देखा कि एक जैन साध्वी पागल हाथी के सामने आ गई है, परन्तु वह निर्भीक होकर हाथी के सामने से निकल गई । हाथी ने अहिंसा-मूर्ति साध्वी को कुछ नहीं कहा । इस घटना से प्रभावित होकर राजा मुरुण्ड ने अपनी बहिन से कहा- 'यदि तुम साध्वी बनकर आत्म-कल्याण करना चाहती हो तो जैन-साध्वी बन जाओ। भाई की आज्ञा मिलते ही मुरुण्ड जैन साध्वी बनकर साधनापथ पर दृढ़ता से चलने लगी ।

सुनंदा

कल्पसूत्र की टीका के अनुसार सुनन्दा उज्जैन के निकटस्थ ग्राम तुम्बवन के सेठ धनपाल की पुत्री एवं सेठ धनगिरि की पत्नी थी । सुनन्दा के भाई समित ने आचार्य सिंहगिरिजी के प्रवचनों से प्रभावित होकर मुनि दीक्षा धारण कर ली और भाई के साधु बन जाने पर सुनन्दा ने भी श्राविका के बारह व्रत धारण कर लियें ।

इसके पति धनगिरि का हृदय युवावस्था में ही विरक्ति से भर गया था और उसने पत्नी की अनुमति से जैन दीक्षा ग्रहण कर साधु-जीवन स्वीकार कर लिया ।

पति की दीक्षा के समय वह माँ बनने वाली थी, अतः उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उसने वज्र रखा ।

वज्र सदा रोता ही रहता था, अतः सुनन्दा पुत्र के रुदन से अत्यन्त व्याकुल रहती थी । एक मुनि धनगिरि (सुनन्दा के पति) उसके घर भिक्षा के लिए आए तो सुनन्दा ने भावा-वेश में पुत्र को उठाकर उनके पात्र में डालकर कहा- 'यह भिक्षा पाकर कृतार्थ हो जाइए।'

मुनिजी उसे साथ ही ले गए और उन्हें कुछ श्राविकाओं को पालनार्थ दे दिया। वज्र श्राविकाओं के साथ मुनि-दर्शनों के लिये जाता था, अतः उसका हृदय भी विरक्ति से भर गया और उसे जाति-स्मरण ज्ञान भी हो गया । जब वज्र तीन वर्ष का हुआ तो सुनन्दा ने श्राविकाओं से अपने पुत्र को वापिस देने की मांग की, परन्तु वज्रकुमार ने मुनिराज धनगिरि का दिया हुआ रजोहरण ग्रहण कर अपने विरक्त होने की भावना व्यक्त कर दी ।

अब सुनन्दा को जीवन की वास्तविकता का ज्ञान हुआ और वह भी सांसारिक मोह जाल को तोड़कर विरक्त हो गई और आत्म-कल्याण के पथ पर अग्रसर हो गई ।

ज्योतिष कुंडली में पितृ और मातृ दोष

ज्योतिष का मूल आधार ग्रह, उनकी गति और पारस्परिक संबंध है । किन्ही भी दो या दो से अधिक ग्रहों का संयोग, संबंध तथा सहयोग से विशेष योग या दोष का निर्माण कुंडली में होता है । जो जीवन को दिव्य उज्ज्वल या निम्नस्तर का बनाता है । ज्योतिष ग्रंथ बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में जन्मकुण्डली में चौदह प्रकार के दोष/ऋण/श्राप कहे गये हैं । इनमें पितृ दोष/पितृ ऋण और मातृ दोष/मातृ ऋण नामक दोष प्रमुख हैं । पितृ दोष/पितृ ऋण सात पीढ़ियों तक तथा मातृ दोष/मातृ ऋण चार पीढियों तक प्रभाव छोडता है। कई बार व्यवहार में देखा जाता है कि जातक सुकर्म कर रहा है और उसका कोई अपना दोष भी नहीं है, फिर भी कष्ट उसे घेरे रहते हैं। वह मानसिक तनाव में अशान्त रहता है। ऐसी मान्यता है कि ऐसी स्थिति पितृ/मातृ दोष के कारण होती है। प्रश्न उठता है कि पितृ/मातृ दोष क्या है ? कहा जाता है कि ऐसा हमारे पूर्वजों /पित्रों की आत्माओं के दुष्कर्मों व उनके द्वारा छोडे गये ऋणों आदि के कारण होता है । अत: उनकी मुक्ति हेतु संतान को उक्त ऋण चुकाना होता है । इसी में उनकी अपनी समस्याओं का भी समाधान है ।

पितृ दोष :- जब पितृकारक ग्रह सूर्य की पृथकताजन्य व दु:खदायी राहू, केतु, शनि आदि ग्रहों से युति होती है, तो यह पितृदोष कहलाता है, कुंडली में सूर्य नीचराशि /शत्रुराशि में राहू, केतु, शनि के साथ हो तो और भी अधिक पितृदोष होता है । बारहवें भाव में सूर्य का राहू, केतु, शनि के साथ होना भी पितृदोष होता है । यह भी है कि जातक की कुंडली में लग्न से 1,2,4,5,7,9,10 भावों में सूर्य-राहू या सूर्य-शनि की युती हो, तो जातक के जीवन में विशेष घटनाएं घटित होती हैं । इन घटनाओं का मूल कारण पितृदोष होता है ।

मातृदोष :- जब मातृकारक ग्रह चंद्र की पृथकताजन्य व दु:खदायी राहू, केतु, शनि आदि ग्रहों से युति होती है, तो यह मातृदोष कहलाता है । कुंडली में चन्द्र नीचराशि/शत्रुराशि में राहू, केतु, शनि के साथ बैठा हो तो और भी अधिक मातृदोष होता है । लग्न से बारहवें भाव में चन्द्र का राहू-केतु, शनि के साथ होना विशेष मातृदोष के श्रेणी में आता है । यह भी है कि जातक की कुंडली में 1,2,4,5,7,9,10 भावों में चन्द्र -राहू या चन्द्र -शनि की युति

हो, तो जातक के जीवन में विशेष घटनाएं होती हैं । इन घटनाओं का मूल कारण कुंडली में बना मातृदोष होता है ।

पितृ/मातृ दोष निवारण :- अगर जातक की जन्म कुंडली में पितृ/मातृदोष है तो जातक को उचित समय पर अपने पुरुष पूर्वजों /पितरों को (पितृदोष हो तो), महिला पूर्वजों /पितरों को (मातृदोष हो तो)आदर पूर्वक याद करना चाहिये । श्राद्धपक्ष आने पर श्राद्ध करना चाहिये ।

प्रतिवर्ष आनेवाला आश्विन मास का कृष्ण पक्ष श्राद्ध का पक्ष होता है । पूर्वजों की तिथि याद न रहने पर श्राद्ध अमावस को करना चाहिये । पूर्वजों के नाम से दान-पुण्य करना चाहिये । ऐसा करने से पूर्वज संतुष्ट होकर जातक को आशीर्वाद देते हैं । जातक का दोष भी शान्त हो जाता है ।

मेरे अनुभव में सिद्ध हुआ है कि हर महीने की अमावस को कोई भी धार्मिक संस्था में भोजनशाला खाते में राशि /भोजन वस्तु सामग्री भेंट देने से पितृदोष और हर महीने की पूनम को धार्मिक संस्थाओं में भोजनशाला खाते में राशि /भोजन वस्तु सामग्री भेंट देने से मातृदोष निवारण होता है । गायों को घास खिलाने से भी यह दोष शान्त होता है । इसी विषय संबन्ध अन्य और जानकारी के लिये मेरा WHATS APP नंबर पर 9440114444 मेसेज करें ।

कुंडली पर पक्षज्ञात

दोहा-

जिस राशी पर सूर्य हो, उससे सातो राश ।
भीतर इन्दु शुक्ल पक्ष, बाहिर तम पखखांश ।।

अर्थ-जिस राशि पर जन्म कुंडली में सूर्य हो, उससे सात ही राशि के भीतर चंद्रमा हो तो शुक्ल पक्ष और सातवीं राशि से बाहर हो तो कृष्ण पक्ष कहना चाहिये।

जन्म कुण्डल्युपरी पक्षज्ञानम्

श्लोक -

पत्र राशौभवेत्सूर्यस्तस्मात्सप्तगृहान्तरे ।
चंद्रे शुक्लोभवेत्पक्षश्चान्यथा कृष्ण पक्षक :।।

अर्थ - जिस राशि पर सूर्य हो उस राशि से 6 राशि के भीतर चंद्र हो तो शुक्ल पक्ष होता है- और सात राशि के बाहर चंद्र हो तो कृष्ण पक्ष का जन्म होता है ।

मुनि श्री तारकरत्नविजयजी

* एक जंगल में एक दिया है जो बुझता है और बन्द होता है। (उत्तर-बुझा हुआ दिया)
* राजा मरता और प्रधानमंत्री गादी पर बैठता है। (उत्तर-सूर्य अस्त होता है और चाँद उदय होता है)
* एक बकरी को तीन पैर तो तीन बकरियों के कितने पैर होंगे ? (उत्तर -11)
* 40 किलो का पत्थर उसको चार भाग में बाँटना और जो जितना मांगे उतना ही देना। (उत्तर -)
* सौ रूपये को सात डिब्बे में बांटना है जो जितने रूपये मांगे डब्बे देना है। (उत्तर-1,2,4,8, 16, 32, 37)
* 100 सीढ़ी पर सौ नोट हैं हर सीढ़ी पर नोट रखना है अन्त में एक नोट बचना भी चाहिये।
* एक लड़की अपना नाम थ्री माईनस इलेवन टू इलेवन बताती है बताओ उसका नाम क्या है ? (उत्तर-आशा)
* एक खेत में सौ हल हैं चलते हैं। (उत्तर-कंघा)
* दो पेड़ पर पंछी हैं एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर एक पंछी आ जाय तो समान हों जायें, दूसरे पेड़ से एक पंछी प्रथम पेड़ पर आ जाये तो प्रथम पेड़ पर दुगुने हो जायें। (उत्तर-पाँच और सात)
* एक झोपड़ी में 32 बाबा (उत्तर-मुंह में दाँत)
* हम देख सकते हैं किन्तु केवली नहीं देख सकते (उत्तर-सपना)

नवकार महामंत्र में

एक अक्षर के स्मरण में कितने गुण	-	8
मंत्र कितने तीर्थ का सार है	-	68
मंत्र स्मरण में कितने श्वासोश्वास	-	8
मंत्र में देव कितने	-	2
मंत्र में गुरु कितने	-	3
नरक से बचाव हेतु कितने मंत्र का जाप	-	9 लाख
मंत्र का ध्यान कितने पल्योपम का	-	28871
देवायु बंध कराता है	-	1159
नवपद में ज्यादा से ज्यादा कितने गुण	-	346
नवपद में कम से कम कितने गुण	-	238
मंत्र कौनसे यंत्र के साथ संकलित हैं	-	सिद्धचक्र
संवत्सरी प्रतिक्रमण में कितने नवकार का उस्सग्ग होता है	-	160

सूत्र और उनके दूसरे नाम

सिद्धाणं बुद्धाणं	-	सिद्धस्तव सूत्र
सकल तीर्थ	-	सीर्थ वंदना सूत्र
अरिहंत चेईयाणं	-	चैत्यस्तव सूत्र
नमोर्हत् सूत्र	-	पंचपरमेष्ठी नमस्कार
सागरचंदो	-	पौषध पारने का सूत्र
संसारदावानल	-	श्री महावीर स्तुति
वांदणा सूत्र	-	गुरु खामणा सूत्र, द्वादशावर्त वंदन सूत्र
अब्भुट्ठियो सूत्र	-	सुगुरुवंदन सूत्र, द्वादशावर्त वंदन सूत्र
वंदित्तु सूत्र	-	श्रावक अतिचार सूत्र, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र

योग से होता है दुखों का निवारण

दुख आने पर अपने भीतर उतरकर खुद से परिचय किया जाए तो दुख कम होता है। चाहे मनुष्य साधु हो जाए या पूरी तरह संसारी ही रहे, दुख तो आएंगे ही। दुख आने पर आप जितने बाहर रहेंगे, उतना ही नहीं वह दुख और बढ़ेगा। जितना भीतर उतरेंगे दुख के बढ़ने में रुकावट आ जाएगी। भीतर उतरने पर हमें अपनी आत्मा से परिचय करने में सुविधा होगी। ऐसा नहीं है कि भीतर गए तो आत्मा स्वागत के लिए बैठी मिल जाएगी। भीतर भी कुछ पर्दे हटाने पड़ते हैं। जो संसार हम देखते हैं इसका निर्माण धीरे-धीरे हुआ। जैसे ही भीतर उतरें तो विचार करें कि निर्माण की पहले कड़ी में सिर्फ प्रकृति थी। इसे अस्मिता भी कहा गया है। परमात्मा ने इसमें अपनी शक्ति डाली। इससे जो गति उत्पन्न हुई उस हलचल का नाम अहंकार है, जो गतिशील हुआ तो चित्त बना। चित्त में आत्मा का भी प्रतिबिंब हैं और संसार का भी जब अधिक संसार है तो इसे क्षिप्त कहेंगे लेकिन अशांति और व्याकुलता बढ़ जाती है तो इसे विक्षिप्त कहते है। क्या करना और क्या नहीं करना है, जब यह भान चला जाए तो इसे मूढ़ कहते है। जब यह किसी एक स्थान पर टिक जाए, हलचल कम कर दे तो इसे एकाग्रता कहते हैं और थोड़ा आगे बढ़कर किसी एक केन्द्र पर रुक जाए व कोई हलचल न हो तब इसे निरूद्ध कहते हैं। इसी अवस्था को योग कहा गया है।

धार्मिक शिक्षा

संसार की परिस्थिति इस समय अत्यंत भयंकर और दयनीय हो रही है । परिग्रह पिशाच के आवेग में मानव ने दानव का रूप धारण कर लिया है । लाखों निरपराध व्यक्तियों की निर्मम हत्या हो रही है । करोड़ों की सम्पत्ति भस्म की जा रही है । हजारों मकानों को श्मशान बना दिया गया है ।

कहते क्या हैं कि ? ऐसा स्वराज्य संसार में आज तक किसी ने नहीं पाया जो बिना लड़ाई किये ही मिल गया । इतिहास में ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं है । परंतु यह भी तो दृष्टान्त इतिहास में नहीं मिलता कि इस राज्य के मिलने पर निरपराधियों की इतनी हत्याएं हुई हों । इससे यही सिद्ध होता है कि आजकल के मनुष्यों के हृदय में धार्मिक शिक्षा का बिल्कुल अभाव है । यह आज के विज्ञान का फल है ।

विलायत वालों को लोग बड़ा विज्ञानी मानते हैं और इनकी बड़ी-बड़ी कीर्तियां अलापते हैं । परंतु उन्होंने एक अणुबम से लाखों मनुष्यों और करोड़ों की सम्पत्ति का स्वाहा कर दिया । जो जापान 50 वर्ष में सम्पन्न हुआ था उसे एक ही दिन में रसातल में पहुंचा दिया ।

जापान के लोग बड़ी प्रशंसा करते थे कि उसने थोड़े ही काल में अपने देश को सम्पन्न बना लिया । परंतु यदि उसकी अंतरंग स्थिति देखो तो पता चले । उसने 5 वर्ष में चीन को नाकों दम कर दिया, लाखों, मनुष्यों को स्वाहा कर दिया तथा जो देश काबू में आया उसे भिखमंगा बना दिया ।

आजकल की शिक्षा केवल अर्थोपार्जनकारी और कामविषयक है । इसलिए लोगों के हृदय में शिक्षित होने पर भी वह राष्ट्रीयता नहीं आई जो आज के स्वतंत्र नागरिक को आवश्यक है । राष्ट्रीयता तब तक पूर्णरूप से नहीं आयेगी, जब तक स्वदेश और स्वदेशी वस्तुओं से प्रेम नहीं होगा और औद्योगिक धंधों को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा । यंत्रादि द्वारा लाखों की तादात में कपास और मिलों द्वारा लाखों थान कपड़ा एक दिन में तैयार हो जाता है । फल यह होता है कि इने-गिने धनाढ्यों को उससे लाभ पहुंचता है या लाखों मज़दूरों को मजदूरी मिलती है परंतु करोड़ों मनुष्य और हजारों दुकानदार व्यवसायहीन हो जाने से मारे-मारे फिरते हैं ।

इसी प्रकार यंत्रो द्वारा एक दिन में हजारों टन तेल तैयार हो जाता है । इसका फल यह होता है कि इने-गिने सहस्त्रों धनाढ्य और मजदूर मजदूरी पा जाते हैं, परंतु व्यवसायहीन होने से लाखों तेली हाथ पर

हाथ रख रोते हैं । कोल्हुओं द्वारा जो तेल निकलता था वह स्वच्छ और लाभप्रद होता था जो खली निकलती थी उसमें तेल का अंश रहने से गाय भैसों को खाने में स्वाद आता था वह स्वास्थ्यप्रद तथा पुष्टिकर होती थी । इसी प्रकार शक्कर आदि के मिलों की भी व्यवस्था समझिये ।

यह तो कुछ भी बात नहीं, यदि कपड़ा मिलों की व्यवस्था को जाने तो पता चलता है कि उनमें हजारों टन चर्बी लगती है । यह चर्बी क्या वृक्षों से आती है ? नहीं कसाईखानों को पहले से आर्डर दिये जाते हैं कि इतने टन चर्बी हमको भेजें । चमड़ा कितना लगता है, इसकी परवाह नहीं । इतने पर भी भारतीय चाहते हैं कि गौवध बंद हो जाए ।

जरा मन को शांत कर विचारों तो सही, हम स्वयं इन बातों से घृणा नहीं करते । ग्रामों में चले जाइये, पशुओं के चरने को भूमि नहीं । वर्तमान मनुष्यों के आचरण के ऊपर दृष्टिपात कर यदि कोई लिखे तो पुराण बन जावे ।

अपने को अच्छे से अच्छा माननेवाले होटलों में चाय के प्याले चाटते देखे जाते हैं । जिस प्याले में मांसभक्षी चाय पीते हैं, उसी से निरामिषभोजी भी चाय पी रहे हैं । कोई कहे क्या करते हो ? तो उत्तर मिलता है कि अजी छोड़ो, इसी छुआछूत ने भारत को गर्त में डाल दिया । इसका मूल कारण यदि देखा जाए तब शिक्षा में धर्म-शिक्षा और सच्ची राष्ट्रीयता का अभाव ही है । अत: यदि देश का कल्याण करने की सत्य भावना है, तो प्रारंभ से धार्मिक शिक्षा अनिवार्य करो और दूसरे यह प्रतिज्ञा प्रत्येक व्यक्ति को करनी चाहिए कि हम स्वदेशी वस्त्र का ही उपयोग करेंगे ।

धार्मिक शिक्षा का महत्व इतना है कि इस लोक की कथा छोड़ो । परलोक में भी आत्मा सुख का पात्र हो जाती है । शिक्षा उसे कहते हैं, जिससे प्राणियों को सुख हो । सभी मनुष्य दु:ख से भयभीत रहते हैं और सुख को चाहते हैं । अत: शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा प्राणियों को सुख हो । जिस शिक्षा से प्राणियों का विनाश हो, वह शिक्षा किस काम की ? वह तो एक तरह का अस्त्र है । केवल धनार्जन करना शिक्षा का प्रयोजन नहीं, धनार्जन तो व्यापार से होता है।

भारत में ऐसे कई करोड़पतियों के फर्म हैं कि उनके मालिक साधारण पढ़े लिखे हैं । यह संसार महान दु:ख का भंडार है । उसमें उत्तम शिक्षा के बिना शांति का संचार नहीं । प्राचीनकाल में अपरिग्रही गुरु शिक्षा देते थे जिसके द्वारा संसारी मनुष्य सुमार्ग में प्रवृत्ति

कर सुखपूर्वक जीवनयापन करते थे तथा अंतिम समय में गृहस्थी का भार युवा पुत्रों के ऊपर छोड़ आप संसार से विरक्त होकर मुक्तिपथ के पात्र हो जाते थे। आजकल उस शिक्षा के अभाव में केवल धन संचय करते-करते परलोक चले जाते हैं और वही संस्कार अपने उत्तराधिकार में छोड़ जाते हैं। अत:यदि लोगों को समाज और देश के उत्थान की चिंता है, तब पहले धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था ठीक करो!

मानवता

छोड़ गगन को नीचे आओ
धरती की भाषा अपनाओ
राजनीति में जो आये हैं
क्या नहीं वे कर पाये हैं
बनीं झोपड़ी महल अटारी
जमीं बने वे गगनाचारी
स्वार्थ तज सेवा अपनाओ।
मिट्टी पर जो लोट रहे हैं
जीने का दम घुट रहे हैं
ले युग परिवर्तन अभिलाषा
बांच रहे मिट्टी की भाषा
मरने से तुम उन्हें बचाओ।
जग में व्याप्त आह जलन है
छाया अभी कातर कुन्दन है
संतों की ही शाश्वत वाणी
जग में होगी ही कतयाठी
मानवता का महल बनाओ

– जनार्दन पाण्डेय, चम्पारण

सुख छिपा है अपने भीतर

(श्री प्रकाश गुंदेचा, जोधपुर)

इस जगत का प्रत्येक प्राणी अनंत काल से सुख के लिए प्रयत्न कर रहा है । सुख के लिए मानव ने लाखों रूपये इकट्ठे किये, बड़े-बड़े महल बनवाये, संघर्ष किया पर क्या वास्तव में सुख मिला ? एक करोड़पति को पूछें, जिसके महल आसमान से टकरा रहे, अथाह धन-संपत्ति का मालिक है, क्या आप सुखी हैं ? उत्तर मिलेगा-ऊपर से तो दिवाली दिख रही है परंतु अंदर होली जल रही है. । यदि महल वाले से यह उत्तर मिलता है तो बेचारे मध्यम वर्ग और गरीब वर्ग से प्रश्न ही क्या करना ? इसका मतलब यह है कि हमें सुख का नाम याद है पर उसकी राह भूल गये हैं ।

एक बहित प्रात: बिलोने का काम कर रही थी । उसे दो घंटे हो गये । उसके वस्त्र भी पसीने से भीग गये । उसका पति पास में बैठा था । पसीने से नहाती पत्नी को देखा तो उसका मन भीग उठा । उसने पूछा, इतनी मेहनत की और अभी तक मक्खन नहीं निकला ? वह उठा जाकर देखा तो मटके में दही नहीं था, वहां पानी भरा था । उसने कहा-देवी, यह क्या कर रही है ? पत्नी बोली-मक्खन निकाल रही हूँ । पति बोला-तू अनंत युगों तक बिलोती रही तो भी तुझे मक्खन नहीं मिल सकता ।

हम भी बिलोवन कर रहे हैं । अनंत युग बीते अभी तक सुख का मक्खन नहीं मिला तो सोचना होगा कि हमने दही बिलोया है या पानी ? यदि दही बिलोया होता तो सुख का मक्खन कब का मिल गया होता किंतु सुख नहीं मिला । अत: सोचना होगा कि भूल कहां हो रही है । सुख मानव को प्रिय है और वह सुख के लिए दिन-रात दौड़ रहा है । उसने सुख की भौतिक पदार्थ में खोज की है । चांदी के टुकड़ों में उसने सुख देखा है । यही तो उसकी बहुत बड़ी भूल हो रही है । जहां सुख का अभाव है वहीं सुख की खोज कर रहा है । इसी भूल के कारण वह इधर-उधर भटक रहा है पर उसे वास्तविक शांति प्राप्त नहीं होती ।

एक वैभव संपन्न किसान को कहा गया कि आप तो एकदम सुखी हैं । इस पर वह कहता है सुखी हम कहां, सुखी तो जमींदार है । जबकि जमींदार की दृष्टि राजा की ओर लगी रहेगी । राजा से पूछेंगे तो वह भी कहेगा, सुख तो सम्राट के पास है । सम्राट कहेगा, मैं कहां सुखी हूँ । सच्चा सुख तो चक्रवर्ती के विशाल साम्राज्य में हैं और चक्रवर्ती बोलेगा अभी सुख कहाँ है । अभी तो छह खण्ड ही साधे हैं सातवें पर साम्राज्य न मिले तब तक शांति कहाँ ?

सुख की इतनी मंजिल पार कर आये। एक किसान को लेकर चक्रवर्ती के पास तक घूम आये किंतु सुखी कोई भी नहीं है। फिर सुखी किसे कहें। वास्तव में जिन पदार्थो में हम सुख ढूंढ रहे है और ये भौतिक टुकड़े जिसमें हम सुख मान बैठे हैं किंतु जरा उनका विश्लेषण कर देखें तो पता चलेगा, उनमें सुख है ही नहीं।

एक ग्वाला था। उसकी गाय तभी दूध देती जब उसे हरी घास मिलती। वर्षा में हरी घास मिलती रही और फाल्गुन तक भी मिलती रही परंतु जब ग्रीष्म ऋतु आई, जंगल सूख गये। ग्वाले के सामने समस्या खड़ी हो गई। हरी घास न मिले तो गाय दूध न दे। आखिर उसकी बुद्धि ने उपाय लगाया। उसने गाय की आंखों पर हरा चश्मा लगा दिया अब गाय वन में पहुंची तो सारा वन दिखाई देने लगा। चश्में के कारण उसे सूखी घास भी हरी दिखने लगी। अब वह सूखे घास को हरा समझकर आनन्द से खाती और पुनः दूध देने लगी।

घास हरी नहीं है पर चश्मा हरा है। इसी तरह सुख पदार्थों में नहीं अपितु मानव के मन में है। इन्द्रियों के माध्यम से आत्मा हरी सुख की अनुभूति कराती है। आज का मानव इच्छा पूर्ति को ही सुख मानने की भूल कर बैठा है। किंतु इच्छा की पूर्ति में सुख है इस गड़बड़ी में पड़ जाओगे। एक संग्रहणी का रोगी है। डॉक्टर ने उसके लिए छाछ के सिवाय सभी चीजें बंद कर रखी हैं। घर में दाल का हलवा बना है, उसका मन मचल पड़ा। किंतु वह इच्छापूर्ति करने जायेगा तो सुख होगा या दुख ? वास्तव में इच्छा के गुलाम के भाग्य में सुख लिखा ही कब है ? किन्तु इच्छाएं जिसकी गुलाम हैं, सुख उसी के कदमों में बंधा है। वैसे भी इच्छायें, तो एक पूरी होने पर दूसरी उठेगी। इस तरह ये कभी शांति नहीं देगी।

भौतिक सुखों की चकाचौंध में वास्तविक सुख की कल्पना ठीक वैसी ही भ्रांतिपूर्ण होगी जैसी कि चमचमाते जुगनुओं के क्षणिक प्रकाश में दिवस के महाप्रकाश को खोजना। आनन्द और सुख वह आत्मा की वैयक्तिक संपत्ति है। उसे अन्यत्र खोजना व्यर्थ होगा। फूलों की मधुर सुवास के लिए पत्तों को छानना समय और शक्ति को व्यर्थ गुमाना है। शक्कर की मधुरिमा और दीपक की उजियाली को दूसरे स्थल पर खोजना व्यर्थ सिद्धि होगा।

पर कभी-कभी मानव भ्रम में पड़कर सुंदर वस्तु को भी असुंदर मान बैठता हैं। उदयपुर के महाराणा ने पुत्र जन्म पर एक प्रीतिभोज का आयोजन किया। मंत्री ने महाराणा से निवेदन किया, पुरवासी सेठ साहूकार तो प्रतिदिन अपने घरों में मिष्ठान्न खा रहे हैं पर आपके सेवक भील लोग

पुत्रोत्सव से वंचित रह जायेंगे । क्या आज भी उनका मुंह मीठा न होगा ? महाराणा ने उनकी सूचना स्वीकृत कर भील जाति को निमन्त्रित किया। उनके लिए शीरा-पूरी तैयार किया गया। पंक्तिबंद्ध सबको बिठाकर सभी के सम्मुख शीरा परोसा गया।

अबोध भील लोगों ने देखा यह क्या है? गीला-गीला कच्चे आटे जैसा लगता है। एक दो ने परस्पर देखा और सब पत्तल छोड़कर उठ गये । मंत्री समझाने आया तो वे लोग कहने लगे हम तो नहीं खाते ऐसी गोबर सी चीज । मकाई की रोटी की आशा लेकर आये थे पर यहां तो न जाने कैसी वस्तु हमारे सामने धर दी गई । अंत में मंत्री ने हार खाकर उनके लिए मकई की रोटी और शाक तैयार करवाया । मकई की रोटी खाने वाले आदिवासी क्या जाने हलुवे का स्वाद ? इसी तरह प्रतिदिन भौतिक सुखों की चकाचौंध में रहने वाला आज का मानव भी यदि आध्यात्मिक सुखों से चौंक उठे और उसे पागलपन की सनक समझने लगे तो कोई आश्चर्य न होगा ।

एक भाई दमे के रोग से बुरी तरह पीड़ित था । उससे पूछा गया कि यह रोग किससे से हुआ । वह बोला-महाराज इस तम्बाकू से । यह बैरिन मेरा स्वास्थ्य खा गई है 'उससे पूछा गया-' फिर यह चिलम हाथ से नीचे क्यों नहीं फैंकते हो ? अब क्यों पीते हो?' मैंने कहा-तो वह बोला- 'बचपन की आदत है। इसके बिना चैन नहीं मिलता।' अब बोलिए इस रोगी को दुःख किसने भेजा है, कहना होगा उसके स्वभाव ने ।

दुखों का अभाव ही सुख है । दुःख ज्ञात हो चुके हैं तो अब आवश्यकता है उसके मूलोछेदन की । प्रभु महावीर ने कहा-तू दुःखों के अंधकार में क्यों भटक रहा है? सुख का दिव्य प्रकाश तेरे पास है, उस पर आवरण पड़ा है, आवश्यकता है उसे हटा देने की । मोह के अधीन व्यक्ति अपने पीछे दुखों की परम्परा खड़ी कर लेता है । जीवन में जितनी-जितनी वासना है उतने ही संघर्ष हैं। वह दूसरे को गिरा स्वयं ऊपर उठना चाहता है । यही उसके अशांति का कारण है।

आज के बड़े-बड़े राष्ट्रों में विध्वंसक शस्त्रों की होड़ सी लग रही है । किंतु जब तक मानव के दिमाग से स्वार्थ व सत्ता का अहंकार विगलित न हो जाये तब तक शांति की राह दूर है । इसके लिए विश्वबंधुत्व स्नेह और सद्भाव को अपनाना होगा । शांति के दूत भगवान महावीर के 'जिओ और जीने दो' के सिद्धांत को अपनाना होगा, तथा अपने स्वार्थों पर ब्रेक लगाना होगा तभी जन-जीवन में शांति आ सकती हैं।

मधुकर ज्ञानोपासना

कन्या शिविर

शिविर 12 से 30 वर्ष की आयु वर्ग की कन्याओं एवं महिलाओं के लिए आयोजित

दिव्य कृपा- समत्व साधिका पू.सा. श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा.

पावन निश्रा

मालवा के गौरव पू. साध्वीजी डॉ. श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.
पू.सा. श्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा., पू.सा. श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.
पू.सा. श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.

संस्कारिका धार्मिक आध्यात्मिक जागरण के पावन उद्देश्यों को लेकर आयोजित इस शिविर में आप सादर आमंत्रित हैं । आप स्वयं बच्चों के साथ इस मधुकर ज्ञानोपासना में भाग लेकर ज्ञान की अभिवृद्धि करें ।

यही अभ्यर्थना ...

* बहुमान कैसे करें ? देव-गुरु और धर्म का ।
* स्वयं को कैसे बचायें ? व्यसन और फैशन के तूफान से ।
* जीवन को प्रेरित करने वाले ... जैन जगत के कोहिनूर ... एक परिचय ।
* जीवन को बर्बाद होते कैसे बचायें - टी.वी. और मोबाइल से ।
* कैसे करें मन की शांति का अद्भुत प्रयोग ।

विषय

सीनियर वर्ग-जीवन में संयम का महत्व ।
जूनियर वर्ग-आलस्य जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है ।

- शिविर आयोजक एवं आमंत्रक-

श्री राजेन्द्र सूरि शताब्दी शोध संस्थान-उज्जैन
अ.भा. सौधर्म वृहदतपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ
अ.भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद एवं परिषद परिवार शाखा-उज्जैन

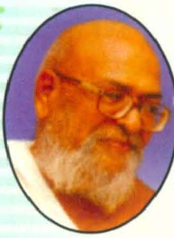

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા રતલામ નગરે રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશોત્સવ

સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૬ ને રવિવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬

જિન શાસનના રાજા સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા આયોજિત સમસ્ત શ્રી સંઘની હોંશિલી હાજરીમાં સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૬ ને રવિવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬ ના રોજ માળવાની ધન્યધરા રતલામ નગરે વાજતે-ગાજતે ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશોત્સવ સંપન્ન થનાર છે. પૂજ્યશ્રીના રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશોત્સવને માણવો તે જીંદગીનો એક મોટો લ્હાવો છે.

ભારત ભરની ધરા પર બાસઠ વર્ષ સુધી વિહરી જિનશાસનનો ડંકો વગાડનાર..

પૂજયશ્રીના સ્વાસ્થ્યમાં પ્રતિકુળતા જણાતાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘો ચિંતિત... બધાજ રીપોર્ટ નોર્મલ આવતાં સંઘોમાં ઉત્સાહનું મોજું

વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. ને હૃદયનો દુઃખાવો થતાં ફરી સંઘો ચિંતાતુર

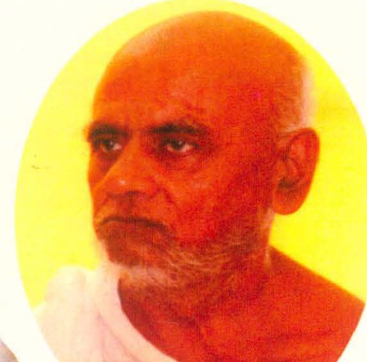

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઘેઘુર વડલા સમ સમુદાયના પરમોપકારી, સંઘ એકતાના શિલ્પી ભારતભરની ધન્યધરા પર બાસઠ વર્ષ સુધી વિહરી જિન શાસનનો ડંકો વગાડનાર સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ ગુજરાત, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, બિહાર, ઉત્તરપ્રદેશ, કર્ણાટક, તામિલનાડુ, આંધ્રપ્રદેશ વિગેરે ભારત ભરની ધરાને ધન્ય બનાવી જિન શાસનનો જય જયકાર ગજવી દેશભરમાં

વિવિધ સ્થળોએ સતત બાસઠ ચાતુર્માસ સ્થિરતા કરી પરમ પૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ગચ્છને ધર્મના રંગેરંગી હાલ રાજસ્થાનની ધર્મ ધરાપર વિહરી ધર્મ સંદેશો પાઠવી રહ્યા છે.

રાજસ્થાનના ભીનમાલનગરે ૭૨ જિનાલયમાં ગત ચૈત્ર માસમાં નવપદજી ઓળી આરાધના અને ચાતુર્માસ ઘોષણા સંપન્ન કરાવ્યા બાદ ભીનમાલ નગરની સ્થિરતા દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીના સ્વાસ્થ્યમાં પ્રતિકુળતા જણાતાં અ.ભા. સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ચિંતાની લાગણી પ્રસરી જવા પામી હતી. ભીનમાલ નગરની સ્થિરતા દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીના સ્વાસ્થ્યમાં પરિવર્તન થતાં તાત્કાલિક નિદાન કરાવવાની ફરજ પડી હતી. પૂજ્યશ્રીની નાદુરસ્ત તબિયતના કારણે સંઘના આગેવાનો અને યુવાનો વધુ ચિંતિત બન્યા હતા. સંઘના આગેવાનોએ પૂજ્યશ્રીને અમદાવાદની સાલ હોસ્પિટલમાં દાખલ થવા વિનંતી કરી હતી. અને તા. ૨૪-૪-૨૦૧૬ ના રોજ પૂજ્યશ્રીને અમદાવાદની સાલ હોસ્પિટલમાં દાખલ કરાયા હતા. અને તાબડતોળ નિષ્ણાંત તબીબો દ્વારા નિદાન કરાયું હતું. કીડનીના રીપોર્ટો તૈયાર કરી શ્રી શૈલેષકુમાર શાંતિલાલ વોહેરા મારફત નડિયાદની કીડની હોસ્પિટલમાં ડૉ. ગંગ સાહેબને ચેક કરવા મોકલવામાં આવ્યા હતા. ડૉ. ગંગ સાહેબે જીણવટથી તપાસ કરી હતી અને તે રીપોર્ટ નોર્મલ આવ્યા હતા. સાલ હોસ્પિટલમાં નિદાન કરાયેલા તમામ રીપોર્ટો પણ નોર્મલ આવતાં સમસ્ત સંઘોમાં ઉત્સાહનું મોજું ફરી વળ્યું હતું. દરમ્યાન વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., તેમજ પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી સિધ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા પૂજ્યશ્રીની સેવા માટે સાથે રહ્યા હતા ત્યારે વરિષ્ઠ મુનિરાજશ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. ને હૃદયમાં દુઃખાવો થતાં સંઘોના આગેવાનો ફરી ચિંતામાં મુકાઈ ગયા હતા. અને તાત્કાલિક આઈસીયુ માં દાખલ કરી તબીબોની સલાહ મુજબ એન્જોપ્લાસ્ટ સર્જરી કરી સ્ટેન્ડ મુકવામાં આવ્યું હતું અને આરામ કરવા જણાવ્યું હતું. આમ બન્ને ગુરૂ-શિષ્યનું સ્વાસ્થ્ય સુધરતાં અમદાવાદથી સિયાણા નગરે દીક્ષા સંપન્ન કરવા વિહાર કર્યો હતો. અને સંઘોના ભક્તો ચિંતા મુક્ત બન્યા હતા.

રાજસ્થાનના સિયાણા નગરના આંગણે રચાયેલ સંયમના માંડવે... મુમુક્ષુ રવિનાકુમારી બની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી હીંકારલતા શ્રીજી મ.સા.

રાજસ્થાનના સિયાણા નગરના આંગણે રચાયેલ સંયમના માંડવે પૂજ્યશ્રીની પાવન નિશ્રામાં આયોજિત અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવના અંતિમ દિવસે એટલે કે સંવત ૨૦૭૨ ના વૈશાખ સુદ-૫ ને બુધવાર તા. ૧૧-૫-૨૦૧૬ ના દિવસે પરમ પારમેશ્વરી આજ્ઞાને આત્મસાત કરવા અધિરી બનેલી મુમુક્ષુરત્ના કુ. રવિના શેષમલ નૈનમલ બાગરેચાએ સિયાણા નગરના આંગણે રચાયેલ સંયમના માંડવે સંસારી વાઘા ત્યજી સંયમના વાઘા અંગીકાર કરી મોક્ષમાર્ગે જવા પુનિત પ્રયાણ કર્યુ હતું. મુમુક્ષુરત્ના રવિનાકુમારીએ સમર્થ બહુદીક્ષાના દાનેશ્વરી, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના વરદ્દહસ્તે રજોહરણ ગ્રહણ કરી પૂજ્યશ્રીની આજ્ઞાનુવર્તી સ્વર્ગસ્થ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કોમલલતાશ્રીજી મ.સા. ની પ્રશિષ્યા તરીકે નૂતન સાધ્વીજી શ્રી હીંકારલતાશ્રીજી મ.સા. નામ ધારણ કર્યું હતું.

પૂજ્યશ્રી તથા વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની પાવન નિશ્રામાં યોજાયેલ દીક્ષા મહોત્સવ દરમ્યાન મુમુક્ષુરત્ના રવિનાકુમારીના ત્યાગ માર્ગની અનુમાદનાર્થે ગુજરાત, મધ્યપ્રદેશ સહિત કેટલાય રાજ્યોમાંથી સમાજ બંધુઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ અવસરે પૂજ્યશ્રીએ કહ્યું હતું કે ભારતની ભૂમિ ત્યાગની ભૂમિ છે. અહીં સંગ્રહ કરવાવાળાને નહીં ત્યાગી આત્માઓને પૂજવામાં આવે છે. જે ભૌતિક સુખ-સાધનો અને સુવિધાઓનો ત્યાગ કરી આત્મચિંતન લોક કલ્યાણના માર્ગનું અનુસરણ કરે છે. બધી જ વસ્તુઓ ઉપલબ્ધ હોવા છતાં શારિરીક સુખોનો ત્યાગ મહત્વપૂર્ણ છે. જૈન ધર્મ નિવૃત્તિ પ્રધાન ધર્મ છે. તેમાં ત્યાગ, સંયમ, સાધના, આરાધના ને પ્રમુખ સ્થાન આપવામાં આવ્યું છે. પૂજ્યશ્રીએ વધુમાં કહ્યું કે સંસારની વિષમતા ને સમજવી જરૂરી છે. માણસ સુખની આશા રાખી પ્રવૃત્તિ કરવા આગળ વધે છે પરંતુ સુખ હંમેશા એનાથી ચાર ડગલાં આગળ ચાલે છે. વસ્તુઓના ભોગથી સુખનો આભાસ થાય છે. પરંતુ વસ્તુના ત્યાગથી વાસ્તવિક સુખ પ્રાપ્ત થાય છે. સંસારજન્ય સુખ સંપૂર્ણ નથી હોતું. સંયમ જીવન સંસારના ભાવોથી મુક્ત થઈ આત્માના ભાવોમાં પ્રવેશ કરવાનો એક અનુપમ ધ્વાર છે.

બ્રજેશ બોહરા

કાળઝાળ ગરમી વચ્ચે માળવામાં હરખની ટાઢક...!
માળવામાં વરસી રહ્યો છે હર્ષનો વરસાદ

માળવાના મુખેથી પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયાથી સ્વાગત કરવા પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. ની હાકલ

માળવાવાસીઓના મનના મોરલા અત્યારથી જ નાચી રહ્યા છે. દરેક ભક્તોના દિલમાં કાળઝાળ ગરમી વચ્ચે પણ હરખની ટાઢક વ્યાપી ગઈ છે અને હર્ષનો વરસાદ વરસી રહ્યો છે.

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિ ભગવંતો અને સાધ્વીજી ભગવંતોનું ૨૦૧૬ ના વર્ષનું ચાતુર્માસ રતલામ નગરે નિર્ધારિત થતાં સમસ્ત માળવામાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાઈ રહ્યો છે અને હરખની હેલી વરસી રહી છે.

ગત તા. ૧૫-૫-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ, મોહનખેડા ખાતે પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. ની નિશ્રામાં શ્રી સંઘ અને પરિષદની મીટીંગ યોજાઈ હતી. તા. ૩-૬-૨૦૧૬ ના રોજ માળવાના મુખદ્વાર થાંદલા પાસે ખજુરીથી પૂજ્યશ્રી સપરિવાર રતલામનગરના ચાતુર્માસ હેતુએ પ્રવેશ કરવાના હોઈ તે માટે માળવાના મુખેથી ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયાથી સ્વાગત કરવા પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. એ પરિષદના અગ્રણીઓ, સદસ્યો અને ભક્તજનોને હાકલ કરી હતી. પૂજ્ય મુનિરાજ ભગવંતે તેમના ગુરૂના સંબંધમાં કહ્યું હતું કે ગુરૂદેવ અમારા સાક્ષાત ભગવાન છે તે જ્ઞાનરૂપી કુવો બની અમારી તરસ છીપાવવા સ્વયં પધરામણી કરી રહ્યા છે. માળવાની ભક્તિ આત્મિય ભક્તિ છે. માળવા મધુકર છે.

તેઓ રામ બની સહુના દિલમાં વસેલા છે તો અમારા દિલમાં હનુમાન તરીકેની છબી અંકિત છે. આપણી આસ્થાને બળવાન બનાવવાની છે. આ ગુરૂ માત્ર જૈનોના જ નહી જન-જનના છે. માળવાની ભક્તિ શિખર પર છે. માળવામાં મિઠાશ છે. માળવા અનુશાસન પ્રિય છે. આપણા આરાધ્ય હૃદય સમ્રાટના સ્વાગતમાં કોઈ જાતની કચાશ ન રહેવી જોઈએ પલક પાવડે બીછાવી આપણો ઉત્સાહ અનંત ગણો હોવો જોઈએ.

પૂજ્ય મુનિરાજ ભગવંતે પરિષદના કાર્યકર્તાઓને સંબોધીને જણાવ્યું હતું કે પરિષદ કંદમૂળ મુક્ત બનો. સંચાલક ગણ આરાધક બને. વ્યસન મુક્ત કાર્યકર્તા હોય. સરકાર ધ્વારા ચાલી રહેલ અલ્પ સંખ્યો માટે યોજનામાં વિભિન્ન રાહત આપવા વાળી યોજનાને સમજવી અને એનાથી થતા ફાયદાનો લાભ કેવી રીતે લેવો એનો સેમીનાર લઈ ફોર્મ ભરાવી સહુને જાણકારી આપવી.

આ અવસરે શ્રી પારસજી જૈન, શ્રી રમેશજી ઘાડીવાલ, શ્રી અશોક શ્રી શ્રીમાલ, શ્રી સુરેશજી તાંતેડ અને મોહિતજી બધા જ સન્માનીય ગુરૂભક્તોએ પોતાના વિચારો રજુ કરતાં પૂજ્યશ્રીના શાનદાર સ્વાગત માટે રૂપરેખા બનાવી હતી. થાંદલા નિવાસી શ્રી ઉમેશજી પીચા, શ્રી વિનયજી છીપની એ થાંદલાની વ્યવસ્થા સંબંધી જાણકારી આપી હતી. પૂજ્યશ્રીના શાનદાર સ્વાગત માટે પરિષદના કાર્યકરોને જવાબદારીઓ સોંપાઈ હતી. દુર દુર થી પધારેલા સમર્પિત ગુરૂભક્તોનો મ્યુઝીયમના શ્રી નીરજ જી સુરાણાએ આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો. સફળ સંચાલન શ્રી મોહિતજીએ કર્યું હતું. મીટીંગ બેઠકની વ્યવસ્થા શ્રી દિનેશજી મામા તથા શશાંકજી એ કરી હતી.

મીટીંગમાં ઉપસ્થિત સહુ કોઈને સંબોધન નિવેદન કરતાં જણાવ્યું હતું કે આપણી આસ્થાના આ મહાકુંભમાં સહુએ ડુબકી લગાવી પોતાને પાવન કરવાનો આ અનમોલ અવસર આવ્યો છે. પોત પોતાની શક્તિ અને ભક્તિથી તન-મન-ધન અને સમર્પણ ભાવથી સેવક બની કાર્ય કરવાનું છે. સમસ્ત શહેર-નગર અને ગામના શ્રી સંઘ પ્રમુખ, પરિષદ, મહિલા પરિષદ, બાલક-બાલિકા પરિષદ તથા સંબધિત સંસ્થાઓના પ્રમુખશ્રીઓને નિવેદન કરાયું હતું કે જલદીમાં જલદી તકે સ્થાનીય સ્તર પર સહુ મહાનુભાવો બેઠક બોલાવે અને નક્કી કરે કે પૂજ્યશ્રીના માળવા પ્રવેશમાં અધિકથી અધિક સંખ્યામાં ગુરૂભક્તો પધારે અને દર્શન-વંદનનો લાભ મેળવે.

નિવેદક-સંપર્ક
શ્રી રમેશજી થાડીવાલ-૯૯૨૬૦૮૮૨૪૭-વોટ્સઅપ - શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ
બ્રજેશ બોહરા

સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજ શ્રી જયકિર્તિ વિજયજી
મ.સા. ને ગુર્જર જૈન જ્યોત અર્પે છે.
ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ

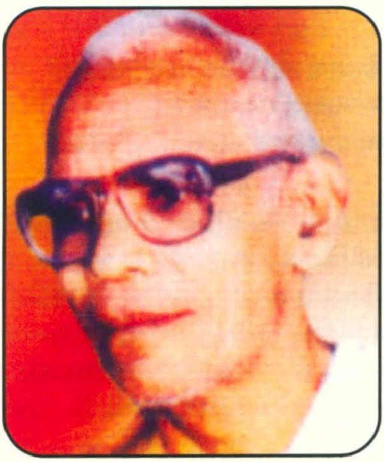

સમર્થ યુગપ્રભાવક, સુવિશાલ, ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના બીજા ક્રમના શિષ્ય સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજ શ્રી જયકિર્તિવિજયજી મ.સા. તાજેતરમાં રાજસ્થાનના વાગરા ખાતે સમાધિ પૂર્વક દેવલોક ગમન કરી જતાં સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ભક્તોના દિલમાં આઘાત પહોંચ્યો હતો. પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી સાલસ અને મિલનસાર સ્વભાવના હતા. સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજ અત્યારે આપણી વચ્ચે નથી પણ તેમની યાદ કાયમ માટે તાજી રહેશે. સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજ શ્રી જયકિર્તિવિજયજી મ.સા. ના ચરણોમાં વંદન કરી ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર અંતઃકરણ પૂર્વક ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ અર્પે છે.

શ્રી જયકિર્તિવિજયજી મ.સા., જન્મ સંવત - ૧૯૯૮ મહા વદ-૬
જન્મસ્થળ : વાગરા (રાજ.), સંસારી નામ : પુખરાજજી
માતા-પિતા : રામુદેવી - નરસિંહજી
દીક્ષા તિથી : સંવત ૨૦૩૧ પોષ સુદ-૬
દીક્ષા દાતા : પૂજ્ય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના પ્રમુખ પદનો તાજ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ બબલદાસ વોરાના શીરે... કર્તવ્યનિષ્ઠ ૨૫ ટ્રસ્ટીઓની નિમણૂક... પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં હોદ્દેદારોની કરાશે વરણી

સંઘ સંરક્ષક : શ્રી હરિભાઈ અમુલખભાઈ ભણસાળી

સંઘ સલાહકાર : શ્રી નરપતલાલ નાગરદાસ વોહેરા
શ્રી ચંદુલાલ છોટાલાલ વોરા (સરકાર)
શ્રી બાબુલાલ રાજમલ દેસાઈ

પ્રમુખ : **શ્રી વાઘજીભાઈ બબલદાસ વોરા**

ટ્રસ્ટીગણ

શ્રી મહાસુખલાલ શાંતિલાલ અદાણી
શ્રી અરવિંદકુમાર છોટાલાલ દેસાઈ
શ્રી હીરાલાલ લહેરચંદભાઈ ભણશાળી
શ્રી મહેન્દ્રકુમાર ચીમનલાલ વોરા
શ્રી સેવંતીલાલ છોટાલાલ વોરા (સરકાર)
શ્રી નાનુભાઈ રમણલાલ સંઘવી
શ્રી રસીકલાલ છોટાલાલ દોશી
શ્રી મહાસુખલાલ ભીખાલાલ સંઘવી
શ્રી દિનેશકુમાર નરપતલાલ અદાણી (દાદુ)
શ્રી સેવંતીલાલ કાન્તીલાલ ભણશાળી
શ્રી અરવિંદકુમાર મફતલાલ ધરૂ
શ્રી પંકજકુમાર બાબુલાલ વીરવાડીયા
શ્રી ચીનુભાઈ ગગલદાસ સંઘવી
શ્રી બીપીનભાઈ શાંતિલાલ વોહેરા
શ્રી ચીનુભાઈ ભીખાલાલ મોરખીયા
શ્રી દિનેશભાઈ કીર્તિલાલ વોરા (મંગલમ)
શ્રી અરવિંદકુમાર જ્યંતિલાલ પરીખ
શ્રી ધીરજલાલ ભોગીલાલ માજની
શ્રી પ્રકાશભાઈ નરપતલાલ વોહેરા
શ્રી પ્રવિણચંદ્ર હીરાલાલ વોરા (સુવાસ)
શ્રી રમેશચંદ્ર બબલદાસ શેઠ (ટાઈગર)
શ્રી ભરતભાઈ બબલદાસ વોરા
શ્રી પ્રવિણભાઈ ચીમનલાલ દોશી (ઉંદરાણા)
શ્રી હીંમતલાલ અમરતલાલ વોરા (અમરાઈવાડી)

ગુરુ દક્ષિણામાં સાવ તુચ્છ અને નકામી વસ્તુ આપ !

દીર્ઘ વિદ્યાભ્યાસ અને ઊંડી અધ્યાત્મસાધના પાસેથી શિષ્યે વિદાય માગી. ગુરુએ એને આશીર્વાદ આપ્યા અને કહ્યું કે તારી વિદ્યા અને સાધનાનો નિસ્વાર્થભાવે ઉપયોગ કરીને જીવનને સફળ બનાવજે.

વિદાય લેતી વખતે ભાવનાવિભોર શિષ્યનું ગળું રૂંધાઈ ગયું. એણે કહ્યું, ''ગુરૂદેવ, મારે આપને ગુરૂદક્ષિણા આપવી છે. કઈ વસ્તુ હું આપને ચરણે ધરૂં ?''

ગુરૂએ કહ્યું, ''વત્સ જગતમાં જે સૌથી વધુ વ્યર્થ અને તુચ્છ હોય, તે મને દક્ષિણારૂપે આપ.''

શિષ્ય વિચારમાં પડ્યો આવી તે કઈ ગુરૂદક્ષિણા આપી શકાય ? પરંતુ ગુરૂની આજ્ઞા શિરોધાર્ય છે એમ માનીને એ સૌથી વ્યર્થ વસ્તુની શોધમાં નીકળ્યો. એણે વિચાર્યુ કે આ ધરતીની માટી કશાય કામની નથી. એ ઊડે તો વસ્ત્રો મલીન થાય, કોઈ આંધીમાં ઊડે તો આખું આકાશ ધૂળિયું બને. લોકો પણ એના પર પગ મૂકીને ચાલતા હોય છે. આવી નકામી, ઠેબે આવતી માટીથી બીજી કઈ વસ્તુ તુચ્છ હોઈ શકે ?

શિષ્ય માટી લેવા માટે નીચે વળ્યો, ત્યારે માટી બોલી, ''અરે, તું મને તુચ્છ સમજે છે ? તને ખ્યાલ છે કે આ જગતની સર્વ સમૃદ્ધિ મારામાંથી પ્રગટ થાય છે. મારા વિના વૃક્ષ તો સું, નાનો છોડ પણ ન ઊગે ! તને ખ્યાલ હશે કે પ્રકૃતિ વિના માનવીનું અસ્તિત્વ ટકે તેમ નથી. મારા વિના મોટી-મોટી ઈમારતો ન રચી શકાય. આ જગતમાં જે કંઈ રૂપ, રસ અને સુગંધ છે, એ બધું મારે કારણે છે. સમજ્યો !''

શિષ્યને પોતાની ક્ષતિ સમજાઈ. એ આગળ વધ્યો. એના પગે પથ્થર અથડાયો. તત્કાળ ચિત્તમાં વિચાર સ્ફૂર્યો કે આ પથ્થરનો કશો ઉપયોગ નથી. એ ધરતી પર એમને એમ પડ્યો રહે છે અને માણસના પગમાં નકામો, આડો આવીને અથડાય છે. લાવ, આ તદ્દન નકામાં, બિનજરૂરી અને તુચ્છ એવા પથ્થરને લઈ જાઉં.

શિષ્ય પથ્થર લેવા માટે જરા નીચે નમ્યો, ત્યારે પથ્થરમાંથી અવાજ આવ્યો, ''ઓહ, તમે આટલા સમર્થ જ્ઞાની થઈને મને સાવ નકામો માનો છો ? જરા કહેશો ખરા કે તમારાં મંદિરોમાં પ્રભુની પ્રતિમા શેમાંથી બનેલી હોય છે ? તમારી ઊંચી ઊંચી ઈમારતો અને નિવાસનાં સ્થાનો પથ્થર વિના બને ખરાં ! અરે, જ્યાં તમે વિદ્યાભ્યાસ કર્યો એ આશ્રમની દિવાલો શેની બનેલી છે ? અને તમે મને તુચ્છ માનો છો !''

શિષ્યને આ વાત સાચી લાગી. પથ્થર લેવા લંબાવેલો હાથ અટકી ગયો, પણ સાથોસાથ એના મનમાં વિચારોનો વંટોળ જાગ્યો. જો માટી અને પથ્થર પણ આટલા બધા ઉપયોગી છે, તો જગતમાં બીજી કઈ ચીજ વ્યર્થ અને તુચ્છ હોય ? હકીકતે તો

આ સૃષ્ટિનો પ્રત્યેક પદાર્થ પોતપોતાની રીતે ઉપયોગી છે, તો પછી તુચ્છ શું ? ખરેખર તો વ્યર્થ અને તુચ્છ એ છે કે જે બીજાને વ્યર્થ અને તુચ્છ માને છે !

બાહ્ય જગતને જોતાં શિષ્યને પોતાના ભીતરમાં નજર ફેરવી અને જોયું તો ખ્યાલ આવે કે મારી અંદર રહેલું અહંકારનું તત્વ જ એવું છે કે જેનો કોઈ ઉપયોગ નથી. એ તુચ્છ છે અને વ્યર્થ પણ છે.

શિષ્ય પાછો ફર્યો અને ગુરૂના ચરણમાં પડીને કહ્યું, ''આપને ગુરૂદક્ષિણા રૂપે હું વ્યર્થ અને તુચ્છ એવો મારો અહંકાર સમર્પિત કરું છું.''

સાભાર : કુમારપાળ દેસાઈ

સમર્થ, યુગપ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શિષ્યરત્ન

પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી સિધ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા.,
પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી વિધ્વતરત્નવિજયજી મ.સા.
આ તેજસ્વી બેલડી તા. ૧૪-૭-૨૦૧૬ ના રોજ કુશલગઢ નગરે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરશે.

આધ્યાત્મિક પથના અભિનેતા, વિશ્વ વિજેતા પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ સંવત ૧૯૨૦-૧૯૨૬-૧૯૩૦-૧૯૩૫-૧૯૫૪ આમ પાંચ ચાતુર્માસ રતલામ નગરે સંપન્ન કર્યા હતા. એજ રતલામ નગરમાં તેમના છઠ્ઠા વારસ પૂજ્ય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ઈ.સ. ૨૦૧૬ ના વર્ષના ચાતુર્માસ અંગે તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬ ના રોજ પાવન પધરામણી કરી રહ્યા છે.

ચાતુર્માસ યાદી ભાગ-૧

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદવિજયજી

મ.સા. આદિ મુનિમંડળ... રતલામ (મ.પ્ર.)

મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - ભાંડવપુર (રાજ.)
મુનિરાજ શ્રી વીરરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - જોધપુર (રાજ.)
મુનિરાજ શ્રી સિધ્ધરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - કુશલગઢ (રાજ.)
મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - ઈન્દોર (ગુમાસ્તાનગર)
મુનિરાજ શ્રી સંયમરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - વિજયવાડ
મુનિરાજ શ્રી અજીતસેન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા-પાલીતાણા

શ્રમણીવૃંદ

સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી આદિઠાણા - નીમચ (મ.પ્ર.)
સાધ્વીજી શ્રી આત્મદર્શનાશ્રીજી આદિઠાણા - નેલ્લોર (આંધ્ર)
સાધ્વીજી શ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી આદિઠાણા - જોધપુર (રાજ.)
સાધ્વીજી શ્રી અનંતદ્રષ્ટાશ્રીજી આદિઠાણા - અમદાવાદ (ગુજ.)
સાધ્વીજી શ્રી અવિચલદ્રષ્ટાશ્રીજી આદિઠાણા - બડનગર (મ.પ્ર.)
સાધ્વીજી શ્રી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી આદિઠાણા - આણંદ (ગુજ.)
સાધ્વીજી શ્રી શાસનલતાશ્રીજી આદિઠાણા - પાંથેડી (રાજ.)
સાધ્વીજી શ્રી દર્શનકલાશ્રીજી આદિઠાણા - મુંબઈ (મહા.)
સાધ્વીજી શ્રી વિજ્ઞાનલતાશ્રીજી આદિઠાણા - આહોર (રાજ.)
સાધ્વીજી શ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી આદિઠાણા - રાણાપુર (મ.પ્ર.)
સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી આદિઠાણા - નવાવાડજ (ગુજ.)
સાધ્વીજી શ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી આદિઠાણા - મોટેરા (ગુજ.)
સાધ્વીજી શ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી આદિઠાણા - જાલોર (રાજ.)
સાધ્વીજી શ્રી પ્રિતિદર્શનાશ્રીજી આદિઠાણા - નાગદા જંકશન (મ.પ્ર.)
સાધ્વીજી શ્રી સ્વયં પ્રભાશ્રીજી આદિઠાણા - શંખેશ્વર (ગુજ.)
સાધ્વીજી શ્રી અમિતદ્રષ્ટાશ્રીજી આદિઠાણા - સુરત (રાજ.)
સાધ્વીજી શ્રી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી આદિઠાણા - અલગર
સાધ્વીજી શ્રી વિધ્વતગુણાશ્રીજી આદિઠાણા - અમરાઈવાડી (ગુજ.)

વેદલીયા મફતલાલ ભાણજીભાઈ પરિવાર દ્વારા ડીસાનગરે શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ મહાપૂજન અને સંઘ સ્વામિવાત્સલ્ય યોજાયું

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞા-આશીર્વાદ અને નિશ્રામાં ડીસા સ્થિત ધર્મનિષ્ઠ, પ્રખર જીવદયા પ્રેમી, સુશ્રાવક શ્રી હસમુખભાઈ મફતલાલ વેદલીયા તથા સુશ્રાવિકા શ્રીમતી વર્ષાબેન હસમુખભાઈ વેદલીયાએ તાજેતરમાં ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ તીર્થ યાત્રા, ઉપધાન તપની આરાધના અને નવાણુયાત્રા વિગેરે તપ આરાધના સંપન્ન કરી હતી. જેની અનુમોદનાર્થે સંવત ૨૦૭૨ ના વૈશાખ સુદ-૯ ને રવિવાર તા. ૧૫-૫-૨૦૧૬ ના રોજ વેદલીયા મફતલાલ ભાણજીભાઈ પરિવાર ધ્વારા ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણીનું આયોજન કરાયું હતું.

તા. ૧૫-૫-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે શ્રી અજીતનાથ ગૃહચૈત્ય ડીસા ખાતે વિધિકારક શ્રી કૃનાલભાઈ સુરાણી ધ્વારા વિધિ સહિત શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ મહાપૂજન ભણાવાયું હતું. આ મહાપૂજનમાં પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી બોધિરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ સાધુ ભગવંતોએ પધરામણી કરી હતી અને આમંત્રિત મહેમાનો તેમજ સકળ સંઘે ઉપસ્થિત રહી પૂજનનો ઠાઠ જમાવ્યો હતો. પૂજનમાં રૂા. ૧૦ ની પ્રભાવના કરાઈ હતી અને બપોરે જૈન બોડીંગ ડીસા ખાતે શ્રી સંઘ સ્વામિ વાત્સલ્યનું આયોજન કરાયેલ હતું. થાળી ધોઈ પીનાર આરાધકોનું રૂા. ૧૦ ધ્વારા બહુમાન કરાયું હતું.

વેદલીયા પરિવાર સહિત આમંત્રિત સગા-સ્નેહીઓ ડીસાથી સાંજે પ્રસ્થાન કરી, શ્રી રાજેન્દ્રસૂરી નવકારધામ શંખેશ્વર ખાતે પહોંચ્યા હતા અને રાત્રી સ્થિરતા કરી હતી. તા. ૧૬-૫-૨૦૧૬ ના રોજ સવારે યુગ યશ સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ હીતશિક્ષા આપી હતી. ત્યારબાદ સહુ દાદાના દરબારે પહોંચ્યા હતા અને ઠાઠમાઠથી સ્નાત્ર પૂજા ભણાવેલ હતી. બપોરે જમણને ન્યાય આપી થોડા આરામ બાદ બપોરે ત્રણ કલાકે સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના આજ્ઞાનુવર્તીની માલવમણી પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં પ્રવચન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. ત્યાં વેદલીયા પરિવાર અને સગા-સ્નેહીઓ ધ્વારા રૂા. ૫૦ નું સંઘ પૂજન કરાયું હતું.

ઉલ્લેખનીય છે કે જીવદયા નું ઉત્કૃષ્ટ કાર્ય કરતા અને બારેમાસ ઉકાળેલું પાણી પી એટલે કે લગભગ ક્યારેય છુટે મોઢે આહાર વાપરતા નથી તે ધર્મનિષ્ઠ શ્રી હસમુખભાઈ વેદલીયાની જેટલી અનુમોદના કરીએ તેટલી ઓછી છે. ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર પણ શ્રી વેદલીયાની અંતઃકરણ પૂર્વક હાર્દિક અનુમોદના કરે છે.

|| श्री आदिनाथाय नमः ||
प्रातः स्मरणीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः
START : 10/6/2016 > END : 16/6/2016
AGE 14 TO 24 YEAR < ONLY BOYS
मध्यप्रदेश में सर्वप्रथमबार
श्री जयन्तसेन म्युझियम - मोहनखेड़ा तीर्थ में
मधुकर संस्कार Gyanayatan-5
10 JUNE TO 16 JUNE - 2016
NON VIOLENCE
TRUTH
NON STEALING
CELIBACY
NON POSSESSION
MSG
स्मरणीय संयोग अविस्मरणीय अवसर
आराधना का आस्वादन
संयम की सरगम
वाचनानो वैभव
विरल वर्तमान उज्जवल भविष्य
अभिषेकनो आनंद
समताभरा सानिध्य : सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, MSG संस्थापक, युग प्रभावक
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर' आदि श्रमण-श्रमणीवृंद
परमोपकारी जन्मदाता माता-पिता...
जय-जिनेन्द्र! आपके कुशलता की कामना करते है
प. पू. गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित
'MSG' में आपके लाड़ले संतानों को भेजने का सुंदरतम् कार्य आपको करना है।
परिणाम प्रभावी एवं परिवर्तनकारी होगा यह हमारा आत्मविश्वास है।
'MSG' का संग : धर्म का रंग एवं
सात्विक जीवन जीने का उमंग प्रदान करेगा।
हम है तैयार... आप न करें विचार...
આ સુખ દુઃખ તો કુદરતનો ક્રમ છે... આ આતમ તો સનાતન છે...
ज्ञानायतन लाभार्थी :
जोधपुर (राज.) निवासी सूर्यप्रकाशजी मिश्रीमलजी भंडारी परिवार
B. M. SHAH - CHENNAI (T. N.)
संचालक: अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार
निमंत्रक : श्री राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन चेरीटेबल ट्रस्ट
ज्ञानायतन में शामिल होनेवाले सभी पुण्यशाली अपना NAME, ADDRESS & CONTACT NO.
निम्न सम्पर्क सूत्रों पर Join MSG Type करके SMS या Whatsapp 1 June तक करें।
शुभ स्थल :
श्री राज राजेन्द्र
जैन तीर्थ दर्शन
जयन्तसेन म्युझियम
मोहनखेडा तीर्थ रोड.
पो. राजगढ, जि. धार (म.प्र.)
07296-235320 / 09425394906
GUJRAT
Paxal Kordiya
09033476842
MADHYA PRADESH
Nayan Kanthed
08085621600
RAJASTHAN
Darshit Jain
09784598844
SOUTH
Kiran Vanigota
08147928849
MAHARASHTRA
Abhishek Vohra
09619169311

कुमकुम सने पगलिये

राष्ट्रसंत श्री की निश्रा में दीक्षोत्सव सम्पन्न

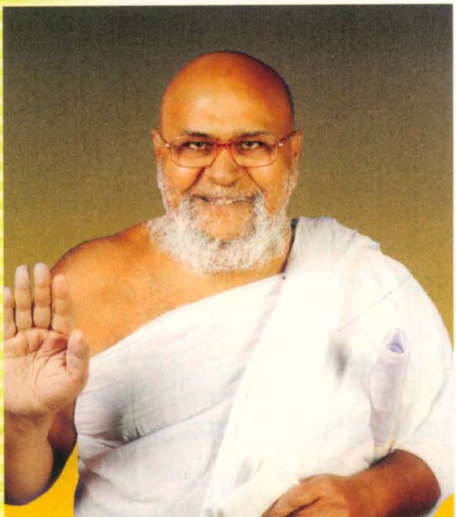

सियाणा । पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वर म.सा. की सियाणा नगर की पुण्य धरा पर दि. 4 मई 2016 को भव्य नगर प्रवेश हुआ । पूज्यश्री के प्रवेश से सभी भक्तों में आनन्द की लहर फैल गई । यहाँ पूज्य गच्छाधिपतिजी के समस्त साधु भगवंतों के साथ दिनांक 4 मई से 11 मई तक रानी बेन्नूर (कर्नाटक) निवासी श्री शेषमलजी नैनमलजी बागरेचा की पुत्री मुमुक्षु रत्ना कु. रविना के दीक्षा महोत्सव में सान्निध्यता प्रदान की । दिनांक 10 मई 2016 पूज्य गुरुदेव की निश्रा में मुमुक्ष बहन का भव्य वरघोड़ा निकाला गया एवं श्री जैन संघवी, ठाणे द्वारा विदाई समारोह में मार्मिक प्रस्तुति दी गई । दिनांक 11 मई को सियाणा एवं रानी बेन्नूर संघ व सैकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थिति में पू. आचार्य श्री ने मंत्रोच्चार के साथ शुभ मुहूर्त में मुमुक्षा कु. रविना बहन को दीक्षा प्रदान की ।

इसके पूर्व मुमुक्षा बहन के निवास स्थान रानीबेन्नूर (कर्ना.)पर दि. 24 अप्रेल से 26 अप्रेल 2016 तक अनेक धार्मिक आयोजन किए गए । जिसमें प्रतिदिन स्नान महोत्सव एवं परमात्मा का अभिषेक, श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री महावीर पंच कल्याणक पूजा, सांझी गीत, मेहंदी वितरण एवं दिनांक 26 अप्रेल 2016 को मुमुक्षा बहन का भव्यातिभव्य वरसीदान का वरघोड़ा निकाला गया एवं श्री राजेन्द्रसूरिजी गुरुपद महापूजन व नवयुवक मंडल, दावणगेरे द्वारा विदाई समारोह में भावभीनी प्रस्तुति दी गई ।

बागरा । पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न वयोवृद्ध मुनिराज श्री जयकीर्तिविजयजी म.सा. का कालधर्म दि. 19 मई को बागरा के श्री राजेन्द्रसूरि आराधना भवन में हो गया । पू. मुनिराजश्री के देवलोक गमन से संपूर्ण त्रिस्तुतिक संघ को अपूर्णीय क्षति हुई है । अपने सांसारिक जीवन में पूज्य मुनिराज बागरा के निवासी थे । आपश्री का सांसारिक नाम पुखराजजी था । आपकी दीक्षा विक्रम संवत 2031 में पौष शुक्ला छठ के दिन योगीराज श्री शांतिविजयजी म.सा. एवं श्री जयंतविजयजी म.सा. की निश्रा में बागरा श्रीसंघ में हुई थी । आप वर्तमान आचार्यश्री के द्वितीय शिष्य थे एवं सुविशुद्ध संयम जीवन के पालक थे । अंतिम समय तक आप तन-मन से स्वस्थ एवं प्रसन्न थे । अंतिम क्षणों में आपको नवकार स्मरण के साथ कालधर्म प्राप्त हुआ जो आपके शुद्ध जीवन की निशानी है।

आप हमेशा सरल स्वभावी, प्रसन्नमुखी एवं गुरुआज्ञा में समर्पित रहते थे । आपकी आत्मा को अरिहंत शासन की प्राप्ति के साथ परंपरा से मोक्ष मंजिल प्राप्त हो ।

जयपुर। आध्यात्मिक संस्कारप्रदायी गुरुवर्या डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी की पावन निश्रा में अ.भा. श्री राजेन्द्रजयन्त जैन सम्यग्ज्ञान कन्या शिविर ट्रस्ट के तत्वावधान में गुलाबी नगरी जयपुर के श्री देरासर दादावाड़ी तीर्थ पर दि. 15 मई 2016 से 25 मई 2016 तक नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जागरण के लिए जैन छात्राओं का ग्यारह दिवसीय शिक्षण-शिविर का भव्य आयोजन किया गया जिसमें कक्षा 6 से लेकर स्नातकोत्तर तक की एवं 45 वर्ष तक की बहनों ने भाग लिया । शिविर में प्रतिदिन बहनों ने सामूहिक ध्वजवंदन, श्री भक्तामर, गुरुगुण, इक्कीसा पाठ, माला जाप, प्रभु-दर्शन-पूजन एवं स्नात्रपूजन आदि धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया ।

नित्य विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली बहनों को दि. 25 मई 2016 को 'सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार' एवं 18 रेंक तक पाने वाली बहनों को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर संचालक-संचालिकाओं एवं शिविर आयोजकों का भी विशिष्ट बहुमान किया गया।

पोटनेर तीर्थ। साध्वीश्री तत्वलताश्रीजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में रायगढ़ जिले के इन्दापुर गाँव के समीप पोटनेर तीर्थ पर दि. 24 अप्रेल 2016 से 1 मई 2016 तक श्री 'जयन्त स्नेह कन्या शिविर' का आयोजन किया गया। संस्कार शिविर का उद्घाटन अखिल भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष शा. रमेशभाई धरू, श्री हिम्मतभाई थराद, अ.भा.श्री रा. जैन महिला परिषद की शिक्षामंत्री श्रीमती सविता बहन एवं पोटनेर तीर्थ के उपाध्यक्ष निहालचन्दजी, इन्दापुर के अध्यक्ष श्री गणेशमलजी आदि ने किया। शिविर में प्रतिदिन भक्तामर, गुरु गुण इक्कीसा पाठ, अष्टप्रकारी पूजा आदि धार्मिक क्रियाओं के साथ 14 राजलोक, लेश्या का स्वरूप, चैत्यवंदन संबंधित 10जिक का स्वरूप अपनी दुनिया जीवों की जयणा आदि विषयों पर ज्ञान प्रदान किया गया एवं भाई गणेश द्वारा 'इम्पावरमेंट ऑफ गर्ल्स' व श्री जे.के. संघवी द्वारा 'नरक का स्वरूप' प्रोजेक्ट द्वारा बालिकाओं को स्वास्थ्य एवं आत्मनिर्भरता संबंधी प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के दौरान अनेक बहनों ने आजीवन भोजन त्याग एवं जमीकंद त्याग, आदि के नियम लिये। शिविर के समापन पर सभी बहनों द्वारा गौशाला में गायों को गुड़ दिया गया। शिविर में 70 बालिकाओं ने भाग लिया जिनका अंतिम दिन भव्य विदाई समारोह किया गया।

समापन में अ.भा.श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद के प्रांतीय कोषाध्यक्ष शा वीरेन्द्रभाई राठौड़, बड़नगर, अ.भा.रा.न.प. के शिक्षामंत्री शा. नीरेजभाई सुराणा इंदौर, रायगढ़ जिले के रोहा श्रीसंघ के अध्यक्ष शा. दिलीपभाई रोहा तालुका के नगर सेवक शा. राजभाई जैन, मसाला श्रीसंघ के अध्यक्ष सुरेशभाई माहड़, श्रीसंघ के अध्यक्ष अशोकभाई कोलाड़, श्रीसंघ के अध्यक्ष शा. अशोकभाई आदि आसपास गांव के अनेक श्रीसंघ के सदस्यों की उपस्थिति रही।

परिषद प्रांगण से

महिला परिषद के चुनाव सम्पन्न

भारती पोरवाल
अध्यक्ष

हेमा हिंगड़
उपाध्यक्ष

निधि संघवी
सचिव

मंदसौर। श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा मंदसौर के चुनाव साध्वी श्री सूर्योदयश्रीजी, सा.श्री कैलाशश्रीजी एवं सा.श्री विपुलदर्शनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुए जिसमें श्रीमती भारती पोरवाल अध्यक्ष, श्रीमती हेमा हींगड़ उपाध्यक्ष,श्रीमती निधी संघवी कोषाध्यक्ष, श्रीमती सुनीता खाबिया कोषाध्यक्ष, श्रीमती अंशु बाफना सहसचिव, श्रीमती सरोजबेन चपड़ोद सहकोषाध्यक्ष, श्रीमती शकुन्तला सोनगरा शिक्षामंत्री के पद पर नियुक्त की गई।

इसके साथ ही श्रीमती गुणमाला मेहता, श्रीमती कुसुमबेन लोढ़ा पौषधशाला व्यवस्था, श्रीमती सरेकुंवर डोसी, श्रीमती पद्मा जैन आयंबिल देखरेख, श्रीमती निर्मला लोढ़ा, श्रीमती विजया लोढ़ा, श्रीमती लीलाबेन चपड़ोद केन्द्रीय प्रतिनिधि एवं श्रीमती ममता मारू , श्रीमती अलका चण्डावला व श्रीमती ललीता कर्नावट को प्रचार मंत्री नियुक्त किया गया ।

राजगढ़ । पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में दि. 10 जून से 16 जून तक श्री जयन्तसेन म्युजियम - मोहनखेड़ा तीर्थ पर 14 से 24 आयुवर्ग के बालकों के लिये 'मधुकर संस्कार ज्ञानायतन भाग-5' का आयोजन किया जा रहा है । जिसके लाभार्थी जोधपुर निवासी श्री सूर्यप्रकाश मिश्रीमलजी भंडारी परिवार है । ज्ञानायतन में भाग लेने हेतु गुजरात के श्री पक्षाल कोरडिया (08033476842), म.प्र. में श्री नयन कांठेड़ (08085621600), राजस्थान में श्री दर्शित जैन (09784598844), दक्षिण भारत में श्री किरण वाणीगोता (8147928849) एवं महाराष्ट्र में श्री अभिषेक वोहरा (9819469341) से सम्पर्क करें ।

आवों सब रतलाम चार्तुमास

कृपा जिनेश्वर देव की,
जड़मति होत् सुजान ।
जयन्तसेन आशीष मिल्यो,
है, सुरि राजेन्द्र समान 1
साल उन चालिस बाद,
स्वर्णिम अवसर यो आयों है ।
जयन्तसेन गुरु को,
चार्तुमास पायों है..... 2
हाथ जोड़ शीष नमावा हाँ,
कर विनय गुरु सम्पदा ने बुलावाँ हाँ ।
के आवों सब मिल ठाँठ रचावाँगा,
गुरु जयन्त निश्रा में जिनशासन हर्षावाँगा ।
जिन शासन हर्षावाँगा 3
गुरु मेरा सूरि राजेन्द्र यतीन्द्र का साया है,
गुरु जयन्तसेन मनभाया है ।
वाणी मेरे गुरु की फलित है,
श्रीमुख से त्रिस्तुतिक संघ चलित है ।
तो आवों सब मिल ठाँठ रचवाँगा,
गुरु जयन्त निश्रा में जिन शासन हर्षावागाँ
जिन शासन हर्षावाँगा 4
आचार्य कई किये चार्तुमास
सूरि राजेन्द्र यतीन्द्र का भी है इतिहास ।
अभिधान राजेन्द्र की धरती है,
जिन शासन की महिमा झरती हैं ।
तो आवों सब जन् रतलाम चार्तुमास,
के सब मिल ठाँठ रचावाँगा ने ।
गुरु जयन्त निश्रा में जिन शासन हर्षावाँगा ।
जिन शासन हर्षावाँगा
जिन शासन हर्षावाँगा 5

– सुनिल कांतिलाल जैन (सरसीवाला)
7/548 कस्तुरबा नगर, रतलाम (म.प्र.)

गच्छाधिपति द्वारा उज्जैन को शिक्षा महाविद्यालय की सौगात

उज्जैन । राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरिजी म.सा. द्वारा उज्जैन में बी.एड. और डी.एल. एड. के अध्ययन के लिए श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना करके उज्जैन के शिक्षा जगत को एक और सौगात दी है । इस शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना के लिए आचार्यश्री ने गत वर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी थी और तभी से इसकी प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई थी । समस्त आवश्यक औपचारिकताओं की पूर्ति के पश्चात् राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने उक्त शिक्षा महाविद्यालय में बी.एड. एवं डी.एल.एड. पाठयक्रम को सत्र 2016-17 से प्रारम्भ करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है । इच्छुक छात्र प्रवेश के लिए प्रवेश प्रक्रिया में सम्मिलित होकर अपना स्थान सुरक्षित करवा सकते हैं । उक्त शिक्षा महाविद्यालय के उद्घाटन के लिये इसके संस्थापक-मार्गदर्शक राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. से उज्जैन पधारने की आग्रह भरी विनती करने के लिए श्री अ.भा. जैन समाजोत्थान ट्रस्ट (रजि.) का ट्रस्ट मंडल शीघ्र ही राजस्थान में उनकी सेवा में जाने वाला है ।

स्मरण रहे राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरिजी म. इस शिक्षा महाविद्यालय से पूर्व सन् 2013 में 10 जुलाई को श्री राजेन्द्रसूरि शताब्दी शोध संस्थान की सौगात प्रदान कर चुके हैं । आज इस शोध संस्थान में विभिन्न धर्म-दर्शनों से सम्बन्धित लगभग बारह हजार ग्रंथ तथा लगभग दो हजार हस्तलिखित ग्रंथ हैं । यहां विश्व के सभी धर्म-दर्शनों पर शोध की सुविधा उपलब्ध है ।

शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रसंत आचार्यश्री का यह एक और महत्वपूर्ण योगदान है और आगे इसके विकास की भी योजना है । यह जानकारी ट्रस्ट सचिव श्री सुशील गिरिया द्वारा दी गई ।

श्री राजराजेन्द्र विद्या मन्दिर का उत्कृष्ट परिणाम

खाचरौद । श्री राजराजेन्द्र विद्या मन्दिर की हायर सेकेण्डरी बोर्ड परीक्षा का परिणाम अत्यन्त उत्कृष्ट रहा इससे विद्यार्थियों व पालकों में प्रसन्नता है । कक्षा 12 में सर्वाधिक अंक रजत राजकुमार कोठारी 421/500 (84 प्रतिशत) कामर्स ग्रुप व दूसरे स्थान पर सचिन दिनेश गाजवा 417/500, हर्षित, संजय नाहर व तानू राजेन्द्र भारती ने साइंस ग्रुप में प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त किये ।

विद्यालय के इस श्रेष्ठ परीक्षाफल पर शिक्षण समिति अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द मेहता, डायरेक्टर श्री श्यामसुन्दर भट्ट, प्राचार्य श्री जितेन्द्र भटेवरा, सचिव श्री सुनील खेमसरा, कोषाध्यक्ष श्री अनिल वागरेचा ने विद्यार्थियों को व शिक्षक परिवार को शुभकामनाएँ व बधाई देकर प्रसन्नता व्यक्त की ।

हुबली । श्री नीलेशकुमार छगनराजजी छत्रगोता द्वारा श्री पैराऊ जैन संघ की प्रतिष्ठान निर्देशिका के प्रथम संस्करण 'गागर में सागर' निर्देशिका का विमोचन समाज व संघ के वरिष्ठजनों की उपस्थिति में किया गया ।

पारा । नगर में महावीर जन्मोत्सव के तीसरे व अंतिम दिन चैत्र पूर्णिमा के अवसर पर गुरु ज्ञान मंदिर और महावीर भवन में दिनभर विभिन्न धार्मिक गतिविधियाँ और क्रियाएँ हुई । जैन समाज के 40 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास तथा अन्य तपस्याएँ कीं । इन तपस्वियों को संघवी वाली बाई सागरमल छाजेड़ परिवार पारा द्वारा महावीर भवन में पारणा कराया गया ।

जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री मनोहरलाल छाजेड़ ने बताया कि शुक्रवार को करीब 40 आराधकों को गुरुज्ञान मंदिर में चार घंटे लगातार विभिन्न धार्मिक क्रियाएँ समाज के सुश्रावक श्री अशोक छाजेड़, श्री मौसम छाजेड़ तथा श्री कमलेश भंडारी ने करवाई ।

साथ ही इस पर्व के महत्व की अनुमोदना भी की । सुबह 11 बजे जैन समाज ने शाश्वत तीर्थ सिद्धाचलजी के चित्र के साथ शोभायात्रा निकाली । जिसमें समाज के प्रत्येक घर से गहुलियां भी की गईं । इसके बाद शोभायात्रा गुरु ज्ञान मंदिर पहुंची जहाँ देववंदन की क्रिया हुई । शुक्रवार सुबह से ही भक्तामर पाठ, गुरुगुण इक्कीसा, गुरुगुणानुवाद से चैत्र पूर्णिमा पर्व की शुरूआत हुई । इसके बाद राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, तरुण परिषद एवं बालिका परिषद ने नगर में प्रभातफेरी निकाली । पूर्णिमा के शुभ अवसर पर दादा आदिनाथ भगवान की सुंदर अंगरचना की गई । सुबह संघवी वालीबाई सागरमल छाजेड़ द्वारा स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया ।

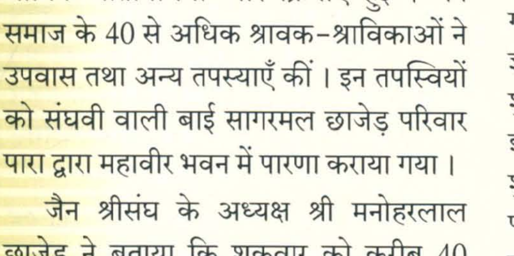

पूज्य गच्छाधिपति
आचार्यश्री से आशीर्वाद
लेते हुए,
पूर्व केन्द्रीय मंत्री
श्री कांतिलालजी भूरिया

धूमधाम से मनाया महावीर जन्म कल्याणक

बड़ावदा । तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी का 2614 वां जन्म कल्याणक दिवस सकल जैन समाज द्वारा हर्षोल्लास से व खुशनुमा माहौल में मनाया गया । इस दौरान समाजजनों में अपार उत्साह देखा गया । प्रातः 9.30 बजे दादावाड़ी से एक भव्य चल समारोह निकला । बैंडबाजों, ढोल धमाकों के साथ निकले चल समारोह में भगवान महावीर के चित्र पर समाजजनों ने गहुली की । महिला मण्डल व बालिका मण्डल ने रंग बिरंगे परिधान पहनकर चल समारोह की शान बढ़ाई। समाज के शिरीष सकलेचा ने जानकारी देते हुए बताया कि महिला परिषद की महिलाएँ माँ त्रिशला के साथ 14 सपनों के प्रतीक चिन्ह लिए चल रही थीं । चल समारोह में नृत्य कर हर कोई हर्ष बिखेर रहा

था । जगह - जगह स्वागत व संघ पूजा की गई ।

जिन मन्दिर में दर्शन करने के पश्चात चल समारोह पुनः दादावाड़ी पहुँचा । जहाँ चैत्य वन्दन आरती हुई । श्रीसंघ का स्वामिवात्सल्य हुआ । दोपहर में जिन मन्दिर में पंच कल्याणक पूजन महिला परिषद द्वारा पढ़ाई गई । रात्रि में प्रभु भक्ति के आयोजन हुए ।

भक्ति भाव से की ओलीजी की आराधना

पारा । राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से पारा जैन समाज में नवदिवसीय शाश्वत नवपद ओलीजी तप की आराधना भक्ति भाव से सम्पन्न हुई । नवपद ओलीजी तप की आराधना श्राविकाओं मुक्ति अतुल भंडारी, रश्मि राजेश कोठारी, पूर्वी श्रेयांस सकलेचा रतलाम तथा मंजुबाला धनराजमल कोठारी ने की । नवयुवक परिषद के महामंत्री श्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि इस कठोर

आराधना में नौ दिनों तक स्नात्र पूजन, देववंदन तथा पद के हिसाब से प्रदिक्षणा एवं खमासणा

दिए जाते हैं। नौ दिनों तक नवकार महामंत्र की माला भी इस आराधना में गिनी जाती है । शनिवार को इन तपस्वियों का पारणा स्थानीय महावीर भवन में कराया गया ।

शशिकांत सकलेचा
अध्यक्ष

श्री सौ.वृ.त्रि. जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट मण्डल (राजेन्द्र उपाश्रय) कुँवर मण्डली जूनी कसेरा बाखल, इंदौर की सभा में कार्यकारिणी के चुनाव में श्री शशिकांत सकलेचा निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए । श्री नरेन्द्र बोहरा (रानापुरवाले) सचिव श्री उत्सवलाल जैन उपाध्यक्ष, श्री धनराज संघवी कोषाध्यक्ष, श्री रवि रांका को सह-सचिव के लिये मनोनीत किया गया।

ट्रस्ट मण्डल की कार्यकारिणी में पारसकुमारजी बया, समरथमलजी जैन, महेन्द्रजी भण्डारी, सुरेन्द्रजी सुराणा, राजेन्द्रजी रूणवाल, नीरजजी सुराणा, अनिलजी सकलेचा, कोमलचंदजी मेहता, ज्ञानचंदजी व्होरा, सुरेन्द्रजी पोरवाल, वीरेन्द्रजी लुक्कड़, हीरालालजी बाफना, राजेन्द्रजी पारेख, एस.एम. संघवी, महेन्द्र जैन (बागवाला), दिनेश मेहता को लिया गया । उक्त जानकारी श्री नरेन्द्र बोहरा ने दी।

सुराणा को 'बेस्ट ड्रीम होम अवार्ड'

जावरा । जावरा के इंजीनियर व आर्किटेक्ट श्री राजेन्द्र सुराणा पिता शांतिलाल सुराणा को बेस्ट ड्रीम होम अवार्ड से पुरस्कृत किया गया ।

शुक्रवार को भोपाल में आई.सी.आई. भोपाल व अल्ट्राटेक लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्हें यह सम्मान दिया गया । म.प्र. के 140 प्रतियोगियों में से 25 प्रतियोगियों का चयन हुआ जिसमें श्री सुराणा रतलाम के साथ मंदसौर, नीमच, झाबुआ, अलीराजपुर व गरोठ झोन से चयनित हुए ।

सुराणा की बेटी पलक सुराणा भी अपने पिता के साथ कार्य में उनका सहयोग कर रही है ।

Tarun Parisad surat
अहो जिनशासनम्

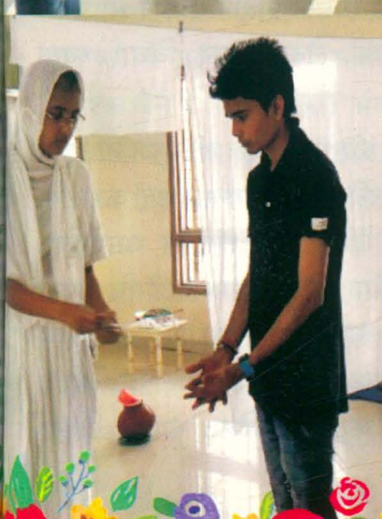
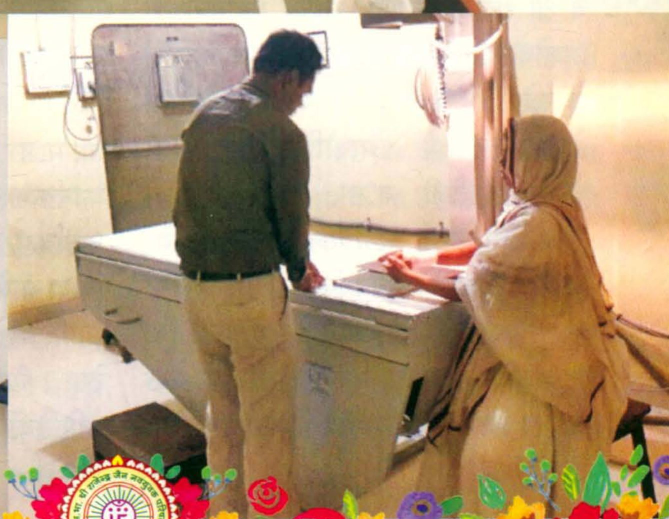

आचार्य श्री का प्रवेश धूमधाम से होगा

राजगढ़ । राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा गुजरात व राजस्थान के विभिन्न नगरों में धर्म प्रभावना कर चातुर्मास हेतु मध्यप्रदेश में पधार रहे है । इस हेतु मध्यप्रदेश श्रीसंघों एवं परिषद परिवार की बैठक श्री जयंतसेन म्युजियम में मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई। बैठक का शुभारंभ प्रभु श्री पार्श्वनाथ व दादा गुरुदेव के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलन म.प्र. के शिक्षा मंत्री श्री पारस जैन, परिषद राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश धाडीवाल व श्री राजेन्द्र सुराणा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल व प्रदेश श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुरेश तांतेड़ ने किया। पश्चात अतिथियों ने उज्जैन में आयोजित साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित कन्या ज्ञानायतन संस्कार शिविर के पोस्टर का विमोचन किया । इस अवसर पर मुनिश्री ने मार्गदर्शन देते हुए कहा कि आचार्यश्री का म.प्र. मंगल समारोह में कुछ अनूठा कार्य होना चाहिये जिससे उपस्थित गुरुभक्त कुछ संदेश लेकर जायें । इसमें धार्मिकता, संस्कृति, सामाजिक समरसता का अदभुत जोड़ हो । मालवा के गुरुभक्तों की गुरुभक्ति अनूठी है जिन्होंने प्रदेश में गुरुदेवश्री का प्रवेश म.प्र. सीमा पर आयोजित कर एक नई मिसाल कायम की है जो अद्वितीय है । इस अवसर पर मंत्री श्री पारस जैन ने कहा कि मालवा के श्रीसंघों का यह आयोजन अनुकरणीय है यहाँ के गुरुभक्त गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित हैं । साथ ही रमेश धाड़ीवाल, श्री अशोक श्रीश्रीमाल एवं उपस्थित विभिन्न श्रीसंघों के प्रतिनिधियों ने भी प्रवेश समारोह को लेकर अपने विचार व्यक्त किये।

म.प्र. श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुरेश तातेड़ ने कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए कहा कि कार्यक्रम ऐतिहासिक रूप से आयोजित किया जायेगा । जिसमें समस्त श्रीसंघ अपनी भागीदारी कर गुरुभक्ति का उत्कृष्ट परिचय देगा । बैठक में समारोह को लेकर विभिन्न समितियों का गठन किया गया । जिसमें

कार्यक्रम संयोजक श्री सुरेश तांतेड़, श्रीसंघों से संपर्क समिति प्रमुख श्री रमेश धाडीवाल व श्री अशोक श्रीश्रीमाल, भोजन निर्माण समिति प्रमुख श्री धर्मचंद बोहरा इंदौर, वित्त समिति श्री प्रकाश तलसेरा पारा व श्री वीरेन्द्र राठौड़ बड़नगर, प्रचार प्रसार प्रमुख श्री दिनेश मामा एवं भोजन वितरण व्यवस्था हेतु राजेन्द्र जैन महिला व तरुण परिषद को मनोनीत किया गया एवं बैठक में प्रस्तावित प्रस्तावों को समस्त श्रीसंघों द्वारा अनुमोदित किया गया । बैठक का संचालन नवयुवक परिषद प्रदेश महामंत्री श्री मोहित तांतेड़ ने व आभार परिषद राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्री नीरज सुराणा ने किया ।

तनिश्क जैन प्राविण्य सूची में

दिव्यांश लहरी

तनिष्क जैन

खाचरौद । श्री राजराजेन्द्र विद्या मन्दिर की हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा का परिणाम अत्यन्त उत्कृष्ट रहा इससे विद्यार्थियों व पालकों में प्रसन्नता है । सर्वाधिक अंक तनिश्क जैन ने 566 (600) अंक प्राप्त कर जिले की प्राविण्य सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त किया । दिव्यांश लहरी 533/600 व तीसरे स्थान पर हरिओम नन्देड़ा ने 526/600 अंक प्राप्त किये ।

विद्यालय के इस श्रेष्ठ परीक्षाफल पर शिक्षण समिति अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द मेहता, डायरेक्टर श्री श्यामसुन्दर भट्ट, प्राचार्य श्री जितेन्द्र भटेवरा व पदाधिकारी श्री अनिल वागरेचा व श्री सुनील खेमसरा ने विद्यार्थियों को व शिक्षक परिवार को बधाई देकर प्रसन्नता व्यक्त की एवं तनिश्क जैन को पुरस्कृत करने की घोषणा की । यह विदित है कि यह विद्यालय राष्ट्रसंत आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी महाराज सा. की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से संचालित किया जा रहा है।

स्व. श्री लालचन्द भण्डारीजी की स्मृति में गुरुदेव के 80 वें जन्मोत्सव पर यह घोषणा की गई थी कि जो छात्र प्राविण्य सूची में स्थान प्राप्त करेगा उसे 80 ग्राम चाँदी का सिक्का पुरस्कार स्वरूप दिया जायेगा । विद्यालय के वरिष्ट शिक्षक श्री अमित खेमसरा ने भी इस अवसर पर इस विद्यालय के 10 निर्धन विद्यार्थियों को निःशुल्क पढ़ाने की घोषणा की।

दीक्षार्थियों का अभिनन्दन

झकनावदा (मनीष कुमट)। झकनावदा की मिट्टी में पले बड़े मुमुक्षु भाई सचिन कांसवा की तेरह जुलाई 2016 को गुहाटी में तेरापंथ धर्मसभा के आचार्य महाश्रमणजी की दीक्षा सम्पन्न होना है । इस अवसर पर झकनावदा नगर में 15 मई को तेरापंथ समाज द्वारा भाई सचिन कांसवा का अभिनन्दन समारोह रखा गया । जिसमें सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट कर दीक्षार्थी की अनुमोदना की । इस कार्यक्रम में स्थानीय त्रिस्तुतिक मूर्ति पूजक जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री मनोहरलालजी राठौड़, श्री झमकलाल माण्डोत मंदिरजी व्यवस्थापक श्री कनकमल माण्डोत, शम्भू सेठिया, विमल सेठिया, अर्जुन सेठिया ने मुमुक्षु भाई सचिन कांसवा को अभिनंदन पत्र भेंट कर शाल श्रीफल भेंट किया । दीक्षार्थी के पिता कान्तिलालजी कांसवा को त्रिस्तुतिक मूर्ति पूजक श्रीसंघ की ओर से शैतानमल कुमट द्वारा साफा बांधकर अभिवादन किया गया ।। वहीं अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् के अध्यक्ष मनीष कुमट, दिनेश माण्डोत, पारस राठौड़, उत्तम राठौड़, मितेष कुमट, विक्की सेठिया, लालु माण्डोत, नयन माण्डोत, मोनु सेठिया, पीयुष जैन ने दीक्षार्थी भाई सचिन कांसवा एवं कोलकत्ता से पधारे मुमुक्ष रूपेशजी सेठिया का शाल, श्रीफल से अभिनन्दन पत्र भेंट कर जैन धर्म को आगे बढ़ाने की मंगलकामना की । महिला परिषद की अध्यक्ष श्रीमती सुनिता माण्डोत, उपाध्यक्ष श्रीमती शोभा सेठिया, श्रीमती पूर्णिमा माण्डोत, श्रीमती कमलाबाई माण्डोत, श्रीमती मीनाक्षी कुमट, श्रीमती अंगूरबाला राठौड़, श्रीमती छमुबाई माण्डोत, श्रीमती गीताबाई माण्डोत ने भी मुमुक्ष भाई को शाल, श्रीफल व अभिनंदन पत्र भेंट कर दीक्षार्थी की अनुमोदना की इसी के साथ सचिन के साथ दीक्षा ले रहे मुमुक्ष रूपेश सेठिया का भी अभिनंदन किया गया।

नीमवाला उपाश्रय पर रिकार्ड तपस्याएँ जारी

रतलाम । राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा. के मंगल स्वास्थ्य की कामना में स्वसंचालित वार्षिक धर्मानुष्ठान 'गुरु रहे सदा स्वस्थ' में धर्माराधकों द्वारा नियमित धर्माराधना की अटूट कड़ी में महामंत्र नवकार जाप, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के जाप व श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के जाप के अलावा सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रभु पूजन तथा पौषध की रिकार्ड तोड़ तपस्याएँ जारी है।

धर्मानुष्ठान संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री रुचिदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की प्रेरणा से वर्तमानाचार्य के मंगल स्वास्थ्य की कामना करते हुए उनके 80 से 81 वे वर्ष (9 दिसम्बर 2015 से नवम्बर 2016) तक समर्पित वर्ष में प्रत्येक साधक को नियमित 5 माला नवकार, प्रति सुदी 10 व वीदी 15 को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की 20 माला के जाप तता प्रति सुदी 7 को श्रीमद् राजेन्द्रसूरीजी के जाप की 20 माला के अलावा 333 प्रभुपूजन, 81 सामायिक, 324 प्रतिक्रमण व 45 पौषध किए जाकर ये सभी तपस्याएँ राष्ट्रसंतश्री के स्वास्थ्य को समर्पित रहेंगी।

धर्माराधक सेवा प्रकल्प प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी ने जानकारी दी है कि उक्त धर्मानुष्ठान में लगभग 250 साधकों द्वारा धर्माराधना की जा रही है। वार्षिक धर्मानुष्ठान के तहत 5 माह की अवधि में महामंत्र नवकार के 17 लाख, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु के 8 लाख 51 हजार तथा श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी के 6 लाख जाप हो चुके हैं। इसी क्रम में 2500 प्रतिक्रमण, 1800 सामायिक, 5500 प्रभु पूजन तथा 180 से अधिक पौषध हो चुके हैं।

रचनात्मक एवं संस्काररोपण प्रभारी अनोखीलाल भटेवरा ने एक अन्य जानकारी में बताया कि वार्षिक धर्मानुष्ठान के तहत सर्दियों में गरीब एवं जरूरतमंदों को 81 कम्बल वितरित किए गए हैं तथा

वर्तमान में 15 वर्ष से कम उम्र के लगभग 50 से अधिक बालक-बालिकाएं प्रभु पूजन कर रहे हैं । सर्वाधिक उपस्थिति वाले बच्चों को प्रभु पूजन परिधान भेंट किए जाएंगे ।

संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने बताया कि यह परम सौभाग्य है कि राष्ट्रसंतश्री के चातुर्मास का लाभ त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता एवं रतलाम शहर विधायक श्री चेतन्य कुमार काश्यप परिवार द्वारा रतलाम में जयंतसेन धाम पर कराने का लाभ लिया गया है और स्वयं राष्ट्रसंतश्री के मंगल स्वास्थ्य की कामना में ही यह वार्षिक धर्मानुष्ठान हो रहा है ।

भरतपुर । पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि श्री भरतपुर तीर्थ पर श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मंदिर का नवम ध्वजारोहण कार्यक्रम दि. 13 मई 2016 को सानंद सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर भरतपुर ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी श्री बाबूलालजी कटारिया, महामंत्री श्री विमलजी वेदमुथा, ट्रस्टी श्री मुकेश डोशी, श्री सतीशजी जैन, श्री भागचन्दजी जैन के साथ अहमदाबाद, सूरत, मुंबई, भीनमाल, दिल्ली एवं भरतपुर सहित क्षेत्र के अनेक गांवों से गुरुभक्तों की उपस्थिति रही।

बाडमेर । साध्वी स्नेहयशाश्रीजी म.सा. की निश्रा में खरतगच्छ संघ बाड़मेर के तत्वावधान में दि. 1 मई से 7 मई तक ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया । जिसमें 6 वर्ष से अधिक के बालक-बालिका, पुरुष एवं महिलाओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया ।

बम्बोरा । साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग की माता जी श्राविकारत्न श्रीमती उमरावदेवी धींग (धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालालजी धींग) का स्वर्गवास दि. 16 अप्रेल 2016 शनिवार रात्रि में धर्ममय वातावरण में हुआ । उनकी अन्तिम यात्रा में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया । वे एक धार्मिक महिला थीं ।

भोपालगढ़ । श्री जैनरत्न विद्यालय संस्थान भोपालगढ़ द्वारा श्री रत्न छात्रालय भोपालगढ़ का संचालन पुनः प्रारंभ किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थी कक्षा 9 से 12 वीं तक वाणिज्य, कम्प्यूटर साइंस, जीव विज्ञान एवं गणित आदि विषयों का अध्ययन कर सकेंगे। जरूरतमंद जैन छात्रों को यथायोग्य छात्रवृत्ति भी दी जाएगी । इच्छुक विद्यार्थी श्री अजीत मेहता, मो. 9414564545 से संपर्क कर सकते हैं ।

बेंगलरू । महासती श्री सुलोचनाजी म.सा. एवं श्री संगीताजी म.सा. आदि ठाणा 5 की निश्रा में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बेंगलूरू एवं वसन्तनगर श्रीसंघ के संयुक्त तत्वावधान में दि. 1 अप्रेल 2016 को भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 78 वां जन्मदिवस उत्साह से मनाया गया । इस अवसर पर महासतीजी के प्रभावी प्रवचन हुए । इसी अवसर पर श्रीजैन रत्न युवक परिषद द्वारा किदवई हॉस्पीटल बेंगलूरू में जरूरतमंदों के लिए अन्नदान का कार्यक्रम भी रखा गया । श्री हीराचंद्रजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चातुर्मास राजस्थान के पाली जिले के निमाज नगर में घोषित हुआ । श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्वावधान में श्री जैन श्राविका एवं युवक परिषद के सहयोग से नियमित मासिक सामुहिक सामायिक कार्यक्रम स्थानीय सीतादेवी रतनचन्द नाहर आदर्श कॉलेज प्रांगण, चामराजपेट में प्रतिमाह के अंतिम रविवार को नियमित क्रम से आयोजित होता है ।

सेलम । श्रीमद् विजय जिनोत्रम सूरीश्वरजी म.सा. एवं रविचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में तमिलनाडु राज्य के सेलमनगर में श्री केशरीया आदिनाथ भगवान जिनालय की अंजनशलाका प्राण-प्रतिष्ठा का ग्यारह दिवसीय महोत्सव दि. 22 जनवरी 2016 से 31 जनवरी 2016 तक भव्य रूप

से सम्पन्न हुआ।

हुबली। हुबली के श्री केश्वापुर नगर में आचार्य श्रीमद् विजयजिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में श्री मुनिसुव्रत स्वामी देव-गुरुमन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा का नौ दिवसीय महोत्सव दि. 25 अप्रेल 2016 से 3 मई 2016 तक हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

कुण्डलपुर। दि. 2 जून 2016 को कुण्डलपुर तीर्थ में भगवान श्री सुव्रतनाथजी का जन्म एवं तप कल्याणक धूमधाम से मनाया गया। 4 जून से 9 जून 2016 तक आचार्य श्री विद्यासागरजी म. के सान्निध्य में होने वाले श्री बड़े बाबा मस्तकाभिषेक महोत्सव हेतु दमोह में कार्यालय का उद्घाटन भी किया गया एवं म.प्र.व छ.ग. के प्रतिनिधियों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

भीण्डर। श्री पद्मभूषण विजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में त्रिदिवसीय रत्नजयी महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ जिसमें दि. 5 मई 2016 से 7 मई 2016 तक महापूजन प्रभु भक्ति एवं कई धार्मिक अनुष्ठान किए गए। दि. 8 मई को श्री भीण्डर नगर से श्री आदेश्वरजी राजपुरा तीर्थ का एक दिवसीय पदयात्रा संघ भी निकाला गया।

सात क्षेत्र

1. जिन प्रतिमा 2. जिनाग 3. जिन मंदिर 4. साधु 5. साध्वी 6. श्रावक 7. श्राविका

सात चारित्र

1. सामायिक 2. छेदोपस्थापनीय 3. परिहार विशुद्धि 4. सूक्ष्म संपराय 5. यथाख्यात 6. देशविरति 7. अविरति

सात चैत्यवंदन

1. राई प्रतिक्रमण में जगचिंतामणी 2. राई प्रतिक्रमण के अंत में विशाल लोचन (संसार दावानल) 3. मंदिर में 4. पच्चक्खाण पालने का 5. आहार करने के बाद 6. देवसि प्रतिक्रमण के प्रारंभ में 7. संथारापोरसी चउक्कसाय।

श्री अखिल भारतीय जैन समाजोत्थान ट्रस्ट (रजि.)

श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन सूरि शिक्षा महाविद्यालय

(श्री महावीर जैन विद्यालय के अन्तर्गत)

अभिलाषा कॉलोनी के सामने, देवास रोड़, उज्जैन (म.प्र.)

संस्थापक मार्गदर्शक

प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

B.Ed. और D.EL.Ed. पाठ्यक्रम के अध्यापन के लिए

-: विशेषताएँ :-

1. नवीन एवं सुसज्जित भवन ।
2. योग्य एवं अनुभवी स्टॉफ ।
3. समस्त आवश्यकताएँ उपलब्ध ।
4. छात्रावास-छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक-पृथक सर्वसुविधायुक्त उपलब्ध।
5. भोजनालय में शुद्ध एवं सात्विक भोजन की उचित मूल्य पर व्यवस्था।
6. 24 घंटे **RO** पानी की सुविधा ।
7. आवागमन के लिए परिवहन सुविधा उपलब्ध ।
8. वाहनों के लिए पार्किंग की समुचित व्यवस्था है ।
9. खेल सुविधाओं की व्यवस्था सम्भव।
10. छात्र-छात्राओं के अध्ययन के लिए विशाल ग्रंथालय ।

B.Ed. और D.EL.Ed में प्रवेश के इच्छुक छात्र अपनी सीट सुरक्षित करवायें। कहीं ऐसा न हो कि सीट भर जावे और बाद में पश्चाताप करना पड़े । अतः शीघ्रता करें और प्रवेश प्रक्रिया के लिए सक्रिय हो जावे ।

'म' की महिमा

(श्री मदनलाल रूनवाल, उज्जैन)

एक कल्पना मन में आई
सोच रहा था बैठा-बैठा
इतनी शक्ति कैसे पाई ।
'म' से मुनि सुव्रत स्वामी
'म' से मल्लीनाथ भगवान
'म' से भगवान महावीर
'म' से मोहनखेड़ा धाम ।
'म' अक्षर से नाम है तेरा
इसमें मैंने नजर दौड़ाई
लिखने बैठा चकित रह गया
'म' की महिमा इतनी पाई।
'म' से ममता, 'म' से महिमा
'म' से बनता मनुष्य महान
'म' से मधुकर प्यारा लागे
'म' से मिले मधुर मुस्कान
'म' से मक्खन 'म' से मनवा
'म' से ही तो होता मान
'म' से माता 'म' से मौसी
'म' से मिले मधुर मिष्ठान्न
'म' से मोती 'म' से माणक
'म' से मार्किस है गुणवान
'म' से मन मयुरा नाचे
राष्ट्र पक्षी का मिला सम्मान
'म' से मरूधर धरती प्यारी
झुक-झुक कर मैं करूं प्रणाम
'म' से मीराबाई थी जो
कृष्ण भक्ति में हुई बलिदान
'म' से मदर टेरेसा भी थी
दया प्रेम की मूरत महान ।
मेवाड़ी 'म' में देखी
राणा प्रताप की आन और बान
भामाशाह के 'म' ने ही
धन देकर राखी राणा की शान
भीष्म पितामह में 'म' था तो
भीष्म प्रतिज्ञा करी महान
पांच पांडवों में भी 'म' ने
ही भीम बनाया शरीर प्रधान ।
जयन्तसेन सूरि 'मधुकर'
'मधुकर' में है 'म' प्रधान
मुनि संयमरत्न विजय में
'म' बैठा बीच स्थानक
दीक्षा पूर्व मनीष नाम था
इसमें भी 'म' का स्थान
उज्जैन नमक मंडी में प्रथम चातुर्मास
पांच 'म' करते मंगल गान
चातुर्मास संयोजक मदन रूनवाल
गुरुचरणों में वंदन करता बारम्बार।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिंब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....
साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....
- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 104

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज

राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का

कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता : अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक : शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनैजर : आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष : नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष : श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001